फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 | वर्षः 76 | संख्याः 22 | प्रभात | जयपुर, शनिवार 23 अगस्त, 2025 | डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 | पृष्ठ 8 | मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Rashtradoot

Metro

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

Why Prada – and other luxury brands...

Many big brands have been routinely accused of drawing inspiration from Indian, and wider South Asian, traditions in their quest to reinvent and stay relevant, but without crediting the source

A Modern Crisis

A quick "How are you?" via text does not carry the same warmth or presence as a face-to-face talk

'कमजोर सरकार भी मजबूत नज़र आती है, क्योंकि, विपक्ष उससे भी ज्यादा कमज़ोर है'

कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं की इस टिप्पणी में उनकी कुण्ठा तो नज़र आती ही है, पर साथ ही उनकी पार्टी की आंतरिक मनोव्यथा भी पूरी तरह झलकती है

- इन नेताओं का मानना है, कि उनकी पार्टी ने, प्रदेशाध्यक्ष डोटासरा व विधानसभा में पार्टी के नेता टीकाराम जूली ने भाजपा की सरकार के विरोध में कोई ठोस आंदोलन, प्रदर्शन को मूर्तरूप नहीं दिया। क्या अशोक गहलोत द्वारा, भाजपा से (वसुंधरा राजे से) सहयोग की डाली गई परम्परा का निर्वाह हो रहा है।
- ये वरिष्ठ कांग्रेस के नेतागण, अंदर ही अंदर यह सवाल उठा रहे हैं कि इस परंपरा के निर्वहन से किन्ही पार्टी के नेताओं को राजनीतिक व आर्थिक लाभ हो सकता है, पर पार्टी जरुर कमज़ोर होती जा रही है। उदाहरण, के लिए लोकसभाध्यक्ष के प्रभावशाली ओ. एस. डी. के खिलाफ एफ. आई. आर. करने के आदेश की खबर का "स्क्रीन शॉट" कुछ समय के लिए कांग्रेस की वेबसाइट पर जरूर आया पर, फिर हटा दिया गया।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली 22 अगस्त। एक कमज़ोर और निष्क्रिय कांग्रेस भजनलाल सरकार को किसी भी ठोस मुद्दे पर घेरने में असफल रही है।

गोविंद सिंह डोटासरा और टीकाराम जूली के नेतृत्व में कांग्रेस राजस्थान में भाजपा सरकार के खिलाफ कोई भी पहल, आंदोलन या विरोध प्रदर्शन शुरू करने में विफल रही है।

वो भी तब जब इस सरकार और खुद मुख्यमंत्री को कमज़ोर माना जा रहा है।

यह एक क्लासिक उदाहरण है जहां "एक कमज़ोर सरकार मजबूत नजर आती है क्योंकि विपक्ष और भी ज्यादा कमज़ोर है।"

पिछले 18 महीनों में भजनलाल सरकार के शासनकाल के दौरान "प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटरसरा और कांग्रेस विधायकदल के नेता टीकाराम जूली विपक्ष के नेता की भूमिका निभाने में असफल रहे हैं।

क्या इसका कारण यह है कि ये दोनों अशोक गहलोत के करीबी और उनके शिष्य माने जाते हैं?

सबसे दिलचस्प बात यह है कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के शक्तिशाली ओएसडी पर लगे मानव तस्करी के आरोपों पर बोलना तो दूर पीसीसी ने राजीव दत्ता के खिलाफ लगाया गया स्क्रीनशॉट भी पोस्ट करने के तुरंत बाद हटा लिया।

"क्या कांग्रेस और भाजपा नेता आपस में मिलकर काम कर रहे हैं"? यह सवाल "कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता" ने उठाया है, जो "कांग्रेस और भाजपा नेताओं के बीच की घनिष्ठता को देखकर हैरान हैं।

कुछ लोग साझे व्यावसायिक हितों की बात करते हैं, और यह भी कहते हैं कि दोनों पक्षों को इस आपसी लेन-देन से लाभ होता है – और चुप्पी का यही कारण है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पंचायत चुनावों पर राज्य सरकार की अपील पर सुनवाई 22 को

जयपुर, 22 अगस्त। राजस्थान हाईकोर्ट की एकलपीठ की ओर से गत 18 अगस्त को प्रदेश की पंचायतों के चुनाव जल्दी कराने और करीब डेढ़

- राज्य सरकार ने पंचायत चुनाव जल्दी कराने के डेढ़ दर्जन प्रशासकों को हटाने पर लगी रोक के खिलाफ यह अपील की है।

दर्जन प्रशासकों को पद से हटाने पर रोक लगाने के खिलाफ राज्य सरकार की ओर से दायर अपील पर खंडपीठ में सुनवाई टल गई। अब 25 अगस्त को सुनवाई होगी।

अपील पर शुक्रवार को सुनवाई के दौरान जस्टिस अवनीश झिंगन और जस्टिस बीएस संधू ने कहा कि प्रकरण को नियमित अपील सुनने वाली खंडपीठ के समक्ष सूचीबद्ध किया जाए। अपील में अतिरिक्त महाधिवक्ता कपिल प्रकाश गुप्ता ने बताया कि एकलपीठ ने गत 18 अगस्त को पंचायतों के चुनाव जल्दी कराने के आदेश देते हुए याचिकाकर्ता प्रशासकों को पद से हटाने पर रोक लगाई थी। अपील में कहा गया कि पूर्व में पंचायतों के तीन चरणों में चुनाव हुए थे और संबंधित सरपंचों का कार्यकाल भी अलग-अलग चरणों में पूरा हो रहा है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'आधार कार्ड को रिहायश का प्रमाण माना जाये'

सुप्रीम कोर्ट के बिहार में मतदाता सूची में दर्ज कराने के बारे में दिये गये आदेश से विपक्ष प्रफुल्लित

- पर, अगर आदेश को गहराई से पढ़ा जाये, तो नजर आता है कि, विपक्ष पर भी काफी कटाक्ष किए हैं सर्वोच्च न्यायालय ने।
- सुप्रीम कोर्ट ने विपक्ष से पूछा कि, आपने 65 लाख मतदाताओं के नाम काटने को काफी मुद्दा बनाया, पर आप लोग उन 65 लाख वोटर्स की मदद के लिए क्यों नहीं आये। आपके 'बूथ लैवल एजेन्ट्स' क्या कर रहे थे। राजनीतिक दलों को वोटर्स की मदद के लिए मौके पर आना चाहिए था।
- सुप्रीम कोर्ट ने यह भी प्रश्न उठाया कि, नाम काटने के खिलाफ व्यक्तिगत स्तर पर राजनीतिज्ञों ने आपत्तियां उठाई, पर, राजनीतिक पार्टियां आगे क्यों नहीं आयीं।

- डॉ. सतीश मिश्रा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 22 अगस्त। बिहार में विशेष गहन पुनरीक्षण अभ्यास में बाहर किए गए 65 लाख मतदाताओं के पक्ष में सुप्रीम कोर्ट के निर्देश का स्वागत करते हुए कांग्रेस ने आज कहा कि लोकतंत्र भारत के चुनाव आयोग से आए "क्रूर हमले" से बच गया है और उन्होंने दावा किया कि चुनाव आयोग "पूरी तरह से बेनकाब और बदनाम" हो गया है।

विपक्षी पार्टी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने संशोधन प्रक्रिया को अधिक समावेशी बनाने के लिए दिशा-निर्देश तय किए हैं, जिसमें राजनीतिक दलों को भी प्रक्रिया में शामिल किया गया है। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि अब तक चुनाव आयोग का रवैया "अवरोधक और मतदाताओं के हितों के खिलाफ" रहा है।

कांग्रेस की यह प्रतिक्रिया तब आई जब सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को निर्देश दिया कि बिहार में चुनावी सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण अभ्यास के दौरान बाहर किए गए मतदाताओं को न केवल भौतिक रूप से बल्कि ऑनलाइन माध्यम से भी दावा प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाए।

चुनाव आयोग और मुख्य चुनाव आयुक्त के जोरदार दावों को बड़ा झटका देते हुए, न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने आधार कार्ड नंबर और 11 मान्य दस्तावेजों में से किसी एक के साथ दावा पत्र जमा करने की अनुमति दी।

शीर्ष अदालत ने यह कहते हुए आश्चर्य जताया कि 65 लाख बाहर किए गए मतदाताओं से संबंधित आपत्तियों को दर्ज कराने में राजनीतिक दल आगे नहीं आए। कोर्ट ने बिहार के मुख्य चुनाव अधिकारी को निर्देश दिया कि वे इन दलों को न्यायालय की कार्यवाही में शामिल करें।

कांग्रेस के संचार विभाग के प्रभारी महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि पार्टी सुप्रीम कोर्ट के बिहार मामले में दिए गए निर्देश का स्वागत करती है। "लोकतंत्र ने भारत के चुनाव आयोग से आए एक क्रूर हमले से खुद को बचा लिया है," उन्होंने दावा किया।

उन्होंने बताया कि 14 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट ने हस्तक्षेप करते हुए चुनाव आयोग के उस निर्णय को रद्द कर दिया था, जिसमें हटाए गए मतदाताओं की सूची को रोके रखा गया था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'वैक्सीनेशन के बाद कुत्तों को वापस आज़ाद कर दिया जाए'

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली एनसीआर के स्ट्रे डॉग्स पर अपने पूर्व आदेश में परिवर्तन किया

- जस्टिस विक्रम नाथ संदीप मेहता और एन वी अंजारिया की बैंच ने कहा कि वैक्सीनेशन के बाद कुत्तों को उनके मूल स्थान में ही छोड़ा जाए। इस फैसले से "डॉग लवर्स" में खुशी की लहर दौड़ गई है।
- ज्ञातव्य है कि 11 अगस्त को जस्टिस पारदीवाला और महादेवन की बैंच ने एक स्वतः संज्ञान केस में दिल्ली एनसीआर के सारे कुत्तों को 8 सप्ताह के अंदर पकड़ कर डॉग शैल्टर्स में भेजने का आदेश दिया था।
- 14 अगस्त को एक असाधारण प्रशासनिक कदम उठाते हुए सी.जे. आई. गवई ने जस्टिस पारदीवाला की बैंच से यह केस लेकर तीन सदस्यीय बैंच को सौंप दिया था।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ला ब्यूरो-

दिल्ली, 22 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को अपना पुराना आदेश बदलते हुए यह साफ़ किया कि अब दिल्ली और एनसीआर में सभी आवारा कुत्तों को स्थायी रूप से शेल्टर (आश्रयगृह) में रखने की ज़रूरत नहीं होगी। उन्हें टीकाकरण और कृमिनाशन (डीवर्मिंग) के बाद उनकी पुरानी जगहों पर वापस छोड़ा जा सकेगा।

न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, संदीप मेहता और एन.वी. अंजनारिया की पीठ ने कहा, पहले लगाया गया रोक का आदेश फिलहाल लागू नहीं रहेगा। कुत्तों को कृमिनाशन और टीकाकरण के बाद उसी इलाके में वापस छोड़ा जाएगा।

हालाँकि अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि जो कुत्ते आक्रामक व्यवहार दिखाते हैं या रेबीज़ से संक्रमित पाए जाते हैं, उन्हें सार्वजनिक जगहों पर नहीं छोड़ा जाएगा। पीठ ने कार्यवाही का दायरा पूरे देश तक बढ़ा दिया और सभी राज्य व केंद्रशासित प्रदेशों को शामिल करते हुए एक समान राष्ट्रीय नीति बनाने की दिशा में कदम बढ़ाया।

यह मामला " सुप्रीम कोर्ट की स्वतः संज्ञान याचिका" है, जिसे पहले न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला की पीठ देख रही थी। लेकिन 13 अगस्त 2025 को एक वकील ने चीफ जस्टिस बी.आर. गवई के सामने पुराने आदेश (9 मई 2024) का ज़िक्र किया, जिसमें आवारा कुत्तों के साथ संवेदनशील व्यवहार का निर्देश था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारी बारिश से हालात खराब, निमोदा गांव में सेना बुलाई

कोटा, 22 अगस्त (निसं)। कोटा संभाग में बीते दो दिनों से भारी बारिश हो रही है। जिसके कारण चलते हालात विकट बने हुए हैं। कई रास्ते अवरुद्ध हो गए हैं। नेशनल हाइवे से लेकर स्टेट हाइवे तक आवागमन बाधित हो गया है। निचले इलाकों में जलभराव की स्थिति हो गई है। कई गांवों का संपर्क कस्बों

- कोटा जिला प्रशासन के अनुरोध पर सेना के गांडीव डिवीज़न की 80 जवानों की टीम निमोदा गांव में राहत व बचाव कार्य कर रही है।

वह अन्य जगह से संपर्क कट रहा है। संभाग के चारों जिलों, कोटा, बारां, बूंदी व झालावाड़ में यही स्थिति है।

कोटा शहर के निचले इलाकों में पानी भर गया है। कोटा जिला प्रशासन के अनुरोध पर राहत एवं बचाव कार्यों में जिला प्रशासन की मदद के लिए मिलिट्री स्टेशन, कोटा से लाइफ बोट एवं अन्य उपकरणों से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट ने "द वायर" के पत्रकारों को बड़ी राहत दी

सुप्रीम कोर्ट ने द वायर के सिद्धार्थ वरदराजन और करण थापर के खिलाफ दमनात्मक कार्यवाही से असम पुलिस को रोक दिया है

- जस्टिस सूर्यकांत व जॉयमाल्या बागची ने द वायर की वकील की इस दलील पर यह आदेश दिए कि जब सुप्रीम कोर्ट ने एक एफआईआर में अंतरिम सुरक्षा दी तो असम पुलिस ने दूसरी एफआईआर में उन्हें सम्मन भेज दिया और इस प्रकार असम सरकार सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अवहेलना कर रही है।
- असम पुलिस ने ऑपरेशन सिंदूर पर एक रिपोर्ट प्रसारित करने के लिए इन पत्रकारों पर देशद्रोह का केस दर्ज किया था। रिपोर्ट में कहा गया था कि राजनैतिक नेतृत्व की वजह से भारतीय वायु सेना के फाइटर जेट्स का नुकसान हुआ था।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट ने आज ऑनलाइन न्यूज़ पोर्टल "द वायर" के संस्थापक संपादक सिद्धार्थ वरदराजन और परामर्श संपादक करन थापर को गिरफ्तारी से अंतरिम सुरक्षा दे दी। यह मामला असम पुलिस द्वारा भारतीय न्याय संहिता (बी.एन.एस.), 2023 की धारा 152 के तहत दर्ज एफ.आई.आर. से जुड़ा है।

न्यायमूर्ति सूर्यकांत और जॉयमल्या बागची की पीठ ने यह आदेश वरिष्ठ अधिवक्ता नित्या रामकृष्णन की अर्जी पर सुनवाई करते हुए दिया। उन्होंने अदालत को बताया कि सुप्रीम कोर्ट ने पहले एक एफ.आई.आर. में याचिकाकर्ताओं को सुरक्षा दी थी, लेकिन उसके तुरंत बाद उन्हें दूसरी एफ.आई.आर. में समन भेज दिया गया।

अदालत ने आदेश दिया: "इस मामले को 15 सितंबर को सूचीबद्ध किया जाए। इस बीच, याचिकाकर्ता नंबर-2 (वरदराजन) और फाउंडेशन के सदस्यों, जिनमें परामर्श संपादक (करन थापर) भी शामिल हैं, के खिलाफ कोई कठोर कार्रवाई न की जाए, बशर्ते वे जांच में शामिल होकर सहयोग करें।" ज्ञातव्य है कि, असम पुलिस (मोरीगांव थाने) ने 11 जुलाई को वरदराजन और अन्य के खिलाफ धारा 152 बी.एन.एस. के तहत मामला दर्ज किया था। यह एफ.आई.आर. "द वायर" के उस लेख से जुड़ी है जिसमें लिखा गया था– "राजनीतिक नेतृत्व की सीमाओं की वजह से आई.ए.एफ. ने पाकिस्तान के साथ मुकाबले में लड़ाकू विमान गंवाए: भारतीय रक्षा अटैचे" (ऑपरेशन सिंदूर पर आधारित)।

इस एफ.आई.आर. को चुनौती देते हुए, फाउंडेशन फॉर इंडिपेंडेंट जर्नलिज़्म (जो द वायर" का मालिक ट्रस्ट है) और वरदराजन सुप्रीम कोर्ट पहुँचे। उन्होंने दलील दी कि धारा 152 बी.एन.एस. असल में पुराना राजद्रोह कानून का नया रूप है। याचिका में कहा गया कि लेख केवल इंडोनेशिया की एक यूनिवर्सिटी में हुए सेमिनार की रिपोर्ट था, जिसमें भारत के सैन्य अधिकारियों (जिनमें इंडोनेशिया में भारत के सैन्य अटैचे भी शामिल थे) की टिप्पणियाँ थीं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जैसलमेर, बीकानेर में सोलर पार्क के लिए भूमि आवंटित

जयपुर, 22 अगस्त। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जैसलमेर एवं बीकानेर जिले में अक्षय ऊर्जा आधारित उत्पादन इकाइयों की स्थापना के लिए भूमि आवंटन के प्रस्तावों को स्वीकृति दी है।

प्रस्ताव के अनुसार, जैसलमेर जिले की रामगढ़ तहसील में 5000 मेगावाट क्षमता के सोलर पार्क की स्थापना के लिए कुल 6771.86

- मुख्यमंत्री भजन लाल ने अक्षय उर्जा उत्पादन इकाइयों के भूमि आवंटन प्रस्तावों को मंजूरी दी।

हैक्टेयर भूमि एवं 2700 मेगावाट सोलर पार्क के लिए 5113.99 हैक्टेयर भूमि के आवंटन को स्वीकृति दी गई है। वहीं, फतेहगढ़ तहसील में 12500 मेगावाट सोलर पार्क के लिए 14026.87 हैक्टेयर भूमि एवं 6200 मेगावाट सोलर पार्क के लिए 8582.42 हैक्टेयर भूमि के आवंटन को स्वीकृति प्रदान की गई है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ट्रंप के वाणिज्य सलाहकार द्वारा भारत द्वारा "रूसी ऑयल" की खरीद को मुनाफाखोरी बताना कानूनन गलत है

पर यह मुनाफाखोरी का रास्ता जी-7 ने स्वयं रूस पर आर्थिक प्रतिबंध लगाते हुए छोड़ा था

- प्रतिबंध लगाते समय दो उद्देश्य थे, रूस की तेल बिक्री से हो रही आय को प्रतिबंधित करना, पर साथ में, यह उद्देश्य था कि, अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में तेल की कम आवक होने से, ऑयल की कीमत आसमान न छूने लगें।
- इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए, यह परिभाषित किया गया कि, अगर, रूसी ऑयल, रूस से बाहर रिफाइन किया जाता है, तो वह एक नया प्रोडक्ट माना जायेगा, प्रतिबंधित "रूसी ऑयल" नहीं।
- इसी कानूनी गल्ती का उपयोग करते हुए, भारत ने रूसी ऑयल को रिफाइन किया व बाज़ार में भी बेचा, जिसके लिए कानूनी अनुमति थी। और इसी तरह दो साल से भारत द्वारा रिफाइन किया गया रूसी ऑयल विदेशों में खूब बिका, यूरोप में और अमेरिका में भी।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 22 अगस्त। पूर्व वाइट हाउस के व्यापार सलाहकार पीटर नवारो ने भारत द्वारा रियायती रूसी कच्चे तेल के निरंतर आयात को "मुनाफाखोरी योजना" बताते हुए एक नई बहस को जन्म दिया है। हाल ही में लिखे एक लेख में, नवारो ने तर्क दिया कि नई दिल्ली ने खुद को प्रभावी रूप से क्रेमलिन के लिए एक "लॉन्ड्रॉमैट" बना लिया है, जो रूस को पश्चिमी प्रतिबंधों से बचाने में मदद कर रहा है, जबकि भारतीय रिफाइनर भारी मुनाफा कमा रहे हैं।

उनकी टिप्पणी मीडिया में छाई रही और तुरंत प्रतिक्रियाएं भी आईं, क्योंकि यूक्रेन युद्ध के बाद भारत रूस का एक प्रमुख ऊर्जा ग्राहक बनकर उभरा है। हालांकि, यह दावा तथ्यात्मक रूप से कितना ठोस है या केवल बयानबाजी है, यह इस पर निर्भर करता है कि हम नियमों की व्याख्या कैसे करते हैं, भारत की ऊर्जा सुरक्षा की हकीकत क्या है, और पश्चिम का खुद रूसी ऊर्जा से कितना जुड़ाव है।

जब 2022 के अंत में जी- 7 और यूरोपीय संघ ने रूसी कच्चे तेल पर प्रतिबंध और मूल्य सीमा लगाई, तो उन्होंने जानबूझकर वैश्विक बाजारों में रूसी तेल के व्यापार की गुंजाइश छोड़ी। इसका उद्देश्य दोहरा था: क्रेमलिन की आमदनी सीमित करना और वैश्विक तेल कीमतों में उछाल से बचना।

इस ढांचे के तहत, भारत जैसे देशों को रूसी कच्चा तेल आयात करने की अनुमति दी गई, बशर्ते कि शिपमेंट का किसी पश्चिमी यूरोपियन कम्पनी से बीमा हो या तेल की कीमत 60 डॉलर प्रति बैरल हो। इसके अलावा, यूरोपीय अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि एक बार जब कच्चा तेल रूस के बाहर रिफाइन किया जाता है, तो उसे कानूनी रूप से नया उत्पाद माना जाता है। लगभग दो वर्षों तक, भारतीय रिफाइनरियों से तैयार ईंधन यूरोप और अमेरिका तक पहुंचता रहा, वो भी किसी भी प्रतिबंध का उल्लंघन किए बिना।

यह कानूनी संदर्भ नवारो के आरोपों को जटिल बना देता है। भारत अवैध व्यापार की बजाय उन्हीं नीतिगत सीमाओं के भीतर काम कर रहा है जो पश्चिमी देशों ने खुद तय की थीं।

एक और पहलू है भारत की आयातित तेल पर निर्भरता। भारत अपनी कच्चे तेल की लगभग 88 प्रतिशत जरूरत विदेशों से पूरी करता है, जिससे ऊर्जा उसका सबसे बड़ा बाहरी जोखिम बन गई है। यूक्रेन युद्ध के बाद तेल की वैश्विक कीमतें आसमान छूने लगीं, तो रियायती रूसी तेल भारतीय उपभोक्ताओं और अर्थव्यवस्था को राहत देने का एक आकर्षक जरिया बन गया।

भारतीय अधिकारियों ने बार-बार कहा है कि भारत ने तेल जरूरत के तहत खरीदा है, न कि अवसरवादी मुनाफाखोरी के लिए। उनका कहना है कि 1.4 अरब लोगों की विकासशील अर्थव्यवस्था वाले देश से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह दूसरों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों का बोझ उठाए। सस्ता रूसी तेल, वे कहते हैं, मुद्रास्फीति को नियंत्रित रखने और आपूर्ति को स्थिर बनाए रखने में मददगार रहा है।

नवारो का सारा फोकस भारत पर है वे इस तथ्य को नजरअंदाज करते हैं कि पश्चिमी देश खुद भी रूसी ऊर्जा से जुड़े रहे हैं। उदाहरण के लिए, यूरोपीय यूनियन ने पाइपलाइन गैस में कटौती के बावजूद रुस से तरल प्राकृतिक गैस का आयात जारी रखा। केवल हाल ही में ईयू सरकारों ने इस खरीद को चरणबद्ध रूप से समाप्त करने पर सहमति व्यक्त की है।

इस निरंतर निर्भरता के कारण कई विश्लेषकों का मानना है कि भारत की आलोचना पक्षपातपूर्ण प्रतीत हो सकती है। यदि नई दिल्ली पर मॉस्को के युद्ध

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

निकाय चुनावों में ओबीसी आरक्षण के लिए राज्य निर्वाचन आयोग को पत्र लिखा

जयपुर, 22 अगस्त। राजस्थान में स्थानीय निकायों में अन्य पिछड़ा वर्ग को आरक्षण देने की प्रक्रिया ने एक नया मोड़ ले लिया है। उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के अनुरूप राज्य सरकार द्वारा गठित राजस्थान राज्य अन्य पिछड़ा वर्ग (राजनीतिक प्रतिनिधित्व) आयोग ने इस दिशा में कार्रवाई तेज कर दी है। आयोग ने एक महत्वपूर्ण पत्र राज्य

- अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग ने पत्र में कहा है कि तीन माह बाद इनका कार्य पुरा होगा तथा तब उचित निर्णय लिया जा सकेगा

निर्वाचन आयोग को भेजकर अब तक की प्रगति से अवगत कराया है। पत्र के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट द्वारा रिट पिटीशन (सिविल) संख्या 278/2022 में दिए गए आदेशों के अनुपालन में राज्य सरकार ने आयोग का गठन किया है। न्यायालय ने स्पष्ट किया था कि ओबीसी को आरक्षण तभी दिया जा सकता है जब

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

CMYK

विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। - सुफियान सौरी

त्यौहारी सीजन में सेहत पर मंडराया मिलावट का खतरा

त्योहारी सीजन शुरू होते ही मिलावटिये भी सक्रीय होकर आमजन के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करते है। त्योहार आये और मिलावटिये सक्रीय न हो ऐसा हो नहीं सकता। अब तो मिलावट और त्योहार का लगता है चोली दामन का साथ हो गया है। राजधानी जयपुर की पुलिस ने हाल ही मिलावटखोरी के एक बड़े नेटवर्क का पर्दाफ़ाश करते हुए 1800 किलो नकली पनीर को दुकानों पर पहुंचने से पहले ही पकड़ लिया। यह पनीर हरियाणा के मेवात इलाके से जयपुर में सप्लाई के लिए लाया जा रहा था। पुलिस का कहना है अगर यह नकली पनीर बाजार में पहुंच जाता, तो लोगों के स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ सकता था। यह तो एक बानगी है। इससे पूर्व न जाने कितनी नकली पनीर बाज़ारों में पहुँच गई होंगी।

देश में त्योहारी सीज़न शुरू हो गया है। दीपावली तक त्योहारों की धूम रहेगी। त्योहारी सीजन की श्रृंखला रक्षा बंधन से शुरू हो गई जो दीपावली के साथ समाप्त होंगी। इस अवसर पर गरीब और अमीर सभी वर्ग के लोग अपने सामर्थ्य के अनुरूप घर की साफ-सफाई, नए कपड़े, सोने चांदी के सामान के साथ मिठाइयां बनाने और खरीदने में व्यस्त हो जाते है। इस दौरान घर-घर में मीठे पकवान बनते है। पर्वों पर बिकने वाली मिठाइयों की तैयारियां भी जोरों पर हैं, लेकिन बाजार में बिकने वाली मिठाई कितनी शुद्ध होगी, इसकी कोई गारंटी नहीं है। त्योहारों के मौके पर मिलावटी मिठाइयों का भरपूर कारोबार होने की संभावना को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति को सचेत रहने की भी जरूरत है। ऐसे में सोच-समझकर ही मिठाइयों को खरीदें। कहते है सावधानी हटी और दुर्घटना घटी। इसे ध्यान में रखते हुए अगर मिठाइयों को परखने में चूक गए तो मिलावटी मिठाइयां आपके सेहत पर भारी पड़ सकती हैं। बड़े से लेकर छोटे शहरों और ग्रामों में मिलावटखोर सक्रिय हो जाते हैं। दूध से लेकर खोया और घी, तेल तक में मिलावट की जाती है। हालांकि देशभर में मिलावटियों पर छापे मारे जा रहे है और मिलावटी सामग्री जब्त की जा रही है। मगर यह छापेमारी ऊंट के मुंह में जीरे के सामान है।

आम आदमी महंगाई के साथ खाद्य पदार्थो में हो रही मिलावट खोरी से खासा परेशान रहता है। हमारे बीच यह धारणा पुख्ता बनती जा रही है कि बाजार में मिलने वाली हर चीज में कुछ न कुछ मिलावट जरूर है। लोगों की यह चिंता बेबुनियाद नहीं है। आज मिलावट का कहर सबसे ज्यादा हमारी रोजमर्रा की जरूरत की चीजों पर ही पड़ रहा है। खाने पीने के पदार्थो में मिलावट कोई नयी समस्या नहीं है। मिलावट और खराब उत्पाद बेचे जाने की खबरें आम हो चुकी हैं। साल-दर-साल इसका दायरा व्यापक होता जा रहा है। खाद्य पदार्थों में मिलावट ने हमारा जीना हराम कर रखा है। हर चीज में मिलावट ने हमारी जिंदगी की रफ्तार को अवरुद्ध कर दिया है। शरीर का हर हिस्सा जैसे मिलावट से कराह रहा है। जितनी चोटें युद्ध भूमि में राणा सांगा ने नहीं खाई होंगी उतनी हम मिलावटी वस्तुओं से रोज ही खा रहे हैं। इसका मतलब बिलकुल साफ है कि हमारा शरीर पूरी तरह मिलावटी हो गया है।

आज खाने-पीने सहित सभी चीजों में धड़ल्ले से मिलावट हो रही है। ऐसा कोई भोज्य पदार्थ नहीं है, जो जहरीले कीटनाशकों और मिलावटों से मुक्त हो। बाजार में पपीता, आम और केला, सेव, अनार जैसे फलों को कैल्शियम कार्बाईड की मदद से पकाया जाता है। चिकित्सकों के अनुसार यह स्वास्थ्य के लिए काफी हानिकारक है। फलों को सुनहरा बनाने के लिए पैराफीनवैक्स भी लगाया जाता है। इन फलों को खाने से कैंसर और डायरिया जैसी बीमारियां होती है।

खाद्य पदार्थों में अशुद्ध, सस्ती अथवा अनावश्यक वस्तुओं के मिश्रण को मिलावट कहते हैं। आज समाज में हर तरफ मिलावट ही मिलावट देखने को मिल रही है। पानी से सोने तक मिलावट के बाजार ने हमारी बुनियाद को हिला कर रख दिया है। पहले केवल दूध में पानी और शुद्ध देशी घी में वनस्पति घी की मिलावट की बात सुनी जाती थी, मगर आज घर-घर में प्रत्येक वस्तु में मिलावट देखने और सुनने को मिल रही है। मिलावट का अर्थ प्राकृतिक तत्त्वों और पदार्थों में बाहरी, बनावटी या दूसरे प्रकार के मिश्रण से है।

मुनाफाखोरी करने वाले लोग रातोंरात धनवान बनने का सपना देखते हैं। अपना यह सपना साकार करने के लिए वे बिना सोचे-समझे मिलावट का सहारा लेते हैं। सस्ती चीजों का मिश्रण कर सामान को मिलावटी कर महंगे दामों में बेचकर लोगों को न केवल धोखा दिया जाता है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ भी किया जाता है। मिलावटी खाद्य पदार्थों के सेवन से प्रतिवर्ष हजारों लोग विभिन्न बीमारियों का शिकार होकर जीवन से हाथ धो बैठते हैं। मिलावट का धंधा हर तरफ देखने को मिल रहा है। दूध बेचने और मिलावट करने वाले से लेकर बहुराष्ट्रीय कंपनियों तक ने मिलावट के बाजार पर अपना कब्जा कर लिया है।

सत्य तो यह है कि हम जो भी पदार्थ सेवन कर रहे हैं चाहें वे खाद्य पदार्थ हो या दूसरे, सब में मिलावट ही मिलावट हो रही है। मिलावट ने अपने पैर जबरदस्त तरीके से फैला लिए हैं। दूधिए की मिलावट तो एक उदाहरण के रूप में है। मगर आज हर वस्तु में मिलावट से हमारा वातावरण प्रदूषित और जहरीला हो उठा है। दूध, मावा, घी, हल्दी, मिर्च, धनिया, अमचूर, सब्जियां, फल आदि सभी मिलावट की चपेट में है। आज खाने-पीने सहित सभी चीजों में धड़ल्ले से मिलावट हो रही है। ऐसा कोई भोज्य पदार्थ नहीं है, जो जहरीले कीटनाशकों और मिलावटों से मुक्त हो। बाजार में पपीता, आम और केला, सेव, अनार जैसे फलों को कैल्शियम कार्बाईड की मदद से पकाया जाता है। चिकित्सकों के अनुसार यह स्वास्थ्य के लिए काफी हानिकारक है। फलों को सुनहरा बनाने के लिए पैराफीनवैक्स भी लगाया जाता है। इन फलों को खाने से कैंसर और डायरिया जैसी बीमारियां होती है। डेयरी और कृषि उत्पादों-विशेषकर हरी सब्जियों में ऑक्सिटोसिन का खूब इस्तेमाल हो रहा है। सच तो यह है अधिक मुनाफा कमाने के लालच में नामी कंपनियों से लेकर खोमचे वालों तक ने उपभोक्ताओं के हितों को ताख पर रख दिया है। अगर कोई इन्हें खाकर बीमार पड़ जाता है तो हालत और भी खराब है, क्योंकि जीवनरक्षक दवाइयाँ भी नकली ही बिक रही हैं।

-अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 23 अगस्त, 2025

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, शनिवार, विक्रम संवत 2082, मघा नक्षत्र रात्रि 12:55 तक, परिघ योग दिन 1:20 तक, नाग करण दिन 11:36 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-कर्क, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज देव पितृकार्या अमावस्या और कुशाग्रहणी अमावस्या, शनिचरी अमावस्या, सती पूजन है। आज अश्वत्थ मारूती पूजन है। आज शहादते इमाम हसन है। आज से राष्ट्रीय भाद्रपद मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:50 से 9:20 तक, चर 12:18 से 1:47 तक, लाभ-अमृत 1:47 से 4:46 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:06, सूर्यास्त 6:53

मेष

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

धनु

धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृष

घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिवार में आपसी वाद-विवाद हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च होगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

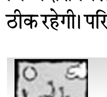

कर्क

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

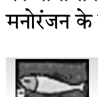

मीन

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुत्तों से नफ़रत क्यों? एक सवाल जो भारत को खुद से पूछना चाहिए

मरियम अबुहैदरी

आपने पहली बार कब तय किया कि कुत्ते नफ़रत के काबिल हैं? क्या वो सुबह थी जब आपने दरवाज़ा खोला और देखा कि एक भूखा कुत्ता आपके कूड़े में से टुकड़े तलाश रहा है? या वो दिन, जब आपने अख़बार में किसी कुत्ते के काटने की सनसनीख़ेज़ हेडलाइन पढ़ी-एक ख़ून-ख़राबे वाली तस्वीर के साथ, जो अक्सर एआई से बनाई गई थी? या शायद वो वक्त, जब कुत्तों का एक झुंड आपके पीछे दौड़ा-संभव है क्योंकि आपने या आपके घरवालों ने उन्हें पत्थर मारकर या खाना रोककर उनका जीवन कठिन बना दिया हो, या फिर किसी वाहन ने माँ कुतिया के बच्चों को कुचल दिया हो और वे अपने बचे-खुचे संसार की रक्षा कर रहे थे? आपने आसपास के दूसरे जीवन-रूपों के प्रति सहनशील होना कब छोड़ दिया? क्या सच में यह जानवर के बारे में है-या आपके भीतर की उस बेचैनी के बारे में, जो उनकी मौजूदगी बर्दाश्त नहीं कर पाती?

हम भारतीयों ने सहस्त्राब्दियों से कुत्तों के साथ जीवन बिताया है। हमारे महाकाव्यों और शास्त्रों में उनके स्थान की यादें भरी पड़ी हैं। महाभारत में युधिष्ठिर ने स्वर्ग में प्रवेश से इनकार कर दिया जब तक उनका वफ़ादार कुत्ता उनके साथ न आ सके। यह कहानी आज भी हमें चुनौती देती है: वह स्वर्ग किस काम का, जहाँ वफ़ादारी और प्रेम को द्वार के बाहर छोड़ना पड़े? गीता में कृष्ण योग और समभाव का उपदेश देते हैं-सभी प्राणियों को समान दृष्टि से देखना ही सच्चा धर्म है। करुणा चुनिंदा नहीं होती। यह केवल उनके लिए नहीं होती जो हमारी तरह दिखते हैं, हमारे जैसा पूजते हैं या हमारी भाषा बोलते हैं।

लेकिन 2025 में हम यहाँ हैं-बहस करते हुए कि आवारा कुत्ते जीने के लायक हैं या नहीं। क्या हमारे मोहल्ले बेहतर होंगे अगर उन्हें हटा दिया जाए? क्या क्रूरता को सुरक्षा के नाम पर जायज़ ठहराया जा सकता है? हम भूल जाते हैं कि क्रूरता सुरक्षा नहीं है। यह संक्रामक है। यह फैलती है। और यह धीरे-धीरे हमारे आपसी व्यवहार में भी उतर आती है। ज़रा सोचिए: क्या कुत्ते काटते हैं मज़े के लिए? या डर के लिए? अगर कोई बच्चा बरसों तक कुत्तों पर पत्थर बरसाता है-क्योंकि बड़ों ने उसे सिखाया कि कुत्ते गंदे हैं, ख़तरनाक हैं, या बेकार हैं-तो आखिरकार क्या होगा? एक दिन, वह कुत्ता भी जवाब देगा। एक दिन, वह अपनी रक्षा करेगा। और फिर जब दाँत गड़ेंगे, तो आप दोष कुत्ते को देंगे? या एक पल रुककर पूछेंगे: यह कैसी समाज है, जो अपने बच्चों को मेलजोल और सामंजस्य सिखाने के बजाय हिंसा भड़काना सिखाती है?

हम अक्सर इस हिस्से का सामना नहीं करते। हमें लगता है कि बच्चे मासूम हैं, लेकिन मासूमियत को मोड़ा जा सकता है। आज पत्थर फेंकना, कल किसी की पीड़ा के प्रति बेरुख़ी बन सकता है। क्या हम सचमुच ऐसी पीढ़ी पालना चाहते हैं, जिसे लगे कि कमज़ोर पर हिंसा करना सामान्य है? बच्चों को यह सिखाने के बजाय कि कुत्तों के साथ कैसे रहना है-जगह का सम्मान कैसे करना है, कैसे शांत रहना है, कैसे खिलाना है-हम उन्हें आसान शिकार बना रहे हैं। क्योंकि जब शत्रुता आदत बन जाती है, तो प्रतिरोध सिर्फ़ समय की बात होती है। एक बार अपनी जगह कुत्ते की जगह खुद को रखकर सोचिए: अगर हर दिन आपको मारा-पीटा, दौड़ाया, पत्थर मारा जाए-तो आप क्या करेंगे? लेकिन ज़रा बताइए: क्या यह आपको स्वीकार्य है कि लोग कुत्तों के साथ बलात्कार कर रहे हैं? पिल्लों को ज़िंदा जलाया जा रहा है? मासूम, शांत कुत्तों को इमारतों से नीचे फेंककर मार दिया जा रहा है? सोचिए, हम समाज के तौर पर क्या बन गए हैं-और पशु प्रेमियों को हर दिन क्या देखना और झेलना पड़ता है-सिर्फ़ इसलिए क्योंकि वे अब भी उम्मीद रखते हैं कि समझदारी जीतेगी। हर दिन यह सवाल गले में अटकता है: इन जानवरों ने ऐसा क्या किया है कि वे इंसानों की नफ़रत झेलें?

अब आते हैं सदाबहार शिकायतों पर: कुत्ते भौंकते हैं, काटते हैं, गंदगी फैलाते हैं, शांति भंग करते हैं। जैसे किसी जमाने में कुत्ते चुपचाप बैठे रहते थे, शौचालय में ही शौच करते थे और नागरिकों की तरह सलीके से चलते थे। सच यह है कि कुत्ते तो हमेशा से भौंकते रहे हैं, गंदगी भी करते रहे हैं-जब हमारे कस्बे छोटे थे, सड़कें कच्ची थीं और धैर्य ज़्यादा था। कुत्ते नहीं बदले हैं; हम बदले हैं। हमारी सहनशीलता घट गई है, हमारी करुणा सूख गई है। अचानक, हर वह जीवन जो हमारे नियंत्रण से बाहर है, उपद्रव घोषित कर दिया गया। और मान लीजिए, अगर गंदगी ही असली मुद्दा है, तो कुत्ते उसमें चैंपियन नहीं हैं। बेघर इंसान ज़्यादा गंदगी फैलाते हैं। और वे हाउसिंग सोसाइटीज़ जो दावा करती हैं कि कुत्ते गंदगी करते हैं-पहले उन्हें अपने गेट के पास लगे कचरे के पहाड़ देख लेने चाहिए। मगर नहीं, आवाज़हीन पर दोष मढ़ना आसान है। और यह तथाकथित ;डॉग बाइट डेटा; ! हर रेबीज़ का टीका अपने आप ; कुत्ते के काटने; के केस के तौर पर दर्ज हो जाता है। शुक्र है कि रजिस्टर कुत्ते नहीं रखते, वरना आप उसका भी इल्ज़ाम उन्हीं पर डाल देते। और ऊपर से, इसमें पालतू और आवारा काटने का कोई फ़र्क नहीं है। लैब्राडोर का काटना, जर्मन शेफर्ड का हमला, रॉटवीलर की पकड़-सब एक ही खाते में। मगर अजीब बात है, गुस्सा सबसे ज़्यादा हमेशा उसी कुत्ते पर उतरता है जो देसी है, भूरे रंग का है, सड़क पर जन्मा है। अगर समस्या सचमुच ;बहुत सारे कुत्तों; की है, तो पूछना चाहिए कि ये पिल्ले आते कहाँ से हैं? लोग ब्रीडरों से खरीदते क्यों हैं जब शेल्टर पहले से भरे पड़े हैं? जब कोई ब्रीडिंग मादा ;लाभदायक; नहीं रहती, उसे अक्सर अधबचिया, नसबंदी के बिना, सड़क पर छोड़ दिया जाता है। परिवार जब खर्चा बढ़ जाता है, शहर बदलना होता है या ;शौक़; ख़त्म हो जाता है, तो वे भी अपने पालतू छोड़ देते हैं। ये सब भी बिना नसबंदी के होते हैं और मोहल्ले के कुत्तों के साथ मिलकर और बच्चे पैदा करते हैं। अगर अनियंत्रित जनसंख्या सच में चिंता का कारण है, तो गुस्सा ब्रीडरों पर क्यों नहीं है? सिर्फ़ उस पर क्यों जो सड़क पर जीवित रहने की कोशिश कर रहा है?

हमारे शास्त्र और परंपरा याद दिलाते हैं कि कुत्ते पूजनीय रहे हैं। युधिष्ठिर की करुणा, ऋग्वेद में सरमा की सच्चाई, भैरव के द्वार पर प्रहरी, गीता की समभाव की शिक्षा-ये सब केंद्रीय कथाएँ हैं। और संविधान भी यही कहता है: अनुच्छेद 51(ग) में लिखा है कि हर नागरिक का मूल कर्तव्य है वनों, नदियों, झीलों, जंतुओं का संरक्षण करे और सभी जीवित प्राणियों के प्रति करुणा रखे। जब हम कुत्तों से नफ़रत को जायज़ ठहराते हैं, तो हम न सिर्फ़ अपनी संस्कृति से गद्दारी करते हैं बल्कि संविधान से भी।

तो ज़रा ठहरकर पूछिए: इस नफ़रत से हासिल क्या हुआ? कुत्ते अब भी हैं। कचरे के ढेर अब भी हैं। ब्रीडर अब भी हैं। नसबंदी कार्यक्रम अब भी भ्रष्टाचार और फंड की कमी से जूझते हैं। मगर मोहल्ले टूट रहे हैं, रिश्ते बिगड़ रहे हैं, परिवार बँट रहे हैं। नफ़रत ने कुछ हल नहीं किया-सिर्फ़ सबकुछ ज़हरीला बना दिया। असल समस्या कुत्ते नहीं हैं। असल समस्या हमारी करुणा का सूख जाना है। तो अगली बार जब आप कुत्ते को देखकर गुस्से से भर जाएँ, खुद से पूछिए: यह नफ़रत मैंने कब पालनी शुरू की थी, और इसने मुझे दिया क्या? और फिर याद कीजिए-युधिष्ठिर का इंकार, सरमा की सच्चाई, भैरव का रक्षक, गीता का समभाव, अंबेडकर का संविधान। सब एक ही बात कह रहे हैं: दयालु बनो और साथ जियो।

-मरियम अबुहैदरी,
भारतीय नागरिक और पशु अधिकार कार्यकर्ता

पुस्तक समीक्षा : ''भारतीय उत्सव: एक आध्यात्मिक यात्रा''

श्वेता यादव द्वारा रचित ग्रंथ-''भारतीय उत्सवः एक आध्यात्मिक यात्रा'' धार्मिक आयोजनों का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करता है

प्रो. प्रदीप शर्मा

- **इस पुस्तक में हिंदू पंचांग के अनुसार वर्षभर के व्रत, त्यौहार, पर्व, एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या, संक्रांति आदि को महीनेवार व्यवस्थित किया गया है**

भारत विविधताओं का देश है जहां हर महीने किसी न किसी पर्व, व्रत या उत्सव का आयोजन होता है। श्वेता यादव द्वारा रचित यह ग्रंथ-'भारतीय उत्सवः एक आध्यात्मिक यात्रा' - न केवल इन धार्मिक आयोजनों का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करता है, बल्कि इनके पीछे छिपे गहरे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी उजागर करता है। यह पुस्तक एक विशेष पहलू के साथ सामने आती है। इसमें हिंदू पंचांग के अनुसार वर्षभर के व्रत, त्योहार, पर्व, एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या, संक्रांति आदि को महीनेवार व्यवस्थित किया गया है। चैत्र से लेकर फाल्गुन तक, पाठक को हर माह के प्रमुख धार्मिक आयोजनों की स्पष्ट जानकारी मिलती है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक उत्सव की ऐतिहासिक, पौराणिक एवं आध्यात्मिक पृष्ठभूमि को सरल, तथ्यात्मक और भावनात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक का 'प्राक्कथन' स्वयं इस कृति की आत्मा को प्रतिबिंबित करता है। यह रचना केवल एक सूची या जानकारी संग्रह नहीं है, बल्कि यह पाठक को भारतीय संस्कृति की गहराइयों तक ले जाने वाला अध्यात्मिक पुल है। लेखक ने बड़े शोध और अनुभव के साथ हर त्योहार की महत्ता, विधि-विधान और उससे जुड़ी लोककथाओं को सहज भाषा में समझाया है।

यह पुस्तक न केवल विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और अध्यापकों के लिए उपयोगी है, बल्कि आम पाठक, धार्मिक श्रद्धालु एवं भारतीय जीवनशैली को समझने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए उपयोगी है। पुस्तक में चित्रों और प्रसंगों के माध्यम से रोचकता बनाए रखी गई है, जिससे यह केवल एक धार्मिक संदर्भ ग्रंथ नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और सांस्कृतिक गौरव का अनुभव कराने वाली कृति बन जाती है।

पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ :- हिंदू पंचांग के अनुसार वर्ष भर के व्रत-त्योहारों का क्रमबद्ध और सारगर्भित विवरण, प्रत्येक व्रत व उत्सव की पौराणिक, ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक व्याख्या, सरल, भावप्रधान व शोधपरक लेखन शैली, धार्मिक विषयों के माध्यम से संस्कार, कर्तव्य और संस्कृति का प्रचार, चित्रों, प्रसंगों व दृष्टांतों से सजीव प्रस्तुति, सभी वर्गों के लिए उपयोगी - विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक, गृहस्थ, साधक एवं सामान्य पाठक।

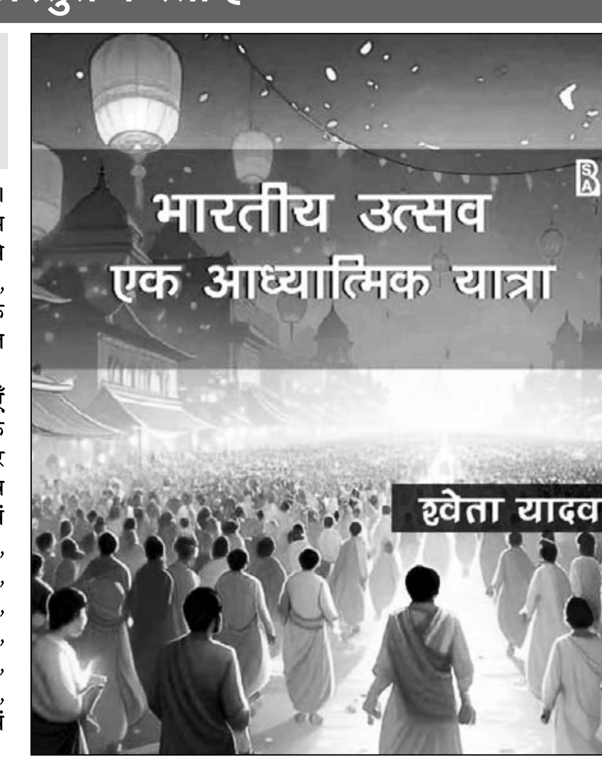

'भारतीय उत्सव : एक आध्यात्मिक यात्रा' एक ऐसी कृति है, जो पाठक को भारत की आध्यात्मिक विरासत और सांस्कृतिक गरिमा से जोड़ती है। यह केवल व्रत-त्योहारों की सूची नहीं, बल्कि एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा है, जो आत्मानुशासन, श्रद्धा और धर्म के मूल भाव को जीवन में उतारने की प्रेरणा देती है। यह पुस्तक हर भारतीय परिवार, विद्यालय, पुस्तकालय तथा शोध संस्थानों में स्थान पाने योग्य है।

समीक्षक : प्रो. प्रदीप शर्मा,
डीन, वाणिज्य संकाय, राजस्थान विश्वविद्यालय।

अंतर्राष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्र की 17 चौकियों पर सैनिकों की नेत्र जांच की

रामदेवरा में चल रहे लोकदेवता बाबा रामदेव नेत्र कुम्भ के अन्तर्गत सक्षम संगठन ने पहली बार बीएसएफ के जवानों तक नेत्र चिकित्सा सेवा पहुंचाई

- **लगभग 250 बीएसएफ जवानों की आँखों की जांच, परामर्श और उपचार किया, जांच के समय कई जवानों की दृष्टि सम्बन्धी समस्याएं सामने आई**
- **सक्षम संगठन का यह अनूठा अभियान इस बात का उदाहरण है कि चाहे तीर्थयात्री हों या देश के प्रहरी, नेत्र चिकित्सा की यह रोशनी सब तक पहुंचनी चाहिए**

पोकरण/रामदेवरा, (निसं)। रामदेवरा में चल रहे लोक देवता बाबा रामदेव नेत्र कुम्भ के अन्तर्गत शुक्रवार को सक्षम संगठन ने अपने राष्ट्रसेवी संकल्प को चरितार्थ करते हुए पहली बार बीएसएफ के उन जवानों तक नेत्र चिकित्सा सेवा पहुँचाई, जो पाकिस्तान से लगती अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर दिन-रात देश की रक्षा में तैनात रहते हैं।

दिल्ली से आई एक विशेष आधुनिक नेत्र चिकित्सा से सुसज्जित वैन रामदेवरा से निकलकर सीमा की ओर रवाना हुई। इस वैन में सभी अत्याधुनिक नेत्र जांच उपकरण और अनुभवी विशेषज्ञ मौजूद थे। यह वैन सीधे 17 सीमा चौकियों तक पहुंची और वहां तैनात लगभग 250 बीएसएफ जवानों की आँखों की जांच, परामर्श और उपचार किया गया। इस ऐतिहासिक पहल में सीमाजन कल्याण समिति राजस्थान प्रदेश महामन्त्री एवं नेत्र कुम्भ रामदेवरा के महामन्त्री खेताराम लीलड, ट्रान्सविजन कंपनी के सुरेश कुमार, मिस्बाह और सक्षम के वरिष्ठ नेत्र विशेषज्ञ डॉ. हजारी राम का विशेष समन्वय और मार्गदर्शन रहा। जाँच के समय कई जवानों की दृष्टि सम्बन्धी समस्याएं सामने आईं। तत्काल उन्हें उचित दवाइयां और चश्मे वितरित किए गए। साथ ही भविष्य में आँखों की देखभाल हेतु परामर्श भी प्रदान किया गया।

नेत्र कुम्भ आयोजन समिति के महासचिव खेताराम लीलड ने कहा कि सक्षम संगठन का उद्देश्य केवल तीर्थ यात्रियों तक ही सीमित नहीं है। सीमा पर तैनात हमारे जवान देश की ढाल है। उनकी आँखें स्वस्थ रहेंगी तो वे और अधिकता सतर्कता से अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए चौकसी कर पायेंगे। आज यह सेवा उनके द्वार तक पहुंचाना हम सभी के लिए गर्व का विषय है। वरिष्ठ नेत्र विशेषज्ञ डॉ. हजारी राम ने बताया कि सीमा चौकियों पर जाकर जांच करने का अनुभव बहुत भावुक करने वाला रहा। कई जवान वर्षों से आँखों की समस्याओं से जूझ रहे थे, लेकिन सुविधाओं के अभाव में इलाज नहीं करा पाए। सक्षम संगठन का यह प्रयास उनकी आवश्यकता को वहीं पूरा करता है जहाँ वे तैनात हैं।

ट्रान्सविजन कंपनी के प्रतिनिधि सुरेश कुमार व मिस्बाह ने कहा यह पहल ''नेत्र चिकित्सा आपके द्वार'' की सच्ची परिभाषा है। हमारे जवानों की आँखों की सेहत ही उनकी सतर्कता की गारंटी है। सक्षम ने इस कार्य से न केवल सेवा की है बल्कि देशप्रेम की नई शुरुआत की है।

यह पहली बार है जब नेत्र कुम्भ की सेवाएं सैंकड़ों किलोमीटर दूर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तक पहुंचाई गई है। यह प्रयास यह सिद्ध करता है कि सक्षम संगठन केवल शिविर स्थल तक सीमित नहीं है, बल्कि जहां आवश्यकता है, वहां तक पहुंचना ही इसका वास्तविक उद्देश्य है। सक्षम संगठन का यह अनूठा अभियान इस बात का उदाहरण है कि चाहे तीर्थयात्री हों या देश के प्रहरी, नेत्र चिकित्सा की यह रोशनी सब तक पहुंचनी चाहिए। जिस बीज का अंकुरण 673 साल पहले लोकदेवता बाबा रामदेव जी मारवाड की धरा पर किया था उसीका सशक्त पर्याय बन गया है रामदेवरा में चल रहा नेत्रकुम्भ। एक अगस्त से लेकर 2 सितम्बर तक जाट धर्मशाला के सामने संचालित हो रहा नेत्र जांच और आवश्यकता के हिसाब से उपयुक्त चश्में और परामर्श का दायरा नेत्रकुम्भ तक सीमित न होकर पूरे मरुप्रदेश तक फैल गया है। समर्पित कार्यकर्तों बसों, एम्बुलेंस यहाँ तक कि अपने दुपहिया वाहनों पर जातरुओं को लेकर आ रहे हैं और जाँच करवा रहे हैं। ज्यादा से ज्यादा लाभार्थियों की नेत्र जांच हो और नेत्रकुम्भ में स्थापित सेवाओं का लाभ सभी को प्राप्त हो इसके लिए सेवाभावी कार्यकता जुट हुए हैं।

पांच लाख का इनामी व पन्द्रह साल से फरार अपराधी पकड़ा

अपराधी पर पांच लाख रुपये का इनामी घोषित था पुलिस और सुरक्षा एर्जेसियों को चकमा दे रहा था

पुलिस ने इनामी व फरार आरोपी को गिरफ्तार किया।

■ बदले हुए नामों से फर्जी दस्तावेज बनवाकर अपनी पहचान छिपाकर रह रहा था आरोपी

जयपुर । राजस्थान पुलिस की एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स (एजीटीएफ) ने अपनी अब तक की सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण कार्रवाई में पन्द्रह साल से फरार चल रहे एक जघन्य हत्याकांड के मुख्य आरोपित प्रवीण उर्फ लाला निवासी कांमा को उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद से गिरफ्तार कर लिया है। यह अपराधी केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा पांच लाख रुपये का इनामी घोषित था और पिछले 15 वर्षों से देश की कई पुलिस और सुरक्षा एर्जेसियों को चकमा दे रहा था।

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स और अपराध दिनेश एम एन यह मामला 29 जुलाई 2010 का है, जब भरतपुर जिले के कामां में तत्कालीन जिला एवं सत्र न्यायाधीश रामेश्वर दयाल रोहिल्ला के परिवार पर हमला किया गया था। पुरानी रंजिश के चलते, परसराम, डालचंद, प्रवीण उर्फ लाला और बबलू ने फायरिंग कर जज के पिता खेमचंद रोहिल्ला और भाई गिर्राज प्रसाद की नृशंस हत्या कर दी थी। इस हमले में उनके भाई एडवोकेट राजेंद्र प्रसाद रोहिल्ला, प्रमिला और अंजू भी गोली लगने से घायल हुए थे। इस जघन्य हत्याकांड का मुख्य आरोपित प्रवीण उर्फ लाला था। जो घटना के बाद से फरार था। राजस्थान पुलिस द्वारा 25 हजार रुपये का इनाम घोषित किए जाने के बावजूद जब आरोपित पकड में नहीं आया तो मामले की गंभीरता को देखते हुए मार्च 2011 में उच्च न्यायालय ने इसकी जांच सीबीआई को सौंप दी थी।

सीबीआई ने इस हत्याकांड में परसराम, प्रवीण उर्फ लाला, डालचंद और पदम सिंह को दोषी माना था। इस हत्याकांड के दो वर्ष बाद आरोपित पदम सिंह व डालचंद को गिरफ्तार कर लिया गया था। सीबीआई ने भी अथक प्रयास किए और प्रवीण उर्फ लाला व परसराम की गिरफ्तारी पर 5-5 लाख रुपये का इनाम घोषित किया। दोनों भाई प्रवीण उर्फ लाला और परसराम पिछले 15 साल से फरार थे।

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स और अपराध दिनेश एम एन बताया कि इस फरार अपराधी को पकडने के लिए एक विशेष टीम का गठन किया गया, जहां टीम को मुखबिर से मिली सटीक सूचना के आधार पर टीम को तुरंत दिल्ली और गाजियाबाद के सीमावर्ती इलाकों में रवाना हुई। टीम ने आरोपितों की तलाश में सूचना के आधार पर राज्य एवं राज्य के बाहर कई स्थानों पर दबिश दी।

प्रदेश स्तर पर चले अतिक्रमण हटाने का अभियान, संरक्षण देने वाले अफसरों पर होनी चाहिए कार्रवाई

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को कहा है कि प्रदेश स्तर पर सडक़ों और फुटपाथ से अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाना चाहिए। वहीं यदि अतिक्रमण को संरक्षण देने में किसी अफसर या पुलिस अधिकारी की भूमिका सामने आती है तो उस पर भी उचित कार्रवाई की जा सकती है। अदालत ने कहा कि अतिक्रमण करने वालों के प्रति किसी तरह की सहानुभूति नहीं दिखाई जा सकती। अदालत ने यूडीएच के अतिरिक्त मुख्य सचिव को कहा है कि वे अतिक्रमण को लेकर सुप्रीम कोर्ट के दिए निर्णय को ध्यान में रखते हुए शहरों और कस्बों के नगर निगमों व नगर परिषदों को अतिक्रमण हटाने के लिए निर्देश जारी करें। जस्टिस एसपी शर्मा और जस्टिस संजीत पुरोहित की खंडपीठ ने यह आदेश विनोद कुमार बोयल की जनहित याचिका को पुनर्जीवित करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता की ओर से प्रार्थना पत्र पेश कर अवमानना कर्ता के रूप में एक अधिकारी को पक्षकार बनाने की गुहार की। अदालत ने प्रार्थना पत्र खारिज करते हुए कहा कि अवमानना के मामले में किसी व्यक्ति को बाद में पक्षकार बनाने का कोई नियम नहीं है। जिस अधिकारी को निर्देश दिए गए थे, अवमानना प्रकरण उस तक ही सीमित रहता है। अदालत ने कहा कि एसीएस, यूडीएच और जयपुर विकास प्राधिकरण शहर को जोड़ने वाले मार्गो पर किए गए अतिक्रमणों को चिन्हित करने के दौरान मास्टर प्लान व जोनल डवलपमेंट प्लान में तय मानकों का ध्यान रखेंगे। वहीं यदि रोड या फुटपाथ पर अतिक्रमण पाया जाता है तो उसे हटाया जाए। अदालत ने कहा कि सडक़ों और फुटपाथ पर कोई भी अतिक्रमण नहीं होना चाहिए। किसी ठााम प्राधिकारी की ओर से जारी पट्टा या कोर्ट का आदेश अतिक्रमण हटाने में आड़े नहीं आएगा। कोई भी कोर्ट अतिक्रमण को प्रोत्साहित करने के लिए अधिकृत नहीं है। अदालत ने अपने आदेश में स्पष्ट किया है कि अतिक्रमण हटाने से पूर्व अतिक्रमण करने वाले को 7-8 दिन का समय दिया जाना चाहिए, ताकि वह अपने स्तर पर कब्जा हटा सके। वहीं इसके बाद प्रशासन कब्जा हटाए और उसमें होने वाला खर्च भी अतिक्रमी से वसूल करे। इसके साथ ही अदालत ने मामले की सुनवाई 7 अक्टूबर को रखते हुए जेडीए सहित अन्य विकास प्राधिकरणों की प्रवर्तन शाखा के मुखियाओं को पेश होने को कहा है।

विद्युत प्रसारण सिद्धार्थ सिहाग के नाम पत्र लिखा

जयपुर। विद्युत प्रसारण में नई भर्ती के लिए राजस्थान विद्युत श्रमिक संघ बीएमएस ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर एवं प्रबंध निदेशक विद्युत प्रसारण सिद्धार्थ सिहाग के नाम पत्र लिखा।

संघ के प्रदेश संयुक्त महामंत्री यतेंद्र कुमार ने बताया कि विद्युत प्रसारण में काफी समय से नवीन भर्ती नहीं की गई है, जबकि प्रसारण निगम में हर वर्ष बड़ी संख्या में नए ठिाड सब स्टेशनों ( ) का निर्माण हो रहा है, इसलिए सभी वर्गों में कर्मचारियों की कमी हो रही है। नियम के आधार पर जो ठिाड सब स्टेशनों पर जो पोस्ट मंजूर है, उनकी पूर्ति भी नहीं हो रही।

ग्रिड सब स्टेशनौ के संचालन एवं वहां पर शिफ्ट ड्यूटी के लिए भी पर्याप्त स्टाफ नहीं है, मजबूरन वर्किंग अरेंजमेंट या डिप्लॉयड करके स्टाफ से काम चलाना पड़ रहा है, जो कि एक गंभीर समस्या है।

विद्युत प्रसारण में आईटीआई तकनीकी कर्मचारी, जूनियर इंजीनियर, गैर तकनीकी कर्मचारी, एपीओ, अकाउंटेंट, मिनिस्ट्रियल स्टाफ, एवं चतुर्थ श्रेणी पदों पर नवीन भर्ती की जाए और और नए सर्किलों को भी खोला जाए, जिससे जीएसएस पर बिना किसी सप्लाई अवरुद्ध हुए एवं कार्यालयो का कार्य बिना रुकावट के सही समय पर पूरा किया जाए।

किसी भी जर्जर स्कूल भवन में नहीं कराए पढ़ाई, कराए जाए वैकल्पिक इंतजाम : हाईकोर्ट

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने राज्य सरकार को कहा है कि प्रदेश के किसी भी जर्जर स्कूल भवन में विद्यार्थियों की पढ़ाई नहीं कराई जाए। वहीं ऐसी स्कूलों में पढाई के लिए आने वाले विद्यार्थियों के अध्यापन के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की जाए, ताकि उनकी पढाई प्रभावित नहीं हो। इसके साथ ही अदालत ने प्रमुख शिक्षा सचिव को कहा है कि वे आगामी सुनवाई तक शपथ पत्र पेश कर बताए कि उनकी जानकारी में आए जर्जर स्कूल भवन में पढाई नहीं कराई जा रही है। जस्टिस महेन्द्र कुमार गोयल और जस्टिस अशोक कुमार जैन की खंडपीठ ने यह आदेश प्रकरण में लिए गए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान सहित अन्य याचिकाओं पर संयुक्त रूप से सुनवाई करते हुए दिए। अदालत मामले में अब 4 सितंबर को सुनवाई करेगी।

सुनवाई के दौरान केन्द्र सरकार की ओर से अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल राज दीपक रस्तोगी की ओर से मामले में जवाब पेश करने के लिए समय मांगा गया। वहीं महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने अदालत को बताया कि राज्य सरकार ने जर्जर स्कूल भवनों में कक्षाएं संचालित नहीं करने के निर्देश जारी किए हैं। इस पर अदालत ने कहा कि क्या वे कह सकते हैं कि अब कोई दुर्घटना नहीं होगी। ऐसे में महाधिवक्ता ने कहा कि विभाग ने सभी स्कूलों का सर्वेक्षण करने के आदेश दिए हैं।

कमेटी गठित तक ऐसे स्कूल भवनों की पहचान की जा रही है। स्कूल भवनों की मरम्मत के लिए बजट भी जारी किया गया है। अदालत को दो सप्ताह में शपथ पत्र पेश कर इसकी जानकारी दी जाएगी। इसके अलावा स्कूलों को भी निर्देश दिए गए हैं कि वे मानसून के दौरान विशेष उपाय करें।

अदालत ने राज्य सरकार से पूछा कि अभी तक पालना रिपोर्ट पेश नहीं की गई। ऐसे में सुनिश्चित किया जाए की जर्जर भवनों में कक्षाएं संचालित नहीं हो। इस पर एजी ने कहा कि अगर किसी की गलती सामने आई तो हम उस पर कार्रवाई करेंगे। ऐसी इमारतों का लगातार सर्वेक्षण जारी है, फिर भी अदालत चाहे तो निर्देश जारी कर सकती है। इस पर अदालत ने जर्जर स्कूलों में स्कूल संचालित करने पर रोक लगाते हुए प्रमुख शिक्षा सचिव से शपथ पत्र पेश करने को कहा है।

सरकार लाएगी आरयूआईडीपी फेज-5

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार नगरीय क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं को सुदृढ करने और शहरी जीवन स्तर में व्यापक सुधार लाने के लिए योजनाबद्ध ढंग से कार्य कर रही है। इस दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए राज्य सरकार ने 19 हजार 149 करोड़ रुपए की लागत वाले राजस्थान अर्बन इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट प्रोजेक्ट (आरयूआईडीपी) फेज-5 की तैयारी कर ली है।

यह परियोजना राज्य सरकार की स्वीकृति के उपरांत अब नीति आयोग तथा शहरी विकास मंत्रालय द्वारा परीक्षणाधीन है। परियोजना के वित्तपोषण हेतु ऋण आवेदन पहले ही प्रस्तुत किया जा चुका है। इस वित्तीय सहयोग में एशियन डेवलपमेंट बैंक और विश्व बैंक की भागीदारी प्रस्तावित है। परियोजना के अंतर्गत राज्य के 296 नगरों में सीवरेज और अपशिष्ट जल प्रबंधन, 41 जिला मुख्यालयों सहित 80 शहरों में जलापूर्ति स्तर में सुधार, 56 शहरों में जलभराव के समाधान, बाढ़ प्रबंधन और विरासत संरक्षण के लिए कमांड एंड कंट्रोल सेंटर की स्थापना, जयपुर, जोधपुर, कोटा, भरतपुर और इनके 28 सैटेलाइट कस्बों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से शहरी आधारभूत ढांचे को उन्नत बनाने के कार्य करवाए जाएंगे।

चलती बाइक में लगी आग

जयपुर। सोडाला थाना इलाके में शुक्रवार सुबह बाइक में अचानक से आग लग गई। जिसके बाद पेट्रोल टैंक फटने की संभावना से घटनास्थल पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया। लेकिन कुछ लोगों ने बजरी ,मिट्टी डाल कर आग पर काबू पाया।बताया जा रहा है कि शुक्रवार सुबह बाइक चालक मोहित अपनी पत्नी विजया के साथ बाजार सामान लेने जा रहा था। इसी दौरान फुटलिया बाग चौक पर अचानक से बाइक में आग लग गई।

पंचायती राज व नगर निकाय उपचुनावों में भाजपा का जनाधार बरकरार

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने पंचायती राज एवं नगर निकाय उपचुनावों में विजयी भाजपा प्रत्याशियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं तथा क्षेत्र की जनता का धन्यवाद ज्ञापित किया है जिन्होंने एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी पर विश्वास जताते हुए पार्टी को समर्थन दिया।

राठौड़ ने कहा कि प्रदेश में हाल ही में जिला परिषद, पंचायत समिति और नगर पालिका के कुल 19 वार्डों में उपचुनाव हुए थे। इनमें से 7 वार्डों पर भाजपा ने विजय प्राप्त की, जबकि कांग्रेस को केवल 6 सीटें ही मिल सकीं और शेष 6 सीटों पर अन्य प्रत्याशियों को सफलता मिली। उन्होंने बताया कि उपचुनाव से पहले कांग्रेस के पास 19 सीटों में से 10 सीटें थीं, जो अब घटकर 6 पर सिमट गई हैं। कांग्रेस को 4 सीटों का नुकसान हुआ है, जबकि भाजपा ने अपना जनाधार बरकरार रखते हुए 7 सीटों पर विजय प्राप्त की। यह परिणाम इस बात का स्पष्ट संकेत है कि विपक्ष का जनाधार लगातार घटता जा रहा है और जनता भाजपा की नीतियों एवं नेतृत्व में विश्वास जता रही है।भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि भाजपा उपचुनावों में लगातार अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है।

प्रेमिका से शादी करने के लिए तीन बार तलाक बोल पत्नी को छोड़ा

■ चेहरे पर तेजाब डालने की धमकी दे स्टाम्प पेपर पर कराए हस्ताक्षर

जयपुर। अशोक नगर थाना इलाके में अल्पसख्यक समुदाय की महिला ने अपने पति के खिलाफ तीन तलाक देने का मामला दर्ज कराया है। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर आरोपी पति के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी है।

पुलिस ने बताया कि आदर्श नगर निवासी 30 वर्षीय विवाहिता ने मामला दर्ज कराया है कि वर्ष 2021 की जुलाई में उसका निकाह अशोक नगर ,सी-स्कीम निवासी से हुआ था। शादी के करीब 6 महीने बाद ही उसे पति के प्रेम-प्रसंग की जानकारी मिली। समझाइश करने के बाद भी पति नहीं माना और प्रेमिका से शादी करने की इच्छा जाहिर करने लगा। जिसके बाद आरोपी पति ने अपने परिजनों के साथ मिलकर पीड़िता को परेशान करना शुरु कर दिया और पिता से दहेज के रुप में दुकान दिलवाने का दबाव बनाने लगा।

वर्ष- 2023 में पीड़िता ने परेशान होकर मामले की जानकारी अपने परिजनों को दी। परिजनों के विरोध करने पर आरोपी पति ने लिखित में माफीनामा दिया और दुबारा ऐसी गलती नहीं होने का आश्वासन दिया। लेकिन कुछ दिन बाद ही वापस परेशान करना शुरु कर दिया।

6 जुलाई का आरोपी ने पीड़िता को तेजाब डाल कर चेहरा खराब करने की धमकी देकर खाली स्टाम्प पर हस्ताक्षर करवा लिए और तीन बार तलाक बोल कर उसे छोड़ दिया। पीड़िता ने मामले की जानकारी अपने पिता और भाई को दी। जिसके बाद परिजनों ने पीड़िता को थाने ले जाकर आरोपी पति के खिलाफ मामला दर्ज कराया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी है।

आत्महत्या कर रही विवाहिता को पुलिस ने बचाया

■ विवाहिता ने आत्महत्या से पहले दवाई खाकर उल्टी करते इंस्टाग्राम रील डालकर लिखा- गुड बाय माय लाइफ

■ विवाहिता ने शरीर पर कई कट भी मार रखे थे

जयपुर। कालवाड़ पुलिस ने आत्महत्या कर रही एक विवाहिता को शुक्रवार दोपहर बचा लिया। आत्महत्या से पहले दवाई खाकर उल्टी करते इंस्टाग्राम रील डालकर लिखा- गुड बाय माय लाइफ। इस पर पुलिस ने लोकेशन ट्रेस कर घर ढूंढ निकाला और फिर गेट तोड़कर अंदर घुस कर विवाहिता को अस्पताल में भर्ती कर समझाइश की।

अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) आलोक सिंघल ने बताया कि पुलिस कंट्रोल रूम के वॉट्सऐप नंबर पर सूचना मिली कि एक विवाहिता आत्महत्या का प्रयास कर रही है। वीडियो में विवाहिता रोते हुए कुछ दवाई-गोलियां खा रही थी। इंस्टाग्राम पर रील डाल लिखा गया था कि गुड बॉय माय लाइफ।

पुलिस ने आत्महत्या अलर्ट को लेकर तुरंत मोबाइल नंबर के आधार पर लोकेशन ट्रेस की। लोकेशन के आधार थानाधिकारी करधनी सवाई सिंह व कालवाड़ थानाधिकारी कविता शर्मा को तुरंत भेजा गया। महज कुछ ही मिनटों में पुलिस टीमों ने विवाहिता का घर ढूंढ निकाला। पुलिस ने गेट खटखटाने के साथ समझाइश कर खुलवाने का प्रयास किया। विवाहिता के गेट नहीं खोलने पर कांस्टेबल विक्रम सैनी और मुकेश गोरा ने तोड़कर खोला। कमरे में बैड पर विवाहिता और डेढ़ साल का बच्चा मौजूद मिला। पुलिस टीम को विवाहिता मानसिक अवसाद की स्थिति में मिली। हालत देखकर तुरंत उसे अस्पताल में भर्ती करवाया। निवारू की रहने वाली विवाहिता से पुलिस महिला अधिकारियों ने समझाइश की। पति को सूचना देकर बुलाया गया। आत्महत्या के बारे में सोचने की पूछने पर विवाहिता ने बताया कि वह मेंटली परेशानी से जूझ रही है। उसकी दवाइयां चल रही है। उदास होने पर वह खुद को नुकसान पहुंचाती थी।

उसने खुद के शरीर पर कई कट भी मार रखे थे। बताया जा रहा है कि उसके सिर में कुछ समय पहले चोट लगी थी। पति से अनबन व घरेलू कलह को लेकर भी मना किया गया है, किशोर अवस्था में उसकी शादी के बाद डेढ़ साल का बेटा है। समझाइश कर विवाहिता को भविष्य में ऐसा कदम नहीं उठाने का सुझाव दिया।

कूट रचित दस्तावेज़ों से उठाया ऋण, मामला दर्ज

जयपुर। लोगों को आवास ऋण देने वाली सी.एस.एल. फाइनेंस कंपनी ने विद्याधर नगर पुलिस थाने में कूटरचित दस्तावेजों से लोन लेने वाले आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है।

जानकारी के अनुसार छाजूराम पुत्र जगदीश नारायण गुर्जर, निवासी नेवर आंधी (जयपुर), रामकिशोर मीणा पुत्र रामनिवास मीणा, निवासी दौपुर बासको जयपुर, तथा सुरेश कुमार पुत्र हीरा लाल कुमावत समेत अन्य ने कंपनी में कूट रचित दस्तावेज़ों के आधार पर ऋण लिया।

कंपनी को असल दस्तावेज़ों की जांच करने पर यह धोखाधड़ी सामने आई। इसके बाद कंपनी के अधिवक्ता मनीष कुमार शर्मा और भावेश गोस्वामी ने थाना विद्याधर नगर में रिपोर्ट दर्ज करवाई। हालांकि रिपोर्ट दर्ज होने के बावजूद, आज तक इस प्रकरण में कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। इससे पीड़ित कंपनी ने गहरी नाराजगी जताई है और मामले में शीघ्र न्यायिक कार्रवाई की मांग की है।

विवि छात्रसंघ कराने के लिए दायर याचिका पर सुनवाई 25 को

■ जस्टिस अनूप कुमार ढंड की एकलपीठ ने यह आदेश जय राव व अन्य की ओर से दायर याचिकाओं पर दिए

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने विश्वविद्यालय छात्रसंघ चुनाव कराने के लिए दायर याचिका पर सुनवाई 25 अगस्त तक टाल दी है। जस्टिस अनूप कुमार ढंड की एकलपीठ ने यह आदेश जय राव व अन्य की ओर से दायर याचिकाओं पर दिए।

याचिकाओं में कहा गया कि प्रत्येक छात्र को अपना प्रतिनिधि चुनने का संवैधानिक अधिकार है। अपने प्रतिनिधि के जरिए ही छात्र अपनी समस्याओं को विवि प्रशासन तक पहुंचाता है। सुप्रीम कोर्ट भी इसे संवैधानिक अधिकार मान चुका है। वहीं लिंगदोह कमेटी की सिफारिश के अनुसार नया सत्र आरंभ होने के छह से आठ सप्ताह के भीतर छात्रसंघ चुनाव होने चाहिए। इसलिए राज्य सरकार और विवि प्रशासन को छात्रसंघ चुनाव कराने के निर्देश दिए जाए। जिसके जवाब में राज्य सरकार की ओर से जवाब पेश कर इस सत्र में छात्रसंघ चुनाव कराने से इनकार किया गया है। सरकार ने अपने जवाब में कहा कि विद्यार्थियों के व्यापक हित को देखते हुए विवि और कॉलेजों में छात्रसंघ चुनाव नहीं कराने का निर्णय लिया गया है। इसके अलावा गत छह अगस्त को हुई बैठक में प्रदेश की विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुल गुरुओं ने भी छात्रसंघ चुनाव नहीं कराने की सिफारिश की है।

इनमें राजस्थान विवि की कुलगुरु भी शामिल थी। कुलगुरुओं का मानना है कि छात्रसंघ चुनाव से विद्यार्थियों की पढ़ाई में व्यवधान होता है और वहां का माहौल भी खराब होता है। वहीं लिंगदोह कमेटी की ओर से बताई छह से आठ सप्ताह की अवधि भी समाप्त हो चुकी है। ऐसे में अब छात्रसंघ चुनाव नहीं कराए जा सकते।

मारपीट प्रकरण में पूर्व एमएलए मलिंगा कोर्ट में हुए पेश

जयपुर। बिजली विभाग के एईएन से मारपीट से जुड़े मामले में शुक्रवार को पूर्व एमएलए गिर्राज सिंह मलिंगा जिले की एससी-एसटी मामलों की विशेष कोर्ट में अन्य 9 आरोपियों के साथ पेश हुए। आरोपियों की उपस्थिति दर्ज कर अदालत ने मामले की सुनवाई सुनवाई 20 सितंबर को तय की है।

दरअसल हाईकोर्ट ने गत 7 जुलाई को पीडित हर्षाधिपति की आपराधिक याचिका पर सुनवाई करते हुए धौलपुर की कोर्ट में पेंडिंग चल रहे इस केस को जयपुर जिले की एससी, एसटी कोर्ट में ट्रांसफर करने का निर्देश दिया था।

हाईकोर्ट ने मलिंगा का केस जयपुर ट्रांसफर करते हुए कहा था कि आरोपी को जमानत मिलने के बाद निकाले जुलूस से प्रतीत है कि उसने शक्ति प्रदर्शन किया था। उसके खिलाफ मारपीट के अन्य केस भी दर्ज हैं। इसलिए यह केस धौलपुर से जयपुर में ट्रांसफर करना उचित है। प्रार्थी की ओर से हाईकोर्ट में कहा था कि धौलपुर में सुनवाई होने से उसके साथ ही गवाहों को भी जान-माल का खतरा है। आरोपी के खिलाफ अन्य आपराधिक केस भी दर्ज हैं। इसलिए केस की सुनवाई धौलपुर से बाहर भेजी जाए।

प्रतिभाओं ने बढ़ाया शेखावाटी का मान : विधानसभा अध्यक्ष

'विकृतियों का समाधान संस्कारों से होगा'

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का दुपट्टा और माला पहनाकर व स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनन्दन किया।

■ श्री शक्ति गोयनका ट्रस्ट का गोयनका रिकग्निशन सम्मान समारोह 2025

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा है कि सनातन है तो हम है और सनातन नहीं है तो हम भी नहीं होंगे। उन्होंने कहा कि जीवन्तता में भी जीवन है। विकृतियों का समाधान संस्कारों से होगा। समाज केवल ईमारतों और सडकों से ही नहीं बनता उसके लिए साथ ही मानवीय मूल्यों, सेवा और परम्पराएं भी जीवित रखने होते है। गोयनका ट्रस्ट द्वारा आयोजित सम्मान की परम्परा से उन विभूतियों को पहचान मिल रही है जिन्होंने अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देकर समाज के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने है। यह सम्मान व्यक्तियों के साथ उनके मूल्यों का है।

देवनानी शुक्रवार को फलहपुर शेखावाटी में जमीनी स्तर पर सकारात्मक बदलाव लाने वाले गुमनाम नायकों को दिये जाने वाले गोयनका रिकग्निशन सम्मान समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। देवनानी ने व्यापार, समाज सेवा, कला, विज्ञान, खेल कूद, शिक्षा, साहित्य, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले गोयनका समुदाय के शूरवीरों को पुरस्कार प्रदान किये। देवनानी ने दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ किया। समारोह में पहुँचने पर श्री देवनानी का विशाल फूल माला पहनाकर और शॉल ओढाकर अभिनन्दन किया गया। देवनानी ने कहा कि गोयनका परिवार ने शेखावाटी की धरा को आगे बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि जमन स्थली को कभी नहीं भूलना चाहिए। जो जड़ों से अलग जो जाते है, वे हरे-भरे नहीं रह पाते है। हम कहीं भी रहें यह राजस्थान हमारा है। व्यापार जीवन का अंग है। अपनी जन्म स्थली को सेवा के माध्यम से जब भी समय मिले उसके लिए कार्य करना चाहिए। यही हमारी संस्कृति और सामाजिक जिम्मेदारी हैं। देवनानी ने कहा कि राजस्थान की इस धरा ने शौर्य की गाथाएं दी है, सन्तों की वाणी दी है और व्यापारियों को निष्ठा दी है।

'किसानों को संतुलित उर्वरक के उपयोग के लिए करें जागरूक, ऑर्गेनिक खेती को मिले बढ़ावा'

सभी जिलों में उर्वरक की पर्याप्त उपलब्धता हो सुनिश्चित, किसानों को समय पर हो उर्वरक की आपूर्ति

■ प्रदेश में उर्वरक के अवैध व्यापार व अवैध भण्डारण के खिलाफ हुई उल्लेखनीय कार्यवाही

■ खरीफ-2025 में उर्वरक आपूर्ति की समीक्षा बैठक

जयपुर । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा है कि खरीफ 2025 के लिए प्रदेश के सभी जिलों में उर्वरक की पर्याप्त उपलब्धता रखी जाए ताकि किसानों को बिना किसी परेशानी के सुविधापूर्वक एवं समय पर उर्वरक की आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक जिलें में किसानों को उर्वरक की उपलब्धता की नियमित जानकारी दी जाए।

शर्मा ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में खरीफ 2025 में उर्वरक के आवंटन, आपूर्ति एवं वर्तमान उपलब्धता की स्थिति की जिलेवार समीक्षा करते हुए कहा कि प्रदेश में इस बार अच्छी बारिश हुई है जो कि अच्छी पैदावार के संकेत हैं। राज्य सरकार किसानों की खुशहाली एवं समृद्धि के लिए उन्हें उच्च गुणवत्तायुक्त खाद, बीज एवं उर्वरक उपलब्ध करवा रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को संतुलित उर्वरक के उपयोग के लिए जागरूक किया जाए एवं वर्मी कम्पोस्ट, ऑर्गेनिक खाद के उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इसके लिए सोशल मीडिया व अन्य माध्यमों से प्रचार-प्रसार किया जाए तथा सेमिनार आदि आयोजित किए जाएं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम सभा के माध्यम से किसानों को जागरूक करने के लिए अभियान संचालित किया जाए।

शर्मा ने कहा कि प्रदेश में अधिक से अधिक ग्राम सेवा सहकारी समितियों के माध्यम से उर्वरक क्रय एवं वितरण किया जाए।

वहीं प्रदेश के सीमावर्ती जिलों में राज्य से उर्वरक अन्य राज्यों में परिगमन को रोकने के लिये पर्याप्त संख्या में चैक पोस्ट स्थापित किए जाए। साथ ही, उन्होंने अनुदानित यूरिया के गैर कृषि कार्यों तथा अन्य औद्योगिक गतिविधियों में उपयोग के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

बैठक में बताया गया कि कृषि विभाग ने वर्ष 2025-26 में अवैध उर्वरक, अवैध भण्डारण एवं अमानक नमूनों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करते हुए 109 औचक निरीक्षण, 71 सीजर एवं 56 एफआईआर दर्ज की गई है तथा सीजर के दौरान 397 नमूने लिए गए हैं।

इसी तरह, गत वर्ष की तुलना में इस वर्ष अधिक उर्वरक विक्रय करने वाले विक्रेताओं का निरीक्षण किया गया तथा नियमों का उल्लंघन करने वाले विक्रेताओं के विक्रय पर रोक, लाइसेंस निलम्बन एवं लाइसेंस निरस्तीकरण की उल्लेखनीय कार्यवाही भी की गई है। बैठक में कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा सहित कृषि, सहकारिता एवं संबंधित विभाग के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे।

अमेज-एड फेस्ट राजस्थान का पहला एडवरटाइजिंग फेस्टिवल का हुआ शुभारंभ

जयपुर। एरीना एनीमेशन जयपुर के द्वारा आयोजित अमेज-एड फेस्ट 2025 - राजस्थान का पहला एडवरटाइजिंग फेस्टिवल का आयोजन राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर जयपुर में सुबह 10 बजे शुरू किया गया। यह दो दिवसीय फेस्टिवल एनिमेशन और डिज़ाइनिंग इंडस्ट्री के प्रति जागरूकता बढ़ाने और छात्रों के उत्कृष्ट कैरियर के अवसरों को उजागर करने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि सिविल लाइन विधायक डॉ गोपाल शर्मा, विशिष्ट अतिथि भारतीय सेना के वीएसएम मेजर जनरल अनुज माथुर एवं रोटरी क्लब मिडटर्म के महासचिव डॉ. आदित्य नाग ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस मौके पर मुख्य अतिथियों ने स्टूडेंट्स के द्वारा लगाई गई ठााफिक्स डिजाइन, डिजिटल पेंटिंग, मेट पेंटिंग, एडवरटाइजिंग, कोमिंग डिजाइन की प्रदर्शनी का अवलोकन कर उनकी सराहना की।

घर में घुसकर बुजुर्ग की हत्या, बड़े भाई का बेटा ही निकला हत्यारा

हत्यारे ने लाठी से सिर पर वार किया था, पहले धमकी देकर गया था

- आरोपी फरार है, जिसकी तलाश की जा रही है, पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा
- मृतक और उसका पूरा परिवार खेती का काम करता है, परिवार में एक बेटी और दो बेटे हैं

सीकर, (निसं)। सीकर में घर में घुसकर बुजुर्ग की हत्या कर दी गई। हत्या करने वाला मृतक के बड़े भाई का बेटा है। उसने लाठी से सिर पर वार किया था। हत्या से पहले धमकी देकर गया था। घटना गोकुलपुरा थाना इलाके में कहारों की ढाणी की है। मामले में मृतक के बेटे ने रिपोर्ट दर्ज करवाई है। गोकुलपुरा थानाधिकारी प्रीति बेनीवाल ने बताया मृतक श्रवण कहार (58) की सिर पर चोट लगने से मौत हुई है। आरोपी फरार है, जिसकी तलाश की जा रही है। पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा गया है।

मृतक के बेटे गोपाल ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया 21 अगस्त की रात 8:30 बजे उसका परिचित हरलाल घर आया था। इस दौरान ताऊ मदनलाल का बेटा पवन घर आया। उसने आते ही हरलाल के थप्पड़ मारा। थप्पड़ मारने का कारण पूछा तो उसने मारपीट शुरू कर दी। पिता श्रवण कुमार और हरलाल ने उसे बाहर निकाला और घर भेजा। जाते वक्त पवन ने धमकी दी कि आज तुझे और तेरे पिता को जान से मारूंगा। गोपाल और उसका परिचित हरलाल दोनों खाना लेकर खेत पर चले गए। पीछे से घर पर गोपाल के पिता श्रवण कुमार और मां थी। मृतक के बेटे गोपाल को रात करीब 10:40 बजे उसके मौसेरे भाई सत्यनारायण ने कॉल करके बताया कि तुम्हारे पिता श्रवण पर पवन ने लाठी मार दी। तुम जल्दी से घर पर आओ। घर आकर पिता को हॉस्पिटल लेकर गए। डॉक्टरों ने जांच के बाद मृत घोषित कर दिया। मृतक के बेटे गोपाल ने बताया कि रात करीब 10:30 बजे उसके चचेरे भाई पवन ने उसके पिता श्रवण कुमार पर सोते हुए हमला किया, जिससे उनकी मौत हो गई। पवन शराब पीकर उनके घर पर आया था। गोपाल की रिपोर्ट पर गोकुलपुरा पुलिस ने मामला दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। मृतक श्रवण कुमार और उसका पूरा परिवार खेती का काम करता है। श्रवण कुमार के एक बेटी और दो बेटे हैं। उनके बेटे गोपाल का कहना है कि पिता श्रवण कुमार का कोई विवाद नहीं था। शराब के नशे में उसके चचेरे भाई पवन ने पिता श्रवण पर हमला किया।

महिला का फंदे पर लटका शव मिला : उदयपुर शहर के प्रतापनगर थाना क्षैत्र नाकोड़ा नगर निवासी महिला का शव फंदे पर लटका मिला। इस पर परिजनों ने पिता ने पति व ससुरालजनों के खिलाफ पुत्री को आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करने का प्रकरण दर्ज करवाया।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार गुरूवार दोपहर में नाकोड़ा नगर निवासी भावना पत्नी सन्नीलाल का शव उसके कमरे में फंदे पर लटका हुआ मिला। इसकी सूचना मिलने पर प्रतापनगर थानाधिकारी राजेन्द्रसिंह चारण मय जाप्ता ने मौके पर पहुंचकर शव को निचे उतार एमबी चिकित्सालय मोर्चरी में रखवा परिजनों को सूचना दी। इस पर मृतका के पिता कन्हैयालाल सरगरा निवासी देवगढ राजसमन्द ने मृतका के पति सन्नीलाल, ससुर मोहनलाल, सास मुरलीबाई एवं ननद अनिता के खिलाफ दहेज के लिए प्रताड़ित करने से पुत्री भावना को आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करने का प्रकरण दर्ज करवाया। इस मामले में पुलिस ने मेडिकल बोर्ड से मृतका का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया।भावना का चार वर्ष पूर्व विवाह हुआ था। उसके बाद से पति व ससुराल जन उसे परेशान किया करते थे।

युवती का अपहरण कर सामूहिक दुष्कर्म

बीकानेर, (निसं)। छतरगढ़ के एक गांव में विवाहित युवती को घर के आगे से उठा ले जाने और सुनसान जगह पर सामूहिक दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। पीड़िता की ओर से पुलिस को दी गई रिपोर्ट में बताया गया है कि वह सुबह चार बजे वह अपने घर के आगे झाड़ू लगाने के लिए निकली थी। इस दौरान काले रंग की कैंपर गाड़ी में सवार सुनील बिश्नोई, धर्मपाल मेघवाल, लीलूराम मेघवाल, महेन्द्रराम मेघवाल वहां आए और उसे जबरन कैंपर गाड़ी में डाल लिया। वह चिल्लाने लगी तो तौलिए से मुंह बंद कर दिया। गाड़ी को बीकानेर की तरफ ले गए और रास्ते में कच्चे में उतारकर सुनसान जगह रोक ली। आरोप है कि पीड़िता को गाड़ी से नीचे पटक दिया और चारों ने उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया। वारदात के बाद उसे गाड़ी में बैठाया और सुबह करीब 9.30 बजे बीकानेर सब्जी मंडी के पास मंदिर के आगे छोड़कर फरार हो गए। पीड़िता बस में बैठकर अपने परिजनों के पास पहुंची और घटना के बारे में जानकारी दी। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है, जिसकी जांच सीओ खाजूवाला अमरजीत चावला करेंगे। महिला का सैटेलाइट अस्पताल में मेडिकल मुआयना कराया गया है।

आग से दुकानों में सामान जला

अजमेर, (कासं)। सिविल लाइन थाना क्षेत्र के कायड़ रोड स्थित चौधरी मार्केट में शुक्रवार अल सुबह दुकानों में भीषण आग लगने से क्षेत्र में अफरा-तफरी का माहौल हो गया। आग की सूचना मिलते ही मौके पर सिविल लाइन थाना पुलिस और अग्निशमन विभाग की दमकल गाड़ियां मौके पर पहुंची। तीन गाड़ियों की मदद से फायर फाइटर ने आग पर काबू पाया। आग से दुकानों में रखा लाखों रुपए का सामान जल कर स्वाह हो गया। आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट माना जा रहा है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। अग्निशमन विभाग के कर्मचारी जितेंद्र ने बताया कि शुक्रवार को कायड़ रोड स्थित चौधरी मार्केट में बनी दुकानों में अलसुबह 5 बजे आग लगने सूचना मिली थी। मौके पर दमकल की तीन गाड़ियों को रवाना किया। कई घंटों की कड़ी मशक्कत के बाद दुकानों में आग को बुझाया गया। आग लगने का कारण कारण शॉर्ट सर्किट को माना जा रहा है।

ग्राम विकास अधिकारी की मौत

उदयपुर, (निसं)। सुखेर थाना क्षैत्र में ग्राम विकास अधिकारी की सड़क हादसे में मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार सुखेर थाना क्षैत्र में हुन्दरियों की पादर हाइवे पर गुरूवार रात में हुए सड़क हादसे में लखावली ग्राम पंचायत विकास अधिकारी चेनसिंह पुत्र विक्रमसिंह यादव निवासी सनवाड़ फतहनगर की मौत हो गई। लखावली ग्राम विकास अधिकारी चेनसिंह यादव गुरूवार रात में अपनी बाइक पर लखावली से शहर की तरफ आ रहे थे। जहां बीच रास्ते में चल रहे रोड़ निर्माण कार्य स्थल पर रेती व गिट्टी सामान पड़ा था। रात के अधेंरे में चेनसिंह बाइक सहित खड्डे में जा गिरे।

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सानिवि जिला खण्ड प्रथम बीकानेर

क्रमांक-1148 दिनांक-12/8/25

Notice Inviting Bid : 16/2025-26

Bid for the Construction of One Missing link road & Three Nos Deposit works [Construction of CC Road under LSG & Culvert repair work] are invited from interested bidders upto 20.08.2025 [09:30 AM] to 29.08.2025 [06:00 PM] & Open date 01.09.2025 [11:00 AM], other particulars of the bid may be visited on the procurement portal http://www. pwd.rajasthan.gov.in & eproc. rajasthan. gov.in & http://sppp.rajasthan.gov.in of the state and departmental website. The approximate value of the procurement is Rs. 243.70 Lakh.

UBN No. - 1. PWD2526450B09493, 2. PWD2526450809494 3. PWD2526WSOB09495, 4. PWD2526WSOB09499

Executive Engineer, PWD Distt. Dn-i, Bikaner

DIPR/C/11808/2025

हिस्ट्रीशिटर का साथी गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। पीड़ित को धमकाकर जमीन का एग्रीमेंट कर लाखों की वसूली के मामले में हिस्ट्रीशिटर दिलीपनाथ के साथी दो हजार के इनामी बदमाश गजेन्द्र चौधरी को गिरफ्तार किया। प्रकरण के अनुसार पीड़ित का अपहरण कर डरा धमका कर उसकी जमीन का एग्रीमेंट करा अवैध रूप से 35 लाख 50 हजार रूपये हिस्ट्रीशिटर सिसारमा निवासी दिलीपनाथ व गजेन्द्र चौधरी व साथियों ने वसूले थे। इस मामले में आरोपी गजेन्द्र पर जिला पुलिस अधीक्षक ने 2 हजार रूपये का इनाम घोषित किया था। मामले में जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर टीम ने गजेन्द्र को गिरफ्तार किया।

फैक्टरी कर्मचारियों के साथ मारपीट मामले में चार जने गिरफ्तार

भीलवाड़ा, (निसं)। हमीरगढ़ थाना पुलिस ने स्वरूपगंज रिको ग्रोथ सेंटर स्थित सखी सांई फैक्टरी के कर्मचारियों के साथ अज्ञात नकाबपोश लोगों द्वारा की गई मारपीट के मामले में चार आरोपियों को गिरफ्तार करने के सफलता हासिल की है ।

प्रार्थी विजय कुमार पुत्र जगदीश चन्द्र ब्राह्मण (33) ने गत दिनों थाने पर रिपोर्ट दर्ज करवाई थी, जिसमें उसने बताया कि 23 जुलाई की शाम करीब 5 बजे उसके पिता सांई सखी फैक्ट्री ग्रोथ सेंटर से नौकरी कर घर की ओर आ रहे थे। इस बीच पीछे से एक बिना नंबरी बाइक पर सवार चार नकाबपोश युवक आए और परिवादी के पिता पर जानलेवा हमला कर फरार हो गए। हमले में उनका पैर फैक्चर हो गया। घायल पिता को शहर के एक निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया। इस रिपोर्ट पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया। जांच सहायक उप निरीक्षक नरपत सिंह के जिम्मे की गई।

हमीरगढ़ पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर बाइक बरामद की।

जिला पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह ने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पारस जैन के निर्देशन और हमीरगढ़ थाना प्रभारी संजय गुर्जर के नेतृत्व में पुलिस टीम गठित की। पुलिस टीम ने हमलावरों की धरपकड़ के लिए रिको एरिया स्वरूपगंज व एनएच 79 हाइवे व सर्विस रोड़ पर लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले और फुटेज के साथ ही घटना में प्रयुक्त मोटर साइकिल व मोबाइल बीटीएस/सीडीआर व सूचना के आधार पर 4 आरोपितों को डिटेन कर पूछताछ की। गहनता से पूछताछ के बाद पुलिस ने मूणपुरा निवासी दिनेश गुर्जर (23) पुत्र राधेश्याम, मंगरोप की झोपड़ियां निवासी जालम सिंह दरोगा (23) पुत्र कैलाश सिंह राठौड़ व खातीखेड़ा थाना मंगरोप निवासी काना गुर्जर (23) पुत्र भैरू लाल गुर्जर और खातीखेड़ा का ही शंभूलाल गुर्जर (20) पुत्र उदय लाल गुर्जर को गिरफ्तार कर लिया। इन आरोपितों को अनुसंधान के बाद अदालत में पेश किया जहां से उन्हें न्यायिक अभिरक्षा में भिजवा दिया है।

कार्यालय राजधानी कृषि उपज मण्डी समिति, (अनाज) जयपुर

क्रमांक :- निविदा/2025-26/1375-92 दिनांक :- 21/08/2025

ई-निविदा सूचना संख्या 01 /2025-26

राजधानी कृषि उपज मण्डी समिति (अनाज) जयपुर में सुरक्षा व्यवस्था हेतु सुस्थापित, अनुभवी व पंजीकृत प्रतिष्ठित फर्मों से निर्धारित प्रपत्र में के माध्यम से सील बंद निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

सेवा / कार्य का नाम	सुरक्षा व्यवस्था कार्य (मुख्य मण्डी)
निविदा सूचना संख्या	01 / 2025-26
अनुमानित लागत (राशि रूपये में)	150.00 लाख
निविदा शुल्क (राशि रूपये में)	1500 /-
निविदा अवधि	01 वर्ष
निविदा प्रतिभूति राशि (राशि रूपये में)	300,000 /-
निविदा प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि एवं समय	10.09.2025 5.00 PM
तकनीकी निविदा खोले जाने की तिथि एवं समय	11.09.2025 02.00 PM

निविदा शुल्क एवं निविदा सिक्योरिटी तथा आर.आई. एस.एल. शुल्क का मूल डी.डी./ बैकर्स चैक तथा निविदा में वर्णित आवश्यक सभी अन्य संबंधित मूल दस्तावेज दिनांक 11.09.2025 को दोपहर 1.00 बजे तक राजधानी कृषि उपज मण्डी समिति (अनाज) जयपुर कार्यालय में बन्द लिफाफे में निविदादाता फर्म को अनिवार्य रूप से जमा कराने होगें। उक्त सभी दस्तावेज निर्धारित समय तक जमा नहीं कराने पर तकनीकी निविदा नही खोली जावेगी। उक्त कार्यो हेतु तकनीकी निविदा में सफल निविदादाता की ही वित्तीय निविदायें खोली जाऐंगी।

निविदा से सम्बन्धित बोली प्रपत्र एवं विस्तृत विवरण वेबसाईट http://www.sppp.rajasthan.gov.in एवं विभागीय वेबसाईट https://agriculture.rajasthan.gov.in/dam/ पर देखें व डाउनलोड किऐ जा सकते है।

UBN No. : DAM2526SLRC00687

सचिव राजधानी कृषि उपज मण्डी समिति (अनाज) जयपुर | प्रशासक राजधानी कृषि उपज मण्डी समिति (अनाज) जयपुर

राज.संवाद/सी/25/8619

भारतीय खाद्य निगम

क्षेत्रीय कार्यालय: 4-नेहरू प्लेस, टोंक रोड, जयपुर (राज.)-302015

फोन नं: 0141-2743137-40, ई-मेल आईडी: gmrj.fci@gov.in

विज्ञापन

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर छोटे निजी व्यापारियों हेतु ओपन मार्केट सेल स्कीम (घरेलू) के तहत एफसीआई डिपो से चावल की बिक्री के लिए आवेदन आमंत्रित करता है। इच्छुक खरीददार FCI की वेबसाइट https://fci.gov.in/, https://fci.gov.in/region/rajasthan-region पर प्रकाशित निर्देशों को देख सकते हैं और चावल खरीदने के लिए संबंधित भारतीय खाद्य निगम, मंडल कार्यालयों अजमेर/ अलवर/ बीकानेर/ जयपुर/जोधपुर/ कोटा/ श्रीगंगानगर/ उदयपुर से संपर्क कर सकते हैं।

महाप्रबंधक (क्षेत्र)

MBM UNIVERSITY, JODHPUR

Advertisement No. :- MBMU/DFOEA/ADVT/2025/20 Dated :- 19/08/2025

EXTENSION OF LAST DATE FOR ADMISSIONS

The last date of application for admission to Ph. D, PG, B. Plan and ADCGC is hereby extended up to 26th August 2025 for submission of online applications (up to 5:00 pm). Candidates should submit hard copies of form and documents along with proof of payment of application fees in the respective departments, before their interview on 27th August 2025. The process of application will be same as already notified and details available on website **www.mbm.ac.in.** Candidates should visit University website **https://mbm.ac.in** regularly, for information updates.

All further information will be given only on the University website **https://mbm.ac.in.**

Registrar, MBM University, Jodhpur

Raj.Samwad/C/25/8609

MBM UNIVERSITY, JODHPUR

Advertisement No. :- MBMU/DFOEA/ADVT/2025/22 Dated :- 20/08/2025

SECOND ADVERTISEMENT FOR EMPANELMENT OF GUEST FACULTY (FOR THE SESSION 2025-2026)

Applications for the empanelment of Guest Faculties are invited to engage classes in various disciplines. Interested person can submit their application form (as per the prescribed format and details available on the University website.) along with proof of application fees (Rs 500/- to be paid online), in the office of the Registrar, latest by 06.09.2025, 05:00 PM. All further information will be given only on the University website **https://mbm.ac.in.**

Registrar, MBM University, Jodhpur

Raj.Samwad/C/25/8610

रत्नाकर ग्रुप पर डीजीजीआई जयपुर और उदयपुर की कार्रवाई जारी

- शुक्रवार को कंपनी के कर्मचारी और अधिकारियों से पूछताछ की गई
- जांच में पचास करोड़ रुपए से अधिक की टैक्स चोरी सामने आई है

भीलवाड़ा, (निसं)। डीजीजीआई जयपुर और उदयपुर की कार्रवाई रत्नाकर ग्रुप पर दूसरे दिन भी जारी रही। शुक्रवार को कंपनी के कर्मचारी और अधिकारियों से पूछताछ की गई। अब तक की पूछताछ में रत्नाकर इस्पात इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के डायरेक्टर शंकरलाल चौधरी के घर, कॉर्पोरेट ऑफिस और दो फैक्ट्रियों पर दस्तावेजों और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की जांच में पचास करोड़ रुपए से अधिक की टैक्स चोरी सामने आई है। हालांकि विभागीय टीमों ने इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं की है।

सूत्रों के हवाले से यह जानकारी भी सामने आई है कि दूसरे दिन की जांच में 30 से ज्यादा अधिकारी ग्रुप से जुड़े दो दर्जन से ज्यादा लोगों से पूछताछ कर रहे हैं। शंकरलाल के साथ ही अन्य डायरेक्टर प्रेम देवी जाट, गीता देवी जाट, राहुल चौधरी की भूमिका पर भी डीजीजीआई गहनता से जांच कर रही है। डीजीजीआई की जांच में सामने आया कि प्रदेश स्तर पर 7 फर्में स्क्रेप के लाखों टन की आवाजाही करती हैं। इस आवाजाही को फर्जी चालान, बिल्टी और ई-वे बिल बनाकर अंजाम दिया जाता था। भीलवाड़ा की अन्य फर्में भी इस काम में जुड़ी हुई थीं। पिछले दिनों डीजीजीआई ने 706 करोड़ रुपए की कर चोरी का खुलासा किया था।

महावीर ट्रेडिंग कंपनी द्वारा टैक्स चोरी का यह सिंडिकेट चलाया जा रहा था। जिसमें सात लोगों की गिरफ्तारी भी हुई थी। इन्हीं से पूछताछ और दस्तावेज की गहनता से जांच के बाद रत्नाकर ग्रुप और उसके डायरेक्टर शंकरलाल चौधरी का नाम सामने आया है। इसके बाद डीजीजीआई ने इस कार्रवाई को अंजाम दिया है।

कार्यालय नगर पालिका पोकरण जिला-जैसलमेर (राज0)

टेलि न./ न. -(02994) 222238 ई-मेल -mb.pokaran@yahoo.com

क्रमांक / न.पा.पो. / स्टोर / 2025-26 / 2779 दिनांक 19.08.2025

-: निविदा सूचना पत्र :-

नगरपालिका मण्डल, पोकरण जिला जैसलमेर द्वारा नगर पालिका विद्युत शाखा में शहर के विभिन्न वार्डो में लगे हुवे पोल पर रोड़ लाईट हेतु फेस वायर लगाने हेतु रेट कान्ट्रेक्ट हेतु निम्नाकिंत नगरपालिका फण्ड / 15 वें वित्त आयोग / पंचम वित्त आयोग / स्वच्छ भारत मद से करवाने हेतु उपर्युक्त श्रेणी में पंजीकृत एवं मान्यता प्राप्त संवेदकों से निर्धारित ऑनलाईन प्रपत्रो में निविदायें आमंत्रित की जाती है। जिसमें इच्छुक संवेदक अपने कार्यो हेतु पालिका द्वारा निविदाऐं अंकित निम्नानुसार तिथियों को विक्रय की जायेगी एवं निर्धारित तिथी को उपस्थित निविदा दाताओं के समक्ष खोली जावेगी। निविदा कार्यो से सबंधित विवरण विभागीय वेब साईट www.sppp.raj.nic.in पर देखी जा सकती है।

क्र. सं.	कार्य का नाम NIB- DLB2526A4863	अनु. लागत (लाखों में)	धरोहर राशि अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका पोकरण	एम.डी.आर. आई.एस.एल. देय जयपुर	निविदा शुल्क अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका पोकरण	निविदा बेचने की प्रारम्भ तिथी ऑनलाईन	निविदा बेचने की अंतिम तिथी ऑनलाईन	डी.डी प्राप्त करने तिथी एवं समय	निविदा ऑनलाईन खोलने की तिथी एवं समय
1	विभिन्न वार्डो में लगे हुवे पोल पर रोड़ लाईट हेतु फेस वायर लगाने हेतु रेट कान्ट्रेक्ट UBN – DLB2526WSLB15039	23.89	47780	500	1000	21.08.2025	09.09.2025	10.09.2025	11.09.2025

अध्यक्ष नगरपालिका पोकरण | अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका पोकरण

राज.संवाद / सी / 25 / 8640

कार्यालय अधिशाषी अभियंता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, विद्युत खंड मेडीकल कॉलेज (पीडब्ल्यूडी केम्पस जैकब रोड) जयपुर

क्रमांक : दिनांक :

निविदा सूचना संख्या : 26/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से विद्युत कार्यों हेतु उपयुक्त श्रेणी में सा.नि.वि., राजस्थान, जयपुर में पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में कुल 2 पैकेज/कार्यों, जिनकी कुल लागत राशि रुपये 217.16 लाख है, के लिए ई-टेन्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाइन निविदायें आमंत्रित की जाती है।

निविदा फार्म डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख एवं समय	14.08.2025 सुबह 9.30 बजे से 26.08.2025 सायं 6.00 बजे तक

निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in/tender.asp पर एवं निविदा दस्तावेज का विवरण वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in एवं sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाइन सम्पादित की जावेगी।

UBN :- PWD2526A2610, PWD2526WSOB09670, PWD2526WSOB09671

अधिशाषी अभियंता सा.नि.वि. विद्युत खंड मेडीकल, कॉलेज, जयपुर

DIPR/C/11940/2025

Office of the Medical Superintendent

RUHS Hospital of Medical Sciences, Jaipur

Sector-11, Kumbha Marg, Pratap Nagar, Tonk Road, Jaipur -302033(Raj.)

No. :- F. ( ) RUHS HMS/Store/2025-26/8277 Date :- 21/08/2025

Notice Inviting e-Bids

Single Stage Two envelope Online bids (e-bids) are invited up to 02.00 pm of 17/09/2025 for Supply and Installation of Following Equipment/Items at Dept. of Obstetrics & Gynaecology, RUHS Hospital of Medical Sciences, Jaipur :

Sr. No.	Name of Equipment	Req. Qty.	Total Est. Cost in Rs.
1.	4K Operating Laparoscope Set with Uterine Manipulator & Other Laparoscopic Instruments	01	95,00,000.00
2.	Complete Hysteroscopy Set with Instruments	01	15,00,000.00
3.	High Definition Digital Video Colposcope with Image Management System	01	4,00,000.00
4.	Cryo Cautery Apparatus	01	1,00,000.00
5.	Vacuum Extractor with Suction Machine	02	1,00,000.00

Details may be seen in the Bidding Documents at the Website **sppp.raj.nic.in, or eproc.rajasthan.gov.in.**

UBN : CMS2526GLOB00081-82, CMS2526GSOB00083-85

Medical Superintendent, RUHS Hospital of Medical Sciences, Jaipur

Raj.Samwad/C/25/8613

कर्नल सोनाराम चौधरी का मोहनगढ़ में अंतिम संस्कार किया

जैसलमेर, (नि.सं.)। बाड़मेर-जैसलमेर के पूर्व सांसद और जाट समाज के नेता कर्नल सोनाराम चौधरी का पैतृक गांव मोहनगढ़ क्षेत्र में अंतिम संस्कार किया गया। कर्नल सोनाराम चौधरी चार बार सांसद और एक बार बायतु विधायक रह चुके हैं। कर्नल के परिवार में उनकी पत्नी विमला चौधरी और एक पुत्र डॉ. रमन चौधरी है। उनका दिल्ली में बुधवार को निधन हो गया था।

कर्नल सोनाराम चौधरी बुधवार को दिल्ली के अपोलो अस्पताल के पास किसी मिटिंग में शामिल होने के लिए गए थे। इस दौरान उनके सीने में दर्द होने पर खुद गाड़ी में बैठकर अपोलो अस्पताल पहुंचे और वहां पर डॉक्टरों ने उन्हें भर्ती कर ऑपरेशन किया। इसके बाद उन्होंने बेटे डॉ. रमन चौधरी से बात की। सांसद उम्मेदाराम बेनीवाल भी अस्पताल पहुंचे। इसके बाद कर्नल ने सोशल मीडिया पर खुद के स्वस्थ होने की पोस्ट भी डाली थी, लेकिन रात को करीब 11:15 बजे के आसपास उनका निधन हो गया।

कर्नल मूलत: जैसलमेर जिले के मोहनगढ़ के रहने वाले हैं। उनका शव एयरबेस उत्तरलाई हवाई मार्ग से लाया गया। इसके बाद बाड़मेर में उनके आवास पर एक घंटे तक अंतिम दर्शन के लिए रखा गया। यहां से उनके पैतृक गांव ले गए।

नोखा थाना एसएचओ को आईजी ने किया निलंबित

जमीन पर कब्जा करने के मामले में मिलीभगत और संदिग्ध भूमिका को लेकर कार्यवाही की

- नौ अगस्त को परिवादी ने नोखा थाने में मुकदमा दर्ज कराया था

बीकानेर, (निसं)। आईजी हेमंत शर्मा ने जमीन पर कब्जा करने के एक मामले में मिलीभगत और संदिग्ध भूमिका को देखते हुए नोखा पुलिस थाने के एसएचओ अमित स्वामी को निलंबित कर दिया है। सीओ सदर आईपीएस विशाल जांगिड़ पूरे प्रकरण की जांच करेंगे। इंस्पेक्टर अरविन्द भारद्वाज को नोखा पुलिस थाने में एसएचओ लगाया गया है।

जानकारी के अनुसार नोखा में सुजानगढ़ रोड पर पशु अस्पताल के पीछे जमीन पर कब्जा करने का मामला नोखा पुलिस थाने में हुआ था। परिवादी ओमप्रकाश बिश्नोई की ओर से दर्ज कराए इस मामले में पीड़ित पक्ष ने आईजी हेमंत शर्मा से मिलकर आरोप लगाया गया, नोखा थाना एसएचओ अमित स्वामी का भूमाफियाओं को संरक्षण है। आईजी ने मामले को गंभीरता से लिया और सीओ सदर आईपीएस विशाल जांगिड़ को जांच सौंपी। जांगिड़ नोखा पहुंचे और पूरे मामले की छानबीन की और आईजी को प्रारंभिक रिपोर्ट सौंपी। आईजी शर्मा ने बताया कि प्रारंभिक जांच एसएचओ अमित स्वामी की संदिग्ध भूमिका और मिलीभगत सामने आई, जिस पर उसे तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। उसे पुलिसलाइन भेजा गया है। पूरे प्रकरण की जांच सीओ सदर जांगिड़ को सौंपी गई है।

गौरतलब है कि नौ अगस्त को परिवादी ओमप्रकाश ने नोखा थाने में मुकदमा दर्ज कराया था कि वह सुजानगढ़ रोड पर पशु अस्पताल के पीछे अपने परिवार के साथ भुआ के बेटे कृष्णकुमार के घर 18-19 साल से रहता है। सुबह 4.40 बजे चार कैंपर और एक पिकअप गाड़ी में सवार जगदीश गोदारा, रामेश्वर लाल खीचड़, राजेन्द्र, दलीप, सुरेश, प्रदीप मंडा व 15-20 लोग जबरन दीवार फांदकर घर में घुसे और हमला कर दिया। बंधक बना लिया और नकदी-जेवरात लूट लिए। आरोप है कि पुलिस को सूचना देने के बाद भी जानबूझकर देरी से पहुंची और कोई कार्यवाही नहीं की।

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियंता चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

राजकीय जनाना चिकित्सालय परिसर, मोरी चार बाग भरतपुर 321 001 (राज.)

eemhbharatpur@gmail.com, ee-mh-bharatpur@gov.in, Mob. 9602097030

क्रमाक-M&H/2025-26/1187 दिनांक 12.08.2025

निविदा सूचना संख्याः 15/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अन्तर्गत विभिन्न कार्य जिला भरतपुर में रू. 118.80 लाख के निर्माण कार्य हेतु राजस्थान सरकार के समकक्ष उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में सिविल कार्यों हेतु पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट निविदायें आमंत्रित की जाती हैं। निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेब साईट www.dipronline.org, http://eproc.rajasthan.gov.in व विभागीय वेब साईट http://rajswasthya.nic.in पर देखा जा सकता हैं।

S.No.	Name of work	Amount	UBIN No.
1	Internal electrification work of CHC Nadanpur distt dholpur	55.00 lac	MH2526 WSOB03415
2	Internal electrification work PHC Khedi distt karauli	11.75 lac	MH2526 WSOB03416
3	Internal electrification work PHC Nindar distt karauli	11.75 lac	MH2526 WSOB03417
4	Intermal electrification work PHC Dehra distt Deeg	11.75 lac	MH2526 WSOB03419
5	Internal electrification work PHC Bhankari distt karauli.	11.75 lac	MH2526 WSOB03420
6	Internal electrification work BPHU Jheel ka bada distt Bharatpur	16.80 lac	MH2526 WSOB03421

(एल. के. अग्रवाल) अधिशाषी अभियंता चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, भरतपुर

DIPR/C/11953/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग, ड्रिलिंग खण्ड, जोधपुर

क्रमांकः अ.अ./ ड्रिलिंग / क्रय- / 2025-26/756-782 दिनांक-12.08.2025

नीलामी सूचना 01/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग, ड्रिलिंग खण्ड जोधपुर के अधीन खण्डीय भण्डार लियों का गुड़ा, पुलिस अफसर मेस के सामने, बड़ी रोड़, उदयपुर मे नकारा/अनुपयोगी हुए विभागीय सामान एवं वाहनों की नीलामी निम्न सारणी विवरण अनुसार नीलामी संख्या 01/2025-26 दिनांक 16.09.2025 एवं 17.09.2025 को प्रातः 11 बजे से सायंकाल 5 बजे तक की उक्त निलामी सूचना का समस्त विवरण इस कार्यालय मे किसी भी कार्य दिवस में एवं विभागीय डी.आई.पी.आर. वेबसाइट http://dipr.rajasthan.gov.in एवं sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

NIB No. PHE2526A2681 UBN No. PHE2526WSOB05319

लोट सं.	नीलाम किये जाने वाले सामान/वाहनों का विवरण	मात्रा	सामान का पुस्तक/ प्रत्यक्षीकरण मूल्य	धरोहर राशि रू.	नीलामी दिनांक
(A)			205.42 लाख	50000/-	16.09.2025
1	Bit Scrap (All Size)	4798 Kg.			
2	a. Hammer Scrap	2943 Kg.			
	b. Hammer Spraes Scrap Parts	352.300 Kg.			
3	Drill Rod Scrap	13485 Kg.			
4	Empty Drum Scrap				
	a. Old Scrap	235 No.			
	b. New	200 No.			
5	Bearing Scrap	60 Kg.			
	b. Filter Scrap	493 Kg.			
	c. PVC, Rubber, Hyd. Hose & Tent Scrap	550 Kg.			
6	c. Aluminium Scrap	117 Kg.			
	d. Brass, Radiator, Copper wire Sheathed & Rotter Scrap	480.700 Kg.			
7	M.S. Scrap	3730 Kg.			
8	Burn Oil, With Drum	9703 Ltr. With 48 Drum			
9	a. Battery Scrap All Size	101 No.			
	b. Tyre, Tube, Flap Scrap All Size	259 Kg.			
(B)			35.11 लाख		17.09.2025
1	RIG-173				
	a. Rig (Reg. No. RJ-12-G-0023)	1			
	b. ELGI Compressor 650CFM/200PSI Mounted on Truck (Reg. No. RJ-01-G-7492)	1			
	c. Support Truck (RRN-2857)	1			
2	RIG-179				
	a. Rig (Reg. No. RJ-03-G-1504)	1			
	b . Support Truck (RJ-27-1153)	1			
3	RIG-182				
	a. Rig (Reg. No. RJ-27-GB-6516)	1			
	b. Carrier (RJ-27-G-0260)	1			
	c. Support Truck (RJ-27-G-0259)	1			
4	RIG-186				
	a. Rig (Reg. No. RJ-27-G-0209)	1			
	b. LG compressor 650CFM/200PSI	1			
	c. Support Truck (RJ-27-G-0208)	1			
5	RIG-189				
	a. Rig (Reg. No. RJ-27-G-0208)	1			
	b. Support Truck (RJ-27-G-0354)	1			
6	Raj III (A)				
	a. TATA Support Truck of Hydraofracture Unit RAJ III, RSJ-9094	1			
7	Raj-IV				
	a. Hydrofracture Unit - RAJ IV, RJ-27-G-5933	1			
	b. TATA Support Truck of Hydrofracture Unit RAJ IV, RJ-27-6062	1			
8	RIG LMP-220 a. Hydrulic Aqua drilling Rig LMP-220 with Carrier No. RJ-27-E-2632 Truck Precision Model DTH 350/Spl) Mounted on 4 x 4 drive TATA 1210 SA/42 Truck Chassis and with ELGI make screw Compressor having Capacity of 450CPM AT 150 PSI Chassis No. 344173281278 Engine Ype-692DOI	1			
9	RIG Raj-III (B) a. Hydrofracturing Unit Raj III complete with Deutzengine, Woma Pump D.G. Set. Hydraulic pump with carrier	1			

नोट :- धरोहर राशि केवल डिमाण्ड ड्राफ्ट (डी.डी.) के माध्यम से ही जमा कराने होंगें। डिमाण्ड ड्राफ्ट अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग, ड्रिलिंग खण्ड, जोधपुर के पक्ष में बनाया जावे, जो देय जोधपुर (Payable at Jodhpur) हो। बोलीदाता की नीलामी दिवस को प्रातः 11.00 बजे तक ही धरोहर राशि जमा की जायेगी।

DIPR/C/11811/2025 अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग ड्रिलिंग खण्ड, जोधपुर

सफाई व्यवस्था का निरीक्षण किया

जयपुर। स्वच्छता सर्वेक्षण 2025 को लेकर हेरिटेज निगम अधिकारी अब सख्त एक्शन मोड में आ गए है। आयुक्त डॉ निधि पटेल के निर्देशों के बाद सभी जोन उपायुक्त जोन क्षेत्र के वार्डो में जाकर सफाई व्यवस्था का निरीक्षण कर रहे है। इस दौरान जोन उपायुक्त घर घर जाकर फीडबैक भी ले रहे है, साथ ही आमजन को कचरा हूपर में ही डालने के लिए जागरूक कर रहे है। इसके अलावा शाम को बाजारों में जाकर दुकानों के बाहर डस्टबिन चेक किया जा रहा है। माइक से अनाउंस कर आगाह भी किया जा रहा है कि अगर आपकी दुकान के बाहर डस्टबिन नहीं मिला तो चलानी कार्रवाई की जाएगी। तीन बार के बाद दुकान सीज भी की जाएगी।

किशनपोल जोन उपायुक्त दिलीप भंभानी ने बाजारों में जाकर माइक से दुकानों पर दो डस्टबिन रखने के लिए आगाह किया। इस दौरान उन्होंने रामगंज बाजार में लाउडस्पीकर से घोषणा कर सभी व्यापारियों से अपील की, वे अपनी-अपनी दुकानों पर हरा एवं नीला-दोनों डस्टबिन अनिवार्य रूप से रखें।

पारदी गिरोह के छह बदमाश गिरफ्तार, जेवरात व नगदी बरामद

अजमेर जिले की बांदरसिंदरी थाना पुलिस की टीम ने मध्य प्रदेश के कुख्यात पारदी गिरोह के छह बदमाशों को गिरफ्तार किया।

- आरापियों के खिलाफ मध्य प्रदेश के धरनावदा और राजस्थान के बारां व सीकर जिले में पूर्व में भी कई अपराधिक प्रकरण दर्ज हैं
- आरोपियों से आभूषण और पुराने नोट मिले

जयपुर। पुलिस मुख्यालय की स्टेट क्राइम ब्रांच की टीम की सूचना पर अजमेर जिले की बांदरसिंदरी थाना पुलिस की टीम ने मध्य प्रदेश के कुख्यात पारदी गिरोह के छह बदमाशों को गिरफ्तार किया है और उनके पास से चोरी में प्रयुक्त औजार और कुछ दिन पहले सवाई माधोपुर के माउंट टाउन थाना क्षेत्र में एक सूने मकान से चुराये सोने चांदी के जेवरात और नगदी बरामद की है।

उप महानिरीक्षक पुलिस अपराध दीपक भार्गव ने बताया कि सीआईडी क्राइम ब्रांच टीम को सूचना मिली कि मध्य प्रदेश की पारदी गिरोह अजमेर क्षेत्र में चोरी और डकैती करने के लिए सक्रिय है। सूचना की पुष्टि के बाद थाना बांदरसिंदरी अजमेर को सचेत किया गया। इस सूचना के आधार पर पुलिस टीम गुलाबपुरा की हाणी ग्राम बांदरसिंदरी पहुंची। जहां एक खाली प्लॉट के अंदर कमरे में छह लोग चोरी की योजना बना रहे थे, जिसमें एक व्यक्ति घर के अंदर घुसकर सामान चुराने और बाकी लोग मोटरसाइकिल पर तैयार रहने की बात कर रहे थे।

इस पर पुलिस ने तुरंत घेराबंदी कर छह बदमाशों शिवनारायण पारदी (23), जयनारायण पारदी (21), सुरजन पारदी (30), गिरिराज पारदी (19), विजय (19) और जीतू पारदी (35) निवासी धरनावदा जिला गुना मध्य प्रदेश को गिरफ्तार किया।

पुलिस ने इनसे चोरी और सेंधमारी में इस्तेमाल होने वाले औजार जैसे कि कटर, पेचकस, टॉर्च, लोहे की टॉमी, रिच पाने और चार मोटरसाइकिल बरामद की गईं। इसके अलावा गिरफ्तार किए गए आरोपियों में से कुछ के पास से चोरी के आभूषण और पुराने नोट भी मिले। उन्होंने बताया कि ये सामान तीन दिन पहले सवाई माधोपुर में एक घर से चोरी किए गए थे, जिसकी रिपोर्ट थाना मानटाउन में दर्ज है।

गिरफ्तार आरोपी गिरिराज, सुरजन, विजय और जीतू के विरुद्ध मध्य प्रदेश के थाना धरनावदा और राजस्थान के बारां एवं सीकर जिले में पूर्व में भी कई अपराधिक प्रकरण दर्ज है। सुरजन थाना शिवपुरी में दर्ज डकैती के एक मामले में वांछित चल रहा है।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ शर्मा और राजेश मलिक के सुपरविजन एवं इंस्पेक्टर राम सिंह नाथावत के नेतृत्व में की गई इस कार्रवाई में हेड कांस्टेबल महेंद्र कुमार की विशेष भूमिका रही, वही टीम में शामिल उप निरीक्षक प्रताप सिंह, हेड कांस्टेबल हेमंत शर्मा, कांस्टेबल मोहन लाल और कांस्टेबल ड्राइवर दिनेश चंद्र के साथ डीएसटी अजमेर प्रभारी एएसआई शंकर सिंह और एसएचओ बांदर सिंदरी अमर चन्द मय टीम का सराहनीय योगदान रहा।

सार-समाचार

दो बदमाश गिरफ्तार, ऑटो रिक्शा जब्त

जयपुर। करधनी थाना पुलिस ने लाखों रुपयों के गहने चोरी करने के आरोप में दो शातिर नकबजनों को हथियार सहित दबोचा है। पुलिस दोनो गिरफ्तार आरोपियों से अन्य वारदात के बारे में पूछताछ करने में जुटी है। पुलिस ने दोनो बदमाशों के कब्जे से दो लोडेड पिस्टल, दस कारतूस सहित चोरी की वारदात के काम में लिए जाने वाले ऑटो रिक्शा को जब्त कर लिया है। पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) हनुमान प्रसाद ने बताया कि करधनी थाना पुलिस ने लाखों रुपयों के गहने चोरी करने वाले राजेश श्रीवास्तव उर्फ गुड्डू (28) आरा बिहार, मुफ्तसील निवासी हाल करणी पथ कॉलोनी हरमाड़ा और इलाहाबाद उत्तर प्रदेश हाल खौराबीसल निवासी रणजीत सिंह उर्फ विजय (28) को गिरफ्तार किया है। जिन्होंने 13 अगस्त के सूने मकान की रैकी कर वहां से 22 लाख रुपए नकद और सोने-चांदी के आभुषण चोरी किए थे। परिवादी की शिकायत पर मामला दर्ज कर पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज और ऑटो रिक्शा के नंबर के आधार पर आरोपियों को चिन्हित कर गिरफ्तार कर लिया। पुलिस दबिश के दौरान दोनो आरोपियों के कब्जे से दो लोडेड पिस्टल और 10 कारतूस बरामद हुए। वहीं पुलिस ने पूछताछ के बाद आरोपियों से वारदात के काम में लिए जाने वाले ऑटो रिक्शा को भी जब्त कर लिया है

'डिफेंस एयरोस्पेस पॉलिसी' पर हुई चर्चा

जयपुर । भारत सरकार द्वारा रक्षा क्षेत्र से संबंधित उत्पादों के विनिर्माण में स्वदेशीकरण को प्रोत्साहित करने हेतु एक बैठक प्रमुख शासन सचिव, उद्योग एवं वाणिज्य श्री आलोक गुप्ता की अध्यक्षता में उद्योग भवन में आयोजित की गई। बैठक में मुख्य संबोधन श्री सुशील सतपुते, उपमहानिदेशक, रक्षा उत्पादन विभाग, भारत सरकार का था तथा उद्योग विभाग के शीर्षस्थ अधिकारी आयुक्त उद्योग श्री रोहित गुप्ता, प्रबंध निदेशक, रीको, श्रीमती शिवांगी स्वर्णकार, निवेश संवर्द्धन ब्यूरो के आयुक्त श्री सुरेश ओला के साथ अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। राजस्थान में रक्षा क्षेत्र में विनिर्माणरत लगभग 20 औद्योगिक इकाईयों के प्रतिनिधियों द्वारा भाग लिया गया। श्री सुशील सतपुते द्वारा अवगत कराया गया कि वर्तमान में भारत के रक्षा क्षेत्र में कार्यरत सार्वजनिक क्षेत्र की इकाईयों तथा निजी क्षेत्र की इकाइयों द्वारा लगभग 1.50 लाख करोड़ रूपये का उत्पादन किया जा रहा है, जिसमें से मित्र देशों को लगभग 23 हजार 600 करोड़ रूपये का निर्यात किया जा रहा है। उक्त समस्त उत्पादन में निजी क्षेत्र की औद्योगिक इकाईयों का हिस्सा लगभग 22.5 प्रतिशत है। गत 10 वर्ष में निजी क्षेत्र में रक्षा उत्पादन के लाइसेंस 246 से बढ़कर 742 हो गये है तथा केन्द्र सरकार एमएसएमई क्षेत्र की इकाइयों से स्वदेशीकरण की दिशा में पूर्ण सहयोग करने के लिए तैयार है। डीआरडीओ द्वारा विकसित की गई रक्षा तकनीक भी निजी क्षेत्र की कम्पनियों को हस्तांतरित की जा सकती है।

नवीनतम ट्रेंड्स और तकनीक के साथ जयपुर में सजा कैटरर्स एक्सपो

जयपुर। जयपुर कैटरिंग डीलर्स समिति (रजि.) की ओर से आयोजित आठवां कैटरर्स एक्सपो 2025 शुक्रवार को एंटरटेनमेंट पैराडाइस (ईवी) ईस्ट लॉन जवाहर सर्किल जयपुर में भव्य तरीके से शुरू हुआ। यह आयोजन राजस्थान और जयपुर के कैटरिंग उद्योग के लिए अब तक का सबसे बड़ा और ऐतिहासिक मंच है। इस अवसर पर कई दिग्गज नेता और गणमान्य अतिथि मौजूद रहे। मुख्य अतिथियों में कैबिनेट मंत्री झाबर सिंह खर्रा, कैबिनेट मंत्री जोगाराम पटेल, हवामहल विधायक स्वामी बालमुकुंद आचार्य, नगर निगम ग्रेटर महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर, कांग्रेस विधायक रफीक खान, विधायक अमीन कागज़ी , भाजपा नेता रवि नय्यर, पूर्व जयपुर शहर सांसद रामचरण बोहरा शामिल थे। साथ ही जयपुर के कई प्रसिद्ध सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर भी कार्यक्रम में मौजूद रहे। समिति अध्यक्ष मनोज सेवानी ने बताया कि यह एक्सपो कैटरिंग और होटल मैनेजमेंट उद्योग में नवीनतम ट्रेंड्स और आधुनिक तकनीकों को प्रदर्शित करने का अनूठा अवसर है। इस एक्सपो में देश-विदेश की बड़ी कंपनियां हिस्सा ले रही हैं और कैटरिंग उपकरण, मशीनरी, किचन इक्विपमेंट और व्यावसायिक जरूरत की छोटी-बड़ी वस्तुएं प्रदर्शित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि यह आयोजन उद्योग से जुड़े लोगों को एक ही मंच पर लाकर नए व्यापारिक अवसर और नेटवर्किंग के अनुकूल वातावरण प्रदान करेगा। इसके माध्यम से राजस्थान के कैटरिंग उद्योग की श्रेष्ठता, पेशेवर क्षमता और नवाचार को पूरे देश के सामने लाया जा रहा है। समिति ने यह भी बताया कि एक्सपो में आने वाले सभी प्रतिभागियों और विजिटर्स के लिए सुरक्षा और सुविधा की पूरी व्यवस्था की गई है। यह आयोजन न केवल व्यावसायिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि जयपुर को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कैटरिंग उद्योग का प्रमुख केंद्र बनाने में भी सहायक सिद्ध होगा।

केबिनेट मंत्री ने सुने अभाव-अभियोग

जयपुर। पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग के केबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत ने शुक्रवार को अपने सरकारी आवास पर ठाामीण क्षेत्रों से आए लोगों के अभाव अभियोग सुने। मंत्री श्री कुमावत शुक्रवार को हरिद्वार से अपने निवास पहुंचे। केबिनेट मंत्री के आने की सूचना के साथ ही दूरदराज और ठाामीण क्षेत्रों से लोग अपने अभाव अभियोग लेकर उनके निवास स्थान पहुंचे। इस दौरान ठाामीण क्षेत्रों से आए लोगों ने अपने निजी और ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं को मंत्री के सामने रखा। जिस पर मंत्री श्री कुमावत ने ग्रामीणों की समस्याओं को सुन संबंधित विभागीय अधिकारियों को फोन पर सूचित कर समस्याओं का जल्द से जल्द निस्तारण करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं का जल्द से जल्द निस्तारण करें ताकि ठाामीणों को मूलभूत सुविधाओं के लिए भटकना न पड़े। इसके साथ ही उन्होंने ठाामीणों से अधिक से अधिक संख्या में सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने की अपील की। जनसुनवाई के दौरान सड़क, पानी, बिजली सहित तबादलों को लेकर लोगों ने अपनी पीड़ा मंत्री को बताई। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पेयजल समस्या का निदान सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसके लिए करोड़ों रुपए की परियोजनाओं को सरकार ने मंजूर किया है। इस अवसर पर जन सुनवाई के दौरान लोगों की भीड़ लगी रही।

राज्य में 500 नये एफपीओ बनाये जायेंगे

जयपुर। शासन सचिव कृषि एवं उद्यानिकी श्री राजन विशाल की अध्यक्षता में शुक्रवार को पंत कृषि भवन के सभा कक्ष में राज्य के एफपीओ कार्यान्वयन एजेन्सियों नाबार्ड, एनसीडीसी, नैफेड, एनडीडीबी, एफडीआरवीसी, एसएफएसी एवं कृषि, पशुपालन, सहकारिता एवं अन्य संबंधित विभागों के साथ समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। श्री राजन विशाल ने बताया कि राज्य में चरणबद्ध रूप से 500 नये कृषक उत्पादक संगठन बनाये जा रहे हैं तथा प्रदेश के किसानों को आर्थिक रूप से समृद्ध एवं खुशहान बनाने के लिए नई एफपीओ नीति लाई जा रही है। एफपीओं में एक जिला एक उत्पादन और पंच गौरव को प्राथमिकता से शामिल किया जायेगा। प्रदेश में पहली बार कृषक उत्पादक संगठनों को मजबूती प्रदान करने, किसानों को कंपनी पेटेंट, र्स्टिफिकेशन, लाइसेंस और मार्केटिंग लिकेज आदि की सहायता के लिए यह पॉलिशी लाई जा रही है। इसमें कृषक हितों के कई प्रावधान रखे जा रहे हैं। एफपीओ को सशक्त बनाने के लिए राज्य सरकार कटिबद्धता से कार्य कर रही है। शासन सचिव ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा बजट घोषणा में "नॉलेज एन्हांसमेंट प्रोठााम के अन्तर्गत प्रदेश में एफपीओ के 100 किसानों को विदेश भ्रमण और प्रशिक्षण की स्वीकृति प्रदान की है। वर्तमान सरकार की अभिनव पहल द्वारा राज्य सरकार कृषक उत्पादक संगठन (एफपीओ) के किसानों को उनकी क्षमता संवर्धन के दृष्टिगत कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में आधुनिक तकनीकों के उपयोग के लिए निरंतर प्रोत्साहित कर रही है। शासन सचिव ने बताया कि एफपीओ के किसान नीदरलैंड, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैड और ब्राजील का भ्रमण करेंगे।

प्री प्राइमरी कक्षाओं की फीस पुनर्भरण को लेकर सरकार बताए अपना रुख

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत प्री प्राइमरी कक्षाओं की फीस के पुनर्भरण को लेकर राज्य सरकार को चार सप्ताह में अपना रुख स्पष्ट करने को कहा है। जस्टिस अवनीश झिंगन और जस्टिस बीएस संधू की खंडपीठ ने यह आदेश राज्य सरकार और निजी स्कूलों की अपीलों पर संयुक्त रूप से सुनवाई करते हुए दिए।

अदालत ने कहा कि राज्य सरकार प्री प्राइमरी कक्षाओं में आरटीई के तहत प्रवेश देने की बात करती है, लेकिन निजी स्कूलों को उसकी फीस का पुनर्भरण नहीं कर रही है। ऐसे में निजी स्कूल इन कक्षाओं में फ्री में कैसे पढ़ा पाएंगे।

मामले से जुड़े अधिवक्ता प्रतीक कासलीवाल व डॉ. अभिनव शर्मा ने बताया कि अपीलों में एकलपीठ के 18 जुलाई 2023 के उस आदेश को चुनौती दी है, जिसमें निजी स्कूलों को शैक्षिणक सत्र 2023-24 में बच्चों को प्री प्राइमरी के एंट्री लेवल यानि नर्सरी व पहली कक्षा में एडमिशन देने के लिए कहा था।

जबकि राज्य सरकार ने भी अपील में एकलपीठ के राज्य सरकार के उस प्रावधान को रद्द करने के आदेश को चुनौती दी है, जिसमें आरटीई के तहत प्री प्राइमरी क्लासेज में होने वाले बच्चों के एडमिशन की फीस का पुनर्भुगतान नहीं करने वाले प्रावधान को एकलपीठ ने निरस्त कर दिया था। इसके अलावा राज्य सरकार ने एकल पीठ की ओर से चार लेवल में एडमिशन की बजाय नर्सरी व पहली कक्षा में एडमिशन देने के निर्देश को भी चुनौती दी थी।

राजीविका एवं ईईएसअल के बीच हुआ एमओयू

राजीविका एवं ईईएसअल के बीच नवीकरणीय ऊर्जा और आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए।

जयपुर। राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (राजीविका) ने आज शुक्रवार को जयपुर स्थित आरजीवीपी मुख्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लिमिटेड (ईईएसअल) के साथ एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए।

इस साझेदारी का उद्देश्य नवीकरणीय ऊर्जा समाधानों और ऊर्जा-कुशल तकनीकों को अपनाने में बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्रों में महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए आजीविका के अवसरों को बढ़ाना है। इस सहयोग के तहत प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण की पहल की जाएगी, साथ ही "सोलर दीदी" जैसी महिला कार्यकर्ताओं की तैनाती भी की जाएगी। ये प्रयास स्थायी आय सृजन में सहायक होंगे और स्वच्छ व कुशल ऊर्जा उपयोग के बारे में सामुदायिक जागरूकता भी पैदा करेंगे।इस अवसर पर राजीविका की स्टेट मिशन डायरेक्टर नेहा गिरि ने कहा, "यह साझेदारी ग्रामीण आजीविका को नवीकरणीय ऊर्जा से जोड़ने में एक मील का पत्थर है, जिससे महिलाओं का सशक्तिकरण होगा और साथ ही राज्य के सतत विकास लक्ष्यों में सहयोग मिलेगा। ईईएसअल के राजस्थान राज्य प्रमुख, अमन मेहरडा ने कहा, "ईईएसअल राजीविका के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध है ताकि जमीनी स्तर पर नवीन ऊर्जा समाधान उपलब्ध कराए जा सकें और ग्रामीण महिलाओं को स्वच्छ और कुशल ऊर्जा उपयोग के लिए अठादूत बनाया जा सके।

अलर्ट स्कैम से साइबर ठग कर रहे साइबर ठगी

जयपुर । राजस्थान पुलिस की साइबर क्राइम शाखा ने आमजन को साइबर अपराधों से बचाने के लिए एक नई एडवाइजरी जारी की है। इस एडवाइजरी में अलर्ट स्कैम और अन्य साइबर धोखाधडी के तरीकों के बारे में बताया गया है, जिनसे अपराधी लोगों को निशाना बना रहे हैं। पुलिस अधीक्षक साइबर क्राइम शांतनु कुमार सिंह ने बताया कि साइबर अपराधी नकली वेबसाइट्स, मैलवेयर, फिशिंग और धोखाधडी के जरिए लोगों को निशाना बना रहे हैं। ये हमले आमतौर पर स्मार्टफोन, लैपटॉप, बैंकिंग ऐप्स या सोशल मीडिया पर फर्जी अलर्ट भेजकर किए जाते हैं।फिशिंग और स्मिशिंग: अपराधी बैंकों, आधार, पैन या कूरियर सेवाओं के नाम पर फर्जी ईमेल या एसएमएस भेजते हैं। रैंसमवेयर: खतरनाक ऐप्स या डाउनलोड्स के जरिए आपके फोन या कंप्यूटर को लॉक कर पैसे की मांग की जाती है।

बालिकाओं को किया जागरूक

पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ ने महिला सुरक्षा कानूनों के प्रति जागरूक रहने की शपथ दिलायी।

जयपुर। जयपुर पुलिस ने महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित एवं प्रभावी करने के लिए शुरू किये गए विशेष साप्ताहिक अभियान सशक्त नारी, जिम्मेदारी हमारी के तहत महिला पुलिस अधिकारी शहर के विभिन्न इलाकों में जाकर महिलाओं को उनके कानूनों की जानकारी देकर उन्हें अपने अधिकारों के बारे में जागरूक किया।

जयपुर पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ ने शुक्रवार को महारानी कॉलेज में जाकर बालिकाओं को उनके अधिकारों एवं कानूनों बारे में बता कर जागरूक किया। उन्होंने कुछ बालिकाओं को सुरक्षा वॉरियर के रूप में भी चयन किया साथ ही उन्होंने महिला सुरक्षा कानूनों के प्रति जागरूक रहने की शपथ दिलायी। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित बालिकाओं को सेफ्टी वॉरियर बैज का वितरण किया

एवं राजकोप व नीड हेल्प एप की जानकारी व डाउनलोड करवाया। उन्होंने बालिकाओं से आ ान किया हर बालिका को सेल्फ डिफेंस आना चाहिए। कमिश्नर जोसफ ने बताया कि जयपुर पुलिस का महिला सुरक्षा एवं जागरूकता विशेष अभियान 26 अगस्त तक जयपुर शहर में चलाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि बालिकाओं एवं महिलाओं की सुरक्षा को सुनिश्चित करने, उन्हें अधिकारों व कानूनों के प्रति सजग रहने, महिला अपराधों में कमी लाने एवं युवाओं में महिला सुरक्षा एवं सम्मान की भावना जागृत करने के लिये व्यापक जन जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है।

साथ ही बताया है कि यदि उनके साथ कही भी कोई गलत होता है तो घबराने की जरूरत नहीं बल्कि उसका मुकाबला डट कर करना चाहिए जिसमें जयपुर पुलिस आपकी पूरी मदद के लिए तत्पर है।अभियान के तीसरे दिन "सशक्त नारी ज़िम्मेदारी हमारी" विशेष अभियान के तहत शहर के अलग-अलग इलाकों में महिला पुलिस अधिकारी एवं महिला पुलिस कार्मिक जाकर हजारों बालिकाओं एवं महिलाओं को एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में सैकड़ों अध्यापिकाओं, बालिकाओं व बच्चों को महिला सुरक्षा, कानूनों एवं अधिकारों की जानकारी देते हुए जागरूक से किया एवं सेल्प डिपेन्स का लाइव डेमो दिखाकर जागरूक किया।

कार से टक्कर मार कर ज्वेलर्स के अपहरण का प्रयास

जयपुर। रामनगरिया थाना इलाके में कार सवार बदमाशों ने दिन-दहाड़े एक ज्वेलर्स को कार से टक्कर मारी और उसके अपहरण का प्रयास किया। लेकिन घटना स्थल पर मारपीट होती की देख राहगीरों की भीड़ जमा हो गई। जिसके बाद कार सवार बदमाश मौके से फरार हो गए। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर अज्ञात कार सवार बदमाशों के खिलाफ अपहरण-मारपीट का मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरु कर दी है।

पुलिस ने बताया कि जगतपुरा निवासी लालचंद तेलीपाड़ा में ज्वेलर्स की दूकान चलाते है। दूकान से घर जाते वक्त रामनगरिया इलाके में सवार तीन -चार बदमाशों ने उनकी बाइक को टक्कर मारी। जिससे बाइक असंतुलित हो गई और वो नीचे गिर पड़ा। जिसके बाद कार सवार बदमाशों ने उनके साथ मारपीट करते हुए कार में जबरन बैठाने का प्रयास किया।

पर्यटन व कला व संस्कृति विभाग की समीक्षा बैठक

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि पर्यटन क्षेत्र में स्थानीय व विदेशी पर्यटकों की संख्या में निरंतर बढ़ोतरी से हमारा राजस्थान देश में अग्रणी राज्य बन रहा है। उन्होंने कहा कि पर्यटन क्षेत्र में आ रहे निरंतर बदलाव के अनुरूप प्रदेश में सैलानियों की संख्या में वृद्धि के लिए ऐतिहासिक, प्राकृतिक व धार्मिक स्थलों के विकास कार्यों की कार्ययोजना बनाएं। साथ ही, निरंतर समीक्षा करते हुए समयबद्ध रूप से इन कार्यों को पूरा किया जाए।

उन्होंने कहा कि पर्यटन स्थलों के विकास कार्यों में जनप्रतिनिधियों एवं स्थानीय लोगों के सुझावों को भी शामिल किया जाए। शर्मा शुक्रवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में पर्यटन व कला एवं संस्कृति विभाग की बजट एवं अन्य महत्वपूर्ण घोषणाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि राजकीय संठाहालयों के उन्नयन एवं संरक्षण, पैनोरमा निर्माण कार्य, बावड़ी जीर्णोद्धार सहित अन्य महत्वपूर्ण विकास कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर चरणबद्ध रूप से पूरा किया जाए। उन्होंने प्रदेश के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों के विकास के लिए बनाई जाने वाली डीपीआर में कार्य से संबंधित सभी जरूरी पहलुओं को शामिल करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। साथ ही, उन्होंने इन कार्यों की प्रगति के लिए हर तीन माह में निरंतर मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के धार्मिक पर्यटन स्थलों पर आधारभूत संरचना के विकास से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। उन्होंने पुष्कर में ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर एवं घाटों का विकास कार्ययोजना के आधार पर करने के निर्देश दिए। साथ ही, ठाामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए चिन्हित स्थानों पर विकास कार्यों की डीपीआर शीघ्र तैयार करने के लिए भी निर्देशित किया।

बंधन बैंक ने 10वीं वर्षगांठ पर लॉन्च किया लिगेसी अकाउंट

धनी ग्राहकों के लिए विशेष लाभ के साथ लिगेसी बचत खाता

जयपुर। भारत के सबसे तेजी से बढ़ते यूनिवर्सल बैंकों में से एक, बंधन बैंक ने अपने प्रीमियम उत्पाद, लिगेसी बचत खाता को लॉन्च करने की घोषणा की है। यह खाता उन धनी ठााहकों के लिए बनाया गया है जो एक बेहतर और विशेष बैंकिंग अनुभव चाहते हैं। यह लॉन्च बैंक के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर पर हुआ है, क्योंकि बैंक ने परिचालन और बैंकिंग उत्कृष्टता के 10 साल पूरे कर लिए हैं।

लिगेसी बचत खाते के साथ वर्ल्ड एलीट मास्टरकार्ड डेबिट कार्ड मिलता है, जो घरेलू (साथी के प्रवेश सहित) और अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के लाउंज, ताज एपिक्योर मेंबरशिप, मुफ्त मूवी और इवेंट टिकट, और चुनिंदा क्लबों में गोल्फ सेशन की सुविधा देता है। लिगेसी बचत खाता वाले ठााहकों को और भी कई विशेष सुविधाएँ मिलेंगी, जैसे कि समर्पित रिलेशनशिप मैनेजर, लॉकर किराए पर आजीवन छूट, और यात्रा, चिकित्सा, शिक्षा, विरासत और संपत्ति नियोजन जैसी जरूरतों के लिए विशेषज्ञ परामर्श सेवाएँ। यह उत्पाद जीवनशैली, यात्रा और वित्तीय लाभों की एक विस्तृत श्रृंखला भी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, ठााहक असीमित मुफ्त लेनदेन का लाभ उठा सकते हैं, जिसमें नकद जमा, आरटीजीएस, एनईएफटी और आईएमपीएस शामिल हैं। लिगेसी ठााहकों को बेहतर बीमा कवरेज भी दिया जाता है, जिसमें 1 करोड़ तक का हवाई दुर्घटना बीमा, 20 लाख तक का व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा, और 5 लाख तक का खरीद सुरक्षा शामिल है।इस अवसर पर बोलते हुए, बंधन बैंक के एमडी और सीईओ, श्री पार्था प्रतिम सेनगुप्ता ने कहा, जैसे ही बंधन बैंक 10 साल पूरे कर रहा है, यह वास्तव में गर्व और कृतज्ञता का क्षण है। लिगेसी बचत खाते के लॉन्च के साथ, हम समावेशी और सतत विकास के अपने उद्देश्य से जुड़े रहते हुए, नवीन समाधान और विश्व स्तरीय अनुभव प्रदान करने की एक नई प्रतिबद्धता के साथ अगले दशक में प्रवेश कर रहे हैं। हम अपनी आगे की यात्रा में अपने ठााहकों के अटूट विश्वास, अपने कर्मचारियों के समर्पण और हमारे सभी हितधारकों के समर्थन की आशा करते हैं। बंधन बैंक एक मजबूत अखिल भारतीय संस्थान के रूप में उभरा है, जो 30 जून, 2025 तक 1.55 लाख करोड़ की जमा राशि और 1.34 लाख करोड़ के अग्रिम के साथ 31 मिलियन से अधिक ग्राहकों को सेवा प्रदान कर रहा है।

छह अतिरिक्त निजी सचिव बने निजी सचिव

जयपुर। पुलिस महानिदेशक राजीव शर्मा के निर्देशानुसार राजस्थान पुलिस में पदोन्नित का सिलसिला जारी है। पुलिस मुख्यालय राजस्थान ने एक आदेश जारी कर छह अतिरिक्त निजी सचिवों को निजी सचिव के पद पर पदोन्नत किया है। यह पदोन्नित विभागीय पदोन्नित समिति (डीपीसी) की 22 अगस्त 2025 को हुई बैठक के बाद वरिष्ठता सह-योग्यता के आधार पर की गई है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक पुलिस भर्ती एवं पदोन्नित बोर्ड बिपिन कुमार पाण्डेय द्वारा जारी आदेश के अनुसार यह पदोन्नित वर्ष 2025-26 के रिक्त पदों के विरुद्ध की गई है और इसमें 1 वर्ष का कार्यानुभव शिथिल किया गया है। पदोन्नत हुए अधिकारियों को 1 अप्रैल 2025 से वेतन का काल्पनिक लाभ मिलेगा और पदभार संभालने की तारीख से नकद लाभ दिया जाएगा।

आदेश के अनुसार आयुक्तालय जयपुर में पदस्थापित गोपाल लाल शर्मा, एसडीआरएफ, जयपुर के रविकांत शर्मा, सीआईडी, सीबी के उमेश त्रिवेदी, पुनर्गठन, पुलिस मुख्यालय के विष्णु प्रसाद शर्मा, डीजीपी के अतिरिक्त निजी सचिव व सीआईडी व आईबी के संदीप कंसल और रेंज भरतपुर में पदस्थापित विष्णु कांत शर्मा को अतिरिक्त निजी सचिव से निजी सचिव के पद पर पदोन्नत किया गया है।

नवप्रवेशी छात्रों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित

नवप्रवेशी छात्रों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम "आगाज" का आयोजन किया।

- डायरेक्टर जयपाल मील ने विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम करने और लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रेरित किया

जयपुर। स्वामी केशवानंद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट एंड ठाामोत्थान (एस.के.आई.टी) रामनगरिया, जगतपुरा, जयपुर में गुरुवार को बी.टेक. प्रथम वर्ष के इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री टीकम चन्द बोहरा (आईएएस), एमडी राजफेड, राजस्थान तथा गेस्ट ऑफ ऑनर संस्थान के पूर्व छात्र श्री कुलदीप कौशिक, सीनियर मैनेजर, गेल इंडिया लिमिटेड उपस्थित रहे।

अपने प्रेरणादायी सम्बोधन में श्री टीकम चन्द बोहरा ने विद्यार्थियों से कहा कि उन्हें सदैव अपनी मेहनत पर विश्वास रखना चाहिए। उन्होंने अपने संघर्षमय जीवन के अनुभव साझा करते हुए विद्यार्थियों को धैर्य, लगन और परिश्रम से अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपनी स्वरचित कविताओं के माध्यम से भी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। गेस्ट ऑफ ऑनर श्री कुलदीप कौशिक ने छात्रों को सफलता प्राप्त करने के व्यावहारिक उपाय बताए और उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दीं। संस्थान के चेयरमैन सुरजाराम मील ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि एस.के.आई.टी विद्यार्थियों को क्वालिटी एजुकेशन प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

इस अवसर पर संस्थान के वाइस चेयरमैन श्री अनिल बाफना ने सफलता के लिए सही दिशा में किए गए प्रयासों के महत्व पर बल दिया। डायरेक्टर जयपाल मील ने विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम करने और लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रेरित किया।

डायरेक्टर (एकेडमिक्स) डॉ एस.एल. सुराना ने कॉलेज के अनुशासन नियमों तथा 75 उपस्थिति की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला।

प्रिंसिपल डॉ रमेश कुमार पचार ने संस्थान के विजन-मिशन साझा किए और उपलब्ध सुविधाओं एवं संस्थान की उल्लेखनीय उपलब्धियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एस.के.आई.टी को द्वारा ठोडिंग प्राप्त है और यह लगातार 7 वर्षों से की रैंकिंग में प्रथम स्थान पर रहा है।

कार्यक्रम के अंतर्गत सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी हुईं, जिनमें राजस्थानी लोकनृत्य एवं संगीतमय प्रस्तुतियाँ विशेष आकर्षण रहीं। अंत में डीन डॉ आर.के. जैन ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया और विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

Hashtag: The Symbol That Changed Social Media

Observed on August 23, International Hashtag Day marks the anniversary of the first use of the hashtag symbol (#) on Twitter in 2007. What began as a simple way to group conversations has now become a global digital tool that drives trends, movements, and real-time engagement across platforms. From #ThrowbackThursday to #BlackLivesMatter, hashtags have transformed how we communicate, advocate, and connect online. International Hashtag Day celebrates this symbol's cultural impact, highlighting its role in shaping modern discourse, amplifying voices, and bringing communities together in the ever-evolving world of social media.

#FAMILY BONDS

A Modern Crisis

A quick "How are you?" via text does not carry the same warmth or presence as a face-to-face talk.

In today's rapidly changing world, one of the most profound yet often overlooked shifts is the weakening of family bonds. The family, once the cornerstone of emotional, moral, and social support, is facing a slow but steady erosion. Modern life, characterized by busyness, mobility, and digital engagement, has redefined the ways people connect, often leaving traditional family relationships neglected or fractured.

In the past, families lived closely, sometimes even in multigenerational households. Grandparents, parents, and children shared everyday life, supporting each other through every stage of growth and aging. Family ties were not just emotional but practical, with shared responsibilities and mutual reliance. Today, this model has been replaced by more fragmented living. Parents and children may live in different cities or countries, often connected only by occasional phone calls or holiday visits.

One of the biggest contributors to this shift is urban migration and the pursuit of individual success. Young people leave their hometowns in search of education or job opportunities, often settling far from their families. As life becomes busier and more career-focussed, time for family interactions shrinks. Even when family members live under the same roof, quality time together is often sacrificed to work demands, social commitments, or screen time.

Technology, while offering tools to stay connected, has paradoxically deepened emotional distances. Text messages, social media, and video calls have replaced long, meaningful conversations. These forms of communication, though instant, can lack depth. A quick "How are you?" via text does not carry the same warmth or presence as a face-to-face talk. Over time, relationships maintained primarily through screens can become shallow and mechanical.

Cultural shifts and generational differences further strain family relationships. In many cultures, the idea of family obligation is seen as less important than personal freedom and self-expression. Older generations may feel neglected or misunderstood, while younger people often feel judged or restricted by traditional expectations. These misunderstandings create a quiet but growing emotional divide.

The consequences of vanishing family bonds are significant. Elderly parents may experience loneliness and abandonment. Younger individuals, though seemingly connected to the world, may lack emotional support, guidance, and a true sense of belonging. Without strong family roots, people can feel untethered, drifting through life without a deep sense of identity or purpose.

Yet, all is not lost. Rebuilding family bonds requires intention, time, and empathy. Simple efforts, like regular visits, shared meals, storytelling, or celebrating traditions, can go a long way in nurturing connection. Listening without judgment and seeking to understand one another's perspectives can bridge generational gaps.

In a world that often celebrates independence and convenience, choosing family may seem like a challenge. But strong family ties offer something irreplaceable: a sense of unconditional love, history, and belonging. Reclaiming these bonds can bring stability, joy, and meaning in an otherwise disconnected age.

In the highly competitive landscape of fashion, some argue that brands also don't get enough time to think through the cultural ramifications of their choices. But critics point out that any borrowing needs to be underpinned by respect and acknowledgement, especially when these ideas are repurposed by powerful global brands to be sold at incredibly high prices.

Why Prada-and other luxury brands- keep getting India wrong

● Zoya Mateen

A recent controversy surrounding Italian luxury label *Prada* has put the spotlight on how global fashion giants engage with India, a country whose rich artistic traditions have often suffered because of its inability to cash in on them. Prada got into trouble in June after its models walked the runway in Milan wearing a toe-braided sandal that looked like the Kolhapuri chappal, a handcrafted leather shoe made in India. The sandals are named after Kolhapur, a town in the western state of Maharashtra, where they have been made for centuries, but the Prada collection did not mention this, prompting a backlash.

As the controversy grew, Prada issued a statement saying that it acknowledged the sandals' origins and that it was open to a 'dialogue for meaningful exchange with local Indian artisans.' Over the past few days, a team from Prada met the artisans and shopkeepers in Kolhapur who make and sell the sandals to understand the process.

Prada told the BBC that it held a 'successful meeting' with the Maharashtra Chamber of Commerce, Industry & Agriculture, a prominent industry trade group. The statement also indicates that Prada may potentially collaborate in future with some manufacturers of Kolhapuri footwear. While it's not clear what form this collaboration may take, it's a rare example of a global fashion giant acknowledging that it failed to credit local artisans and the craft it was piggybacking on.

Many big brands have been routinely accused of drawing inspiration from Indian, and wider South Asian, traditions in their quest to reinvent and stay relevant, but without crediting the source. Earlier this year, spring designs from Reformation and H&M ignited a fiery debate on cultural appropriation after many said that their outfits appeared heavily inspired by South Asian garments. Both brands issued clarifications, while H&M denied the allegations, Reformation said that its design was inspired by an outfit owned by a model with whom it had collaborated for the collection.

And just two weeks ago, Dior was criticised after its highly-anticipated Paris collection featured a gold and ivory houndstooth coat, which many pointed out was crafted with mukaish work, a centuries-old metal embroidery technique from northern India. The collection did not mention the roots of the craft or India at all.

The BBC has reached out to Dior for comment.

Some experts say that not every brand that draws inspiration from a culture does so with wrong intentions, designers around the world invoke aesthetics from different traditions all the time, spotlighting them on a global scale. In the highly competitive landscape of fashion, some argue that brands also don't get enough time to think through the cultural ramifications of their choices. But critics point out that any borrowing needs to be underpinned by respect and acknowledgement, especially when these ideas are repurposed by powerful global brands to be sold at incredibly high prices.

"Giving due credit is a part of design responsibility, it's taught to you in design school and brands need to educate themselves about it," says Shefalee Vasudev, the editor-in-chief of Voice of Fashion. Not doing so, she adds, is 'cultural neglect towards a part of the world which brands claim to love.'

Estimates vary about the size of India's luxury market, but the region is widely seen as a big growth opportunity.

Analysts from Boston Consulting Group say that the luxury retail market in India is expected to nearly double to $14bn by 2032. Powered by an expanding and affluent middle class, global luxury brands are increasingly eyeing India as a key market as they hope to make up for weaker demand elsewhere. But not everyone shares the optimism.

Arvind Singhal, Chairman of consultancy firm Technopak, says a big reason for the seeming indifference is that most brands still don't consider India a significant market for high-end luxury fashion. In recent years, many high-end malls with flagship luxury stores have opened up in big cities, but they rarely see significant footfall.

"Names like Prada still mean nothing to a majority of Indians. There is some demand among the super-rich, but hardly any first-time customers," Mr. Singhal says. "And this is simply not enough to build a business, making it easy to neglect the region altogether."

Anand Bhushan, a fashion designer from Delhi, agrees. He says that traditionally, India has always been a production hub rather than a potential market, with some of the most expensive brands in Paris and Milan employing Indian artisans to make or embroider their garments. "But that still does not mean you can just blatantly lift a culture without understanding the history and context and brand it for millions of dollars," he adds. The frustration, he says, is not focused on any one label but has been building for years.

The most memorable misstep, according to him, took place during the Karl Lagerfeld 'Paris-Bombay' Métiers d'Art collection, showcased in 2011. The collection featured sari-draped dresses, Nehru-collared jackets and ornate headpieces. Many called it a fine example of cultural collaboration, but others argued it relied heavily on clichéd imagery and lacked authentic representation of India. Others, however, say no brand can afford to write off India as insignificant.

"We might not be the fastest-growing luxury market like China, but a younger and more sophisticated generation of Indians with different tastes and aspirations is reshaping the landscape of luxury," says Nonita Kalra, editor-in-chief of online luxury store Tata CliQ Luxury. In the case of Prada, she says the brand seemed to have made a 'genuine oversight,' evident from the lengths to which it has gone to rectify its mistake.

For Ms. Kalra, the problem is a broader one, where brands based in the west and run by a homogenous group of people, end up viewing consumers in other parts of the world through a foreign lens. "The lack of diversity is the biggest blind spot of the fashion industry, and brands need to hire people from different parts of the world to change that," she says.

"But their love and respect for Indian heritage is genuine."

The question of cultural appropriation is complex, and the debates it sparks online can seem both overblown and eye-opening. And while there are no simple answers, many feel that the outrage around Prada has been a great starting point to demand better accountability from brands and designers who, until now, have largely remained unchallenged. It is an opportunity for India, too, to reflect on the ways it can support its own heritage and uplift it.

Weavers toil for weeks or months to finish one masterpiece, but they often work in precarious conditions without adequate remuneration and with no protection for their work under international intellectual property laws.

"We don't take enough pride and credit our own artisans, allowing others to walk all over it," Ms. Vasudev says.

"The trouble also is that in India, we have simply too much. There are hundreds of different craft techniques and traditions, each with its constantly evolving motif directory going back centuries," says Laila Tyabji, Chairperson of Dastkar, which promotes crafts and craftspeople.

"We bargain and bicker over a pair of fully embroidered *juthis* (shoes) but have no issues over buying a pair of Nike trainers at 10 times the price, even though the latter has come off an assembly line while each juthi has been painstakingly and uniquely crafted by hand," she says. And while that continues, she says, foreign designers and merchandisers will do the same. Real change can only happen, she says, "when we ourselves respect and appreciate them, and have the tools to combat their exploitation."

rajeshsharma1049@gmail.com

A team from Prada met makers and sellers of Kolhapuri sandals.

#ACKNOWLEDGE

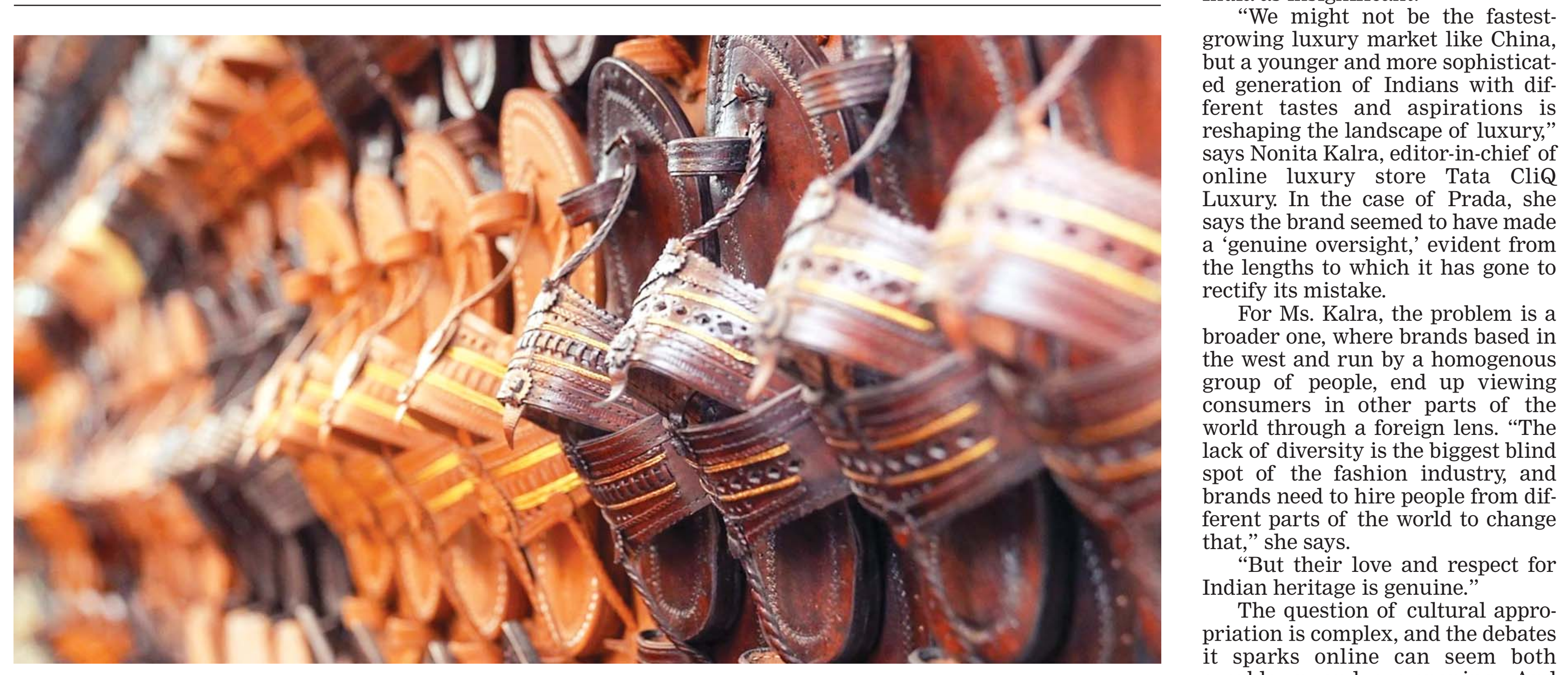

> Prada has been a great starting point to demand better accountability from brands and designers who, until now, have largely remained unchallenged. It is an opportunity for India, too, to reflect on the ways it can support its own heritage and uplift it.

The iconic Kolhapuri sandals drew attention after Prada was accused of replicating the design.

#MEDICINE

Concussion In Children Can Go On

Lightheadedness, dizziness, problems with balance and vision, difficulty performing a tandem gait test, where participants are instructed to walk heel-to-toe, indicate concussion.

A brief, standardized physical exam for sport-related concussive brain injuries in children and adolescents can identify who's at risk for persistent post-concussion symptoms. The Buffalo Concussion Physical Examination's Risk of Delayed Recovery (RDR) score is the first decision rule to help clinicians, who aren't concussion specialists, quickly identify which children are at risk for persistent post-concussion symptoms (PPCS) within 10 days of injury and should be referred to a specialist for focused treatment.

A decision rule is an evidence-based tool that helps clinicians make diagnostic and therapeutic decisions.

As reported in the *British Journal of Sports Medicine*, the decision rule proved to be highly accurate, correctly identifying who would go on to develop PPCS in 85% of cases.

"The Buffalo Concussion Physical Exam takes less than 10 minutes to do and uses physician exam techniques that every clinician already has," says first author M. Nadir Haider, assistant director of research in the Concussion Management Clinic in the Jacobs School of Medicine and Biomedical Sciences at University at Buffalo and UBMD Orthopedics and Sports Medicine.

'WAIT AND SEE' UPS RISK

"The current standard of practice is to wait and see for the first four weeks," says Haider. "But our research and other studies have shown that in children and adolescents, delayed treatment can lead to a higher risk of persistent impairments with poor outcomes." Students with PPCS continue to suffer, experience physical and cognitive symptoms, and start exhibiting difficulties with academic work and even in their social lives, Haider says. "So, preventing these outcomes is pretty important."

"Right now, there is no gold standard method to identify children within a few days of injury who will have delayed recovery from their concussion. So, the current standard of practice is to see which children do not recover, and this leads to unnecessary delays," says Haider. "This scoring system may circumvent the waiting period for those children at higher risk, expediting the treatment they need for a full recovery."

PRIMARY SIGNS OF DELAYED CONCUSSION RECOVERY

The new decision rule is based on an observational study conducted from 2016 to 19 on 270 children and adolescents with sport-related concussions, who were seen within 14 days of injury at UBMD Orthopedics and Sports Medicine clinics in Western New York. (Physicians in UBMD Physicians' Group are faculty members at the Jacobs School.)

"The purpose was to identify what is predictive of delayed recovery in children and adolescents with concussion," says Haider. "We wanted to develop something very straightforward that any provider, from a school nurse to a medical resident to a primary care provider, could easily do," says Haider.

The researchers found that the primary signs that indicate that a child or adolescent with a concussion will have delayed recovery were:

- Lightheadedness and dizziness on standing up from a supine position.
- Problems with balance and vision that indicate issues with the vestibular ocular reflex, the reflex that allows us to maintain stability in vision while moving.
- Difficulty performing a tandem gait test, where participants are instructed to walk heel-to-toe.

The National Institute of Neurological Disorders and Stroke and the National Center for Advancing Translational Science, both of the National Institutes of Health, funded the work.

THE WALL

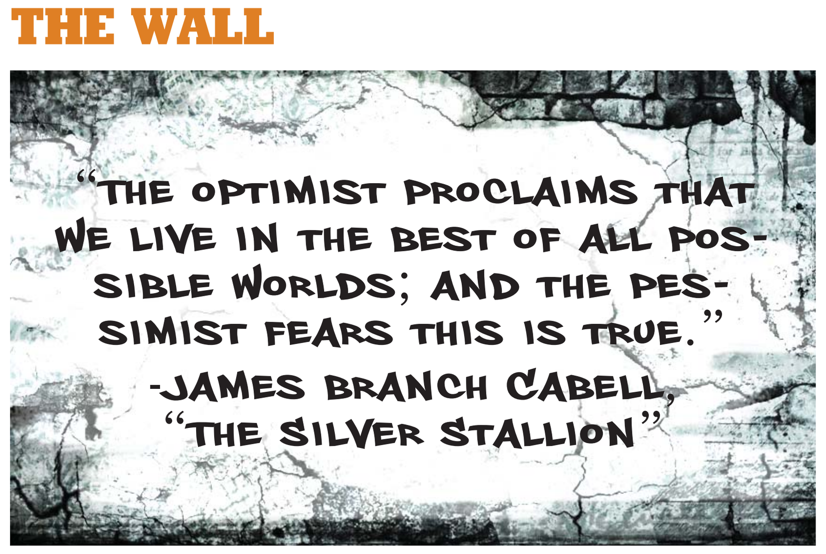

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

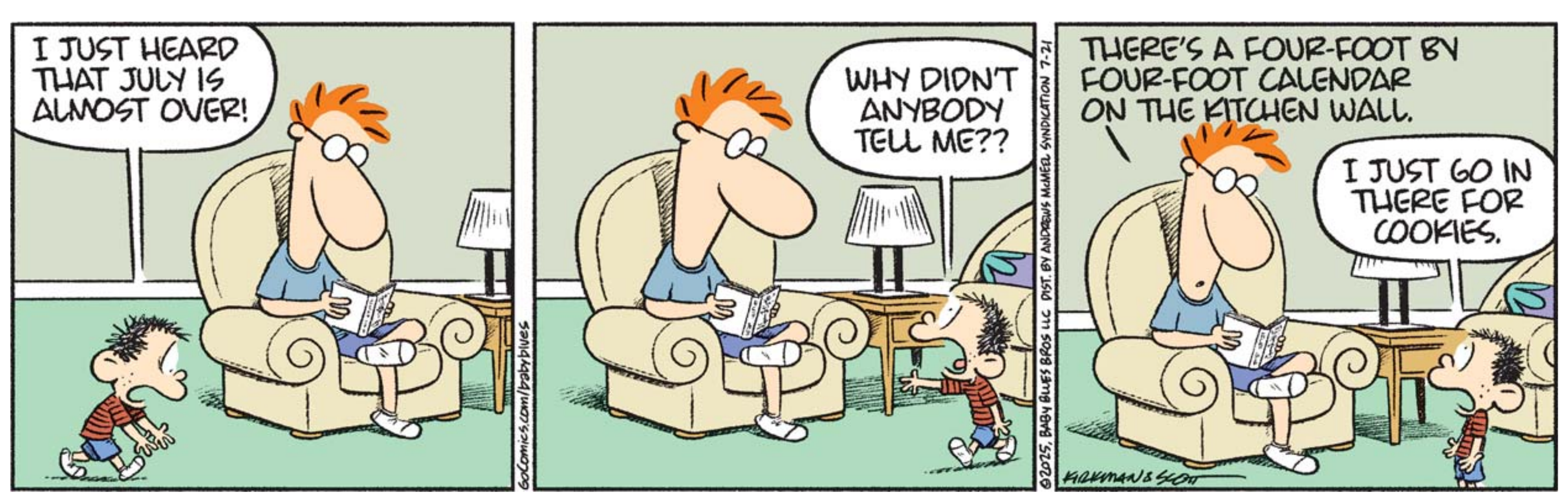

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

कोटा संभाग में मूसलाधार बारिश, सुल्तानपुर में हालात बिगड़े

दीगोद, सुल्तानपुर, बारां के कई इलाकों में बाढ़ जैसे हालात बने, इटावा का पूरा इलाका जलमग्न हो गया

कोटा, (निसं)। प्रदेश के कोटा संभाग में मौसम विभाग ने पहले ही भारी बारिश की चेतावनी जारी की हुई है जिसका असर ही देखने को मिला है। भारी बारिश बीते दो दिनों से हो रही है। इसके चलते हालात विकट बने हुए हैं। कई रास्ते अवरुद्ध हो गए हैं। नेशनल हाइवे से लेकर स्टेट हाइवे पर भी आवागमन बाधित हो गया है। निचले इलाकों में जलभराव की स्थिति हो गई है। कई गांव का संपर्क कस्बे वह अन्य जगह से कट रहा है। ऐसा संभाग के चारों जिले कोटा, बारां, बूंदी व झालावाड़ में हो रहा है। कोटा शहर के निचले इलाकों में पानी भर गया है। दूसरी तरफ बारां जिले के सीसवाली में भी मुख्य बाजार में पानी होने के चलते दुकानों में प्रवेश कर गया है। यहां तक कि कई सरकारी और निजी स्कूलों प्रबंधन ने अवकाश घोषित कर दिया है। बारां जिला कलेक्टर रोहिताश्व सिंह तोमर ने जिले का अवकाश 2 दिन का और कोटा जिला कलेक्टर ने शनिवार का अवकाश घोषित कर दिया। यह सभी निजी और सरकारी स्कूलों पर लागू है।

कोटा में भारी बरसात के बाद कई मकानों और गलियों में पानी भर गया।

सुल्तानपुर में 8 से 10 फीट भरा पानी:- कोटा जिले के सुल्तानपुर में हालात बिगड़ गए हैं जहां पर भारी बारिश के चलते बाजारों में पानी भर गया है। दूसरी तरफ एक पुलिस जीप भी भारी पानी के बीच फंस गई थी जिसे ट्रैक्टर की मदद से बाहर निकाला गया है। इसके अलावा सुल्तानपुर के बीच से निकल रही खाड़ी (बड़ा नाला) में भी काफी तेज बहाव उसमें आ रहा है। साथ ही कुछ कच्चे मकान भी गिर गए। यहां तक कि इस खाड़ी के नजदीक और जल भराव के क्षेत्र में करीब 8 से 10 फीट पानी भर गया है। यह पानी घरों में है। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर सुल्तानपुर के नजदीक पानी आ गया है। सुल्तानपुर एरिया में हुई भारी बारिश के बाद का पानी खेतों और इलाके में जमा हो गया था जो कि खाड़ी बड़े नाले से बहकर निकल रहा है। दूसरी तरफ दीगोद, सुल्तानपुर, बारां के कई इलाकों में बाढ़ जैसे हालात बन गए। इटावा का पूरा इलाका जलमग्न है। कई स्टेट हाइवे और दूसरे बड़े कस्बों को जोड़ने वाले सड़क मार्ग बंद हैं। कोटा और कैथून मार्ग में भी चंद्रसेल नदी में पानी आ जाने के चलते रास्ता बंद हो गया। कोटा शहर में भी जलभराव वाले क्षेत्रों से एसडीआरएफ एवं प्रशासन ने लोगों को नावों की सहायता से निकालकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया।

जानकारी के अनुसार गुरुवार और शुक्रवार रात से ही भारी बारिश शुरू हो गई थी जिसका दौर दिन में भी जारी रहा, जिससे निचले इलाकों में जलभराव की स्थिति बन गई है। इसके बाद एसडीआरएफ सिविल डिफेंस और जिला प्रशासन की टीम में राहत

- **कोटा और कैथून मार्ग में भी चंद्रसेल नदी में पानी आ जाने के चलते रास्ता बंद हो गया**
- **कोटा रेल मंडल के दिल्ली-मुंबई रेल लाइन पर पहले आमली और फिर सवाई माधोपुर रेलवे स्टेशन पर पानी भर गया, इसके चलते यातायात प्रभावित हो रहा है, डेढ़ दर्जन से ज्यादा यात्री ट्रेनें प्रभावित हुई**

और बचाव कार्य में उतर गई है। प्रशासन में पूरे घटनाक्रम की मॉनिटरिंग शुरू कर दी है। नदी-नालों के उफान में आने के चलते पुलिस का जाप्ता भी तैनात कर दिया गया है। कोटा शहर के सूरसागर एरिया में रहने वाले महावीर प्रसाद का कहना है कि उनके इलाके में पानी लगातार बढ़ रहा है। पानी कुछ घरों में प्रवेश कर चुका है जबकि शेष में दहलीज तक आ गया है। बारां जिले के सीसवाली में किराना व्यवसायी सुरेश का कहना है कि मुख्य बाजार में पानी भर जाने के चलते काफी नुकसान हुआ है। पूरी रात बारिश के बाद अचानक पानी से बाजार जलमग्न हो गए थे। दुकान पहुंच कर काफी कुछ सामान समेटना पड़ा है लेकिन फिर भी नुकसान हुआ है। त्रिवेणी आवास बजरंग नगर में रहने वाले राजेंद्र यादव का कहना है कि उनके इलाके में भी पानी भर गया है। घर से बाहर निकलना भी मुश्किल हो रहा है।

वहीं, भारी बारिश के चलते कोटा-श्योपुर स्टेट हाइवे बंद हो गया है। मारवाड़ा चौकी के यहां पर रेलवे अंडरपास से भरी पानी का बहाव तेज है। इसके चलते वाहनों की आवाजाही अवरुद्ध हो गई है। दूसरी तरफ सुल्तानपुर कस्बे में बाजारों में पानी भर गया है। सड़कों पर दरिया की तरह अपनी दौड़ रहा है। प्रशासन की तरफ से छुट्टी घोषित नहीं की गई थी ऐसे में अधिकांश स्कूल खुल गए थे। बच्चे भी बड़ी संख्या में स्कूल पहुंचे।, लेकिन भारी बारिश को देखते हुए एहतियातन स्कूल प्रबंधनों ने भी छुट्टी कर दी है। बच्चों को बीच में ही घर भेज दिया। दूसरी तरफ जिला कलेक्टर पीयूष समारिया ने आदेश जारी करते हुए 23 अगस्त शनिवार का अवकाश घोषित कर दिया है। ऐसे में स्कूलों में 23 अगस्त को अवकाश रहेगा।

कोटा ग्रामीण एसपी सुजीत शंकर ने बताया कि नदी-नाले के उफान व भारी बारिश को देखते हुए जाप्ता तैनात किया है। आमजन से भी अपील है कि बरसात अधिक होने से चंबल, काली सिंध व अन्य नदियों में पानी का स्तर काफी बढ़ गया है।

दिल्ली-मुंबई रेल लाइन पर 18 से ज्यादा ट्रेनों का संचालन हुआ प्रभावित :- राजस्थान में कोटा रेल मंडल के दिल्ली-मुंबई रेल लाइन पर पहले आमली और फिर सवाई माधोपुर रेलवे स्टेशन पर पानी भर गया था। इसके चलते यातायात प्रभावित हो रहा है। इसमें डेढ़ दर्जन से ज्यादा यात्री ट्रेनें प्रभावित हो गई हैं। धीरे-धीरे निकाला गया। कोटा से सवाई माधोपुर के बीच में स्थित आमली स्टेशन के नजदीक गुरुवार देर रात 12 बजे के आसपास रेलवे ट्रैक पर पानी आ गया था। इसके बाद ट्रेनों को धीरे-धीरे निकाला गया है। वहीं शुक्रवार सुबह 6 बजे के आसपास सवाई माधोपुर स्टेशन पर भी पानी भर गया था। यह पानी रेलवे ट्रैक के आसपास है। इसके चलते जयपुर से कोटा आने और जाने के साथ-साथ दिल्ली और कोटा के बीच चल रही रेल गाड़ियां प्रभावित रही हैं।

कोटा रेल मंडल के वरिष्ठ वाणिज्य प्रबंधक सौरभ जैन का कहना है कि भारी बारिश के चलते आमली व सवाई माधोपुर स्टेशन के नजदीक रेलवे ट्रैक पर पानी आ गया था। इसके चलते रेल यातायात प्रभावित रहा है। सतर्कता को ध्यान रखते हुए प्रतिबंधित गति से ट्रेनों को रेगुलेट करके निकाला गया है। इसमें यात्री ट्रेनों के साथ-साथ मालगाड़ियां भी शामिल है जिससे कुछ ट्रेनें प्रभावित हुई हैं।

जिला कलक्टर पीयूष समारिया ने कहा कि प्रशासन पूरी तत्परता के साथ हालात पर नज़र रखे हुए है और प्राथमिकता के आधार पर लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया जा रहा है। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में नावें, राहत एवं बचाव उपकरण, दवाईयां, भोजन एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था की जा रही है।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्र के निरीक्षण के लिए पहुंचे स्पीकर ओम बिरला :- लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला इस समय संसदीय क्षेत्र कोटा-बून्दी के प्रवास पर हैं। इस दौरान दीगोद निमोदा हरीजी में अतिवृष्टि से बिगड़े हालात हालातों पर नजर बनाए हुए हैं। स्पीकर बिरला ने प्रभावित परिवारों को त्वरित राहत देने के निर्देश दिए हैं। साथ ही खेतों में जलभराव की निकासी को लेकर उपाय करने के भी निर्देश दिए हैं। स्थिति का जायजा लेने के लिए सेना के ट्रक से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर निमोदा हरिजी पहुंचे है।

मुख्यमंत्री ने अतिवृष्टि प्रभावित क्षेत्रों में सतर्कता बरतने के निर्देश दिए

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश के विभिन्न ज़िलों में हो रही भारी बारिश की स्थिति पर गम्भीर चिंता व्यक्त करते हुए अधिकारियों को सतर्कता बरतने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा एवं ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हीरालाल नागर को प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर स्थिति का जायजा लेने हेतु भेजा है।

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने टोंक, कोटा, सवाई माधोपुर, बूंदी एवं दौसा जिला कलक्टरों से फोन पर बात की**

मुख्यमंत्री ने टोंक, कोटा, सवाई माधोपुर, बूंदी एवं दौसा ज़िलों के कलेक्टरों से फोन पर वार्ता कर राहत एवं बचाव कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने एनडीआरएफ, एसडीआरफ तथा पुलिस प्रशासन को मुस्तैद रहने और त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि भार बारिश के कारण बने हालात पर राज्य सरकार लगातार नजर बनाए हुए है। जिन क्षेत्रों में बिजली, सड़क एवं संचार व्यवस्था बाधित हुई है, वहां तत्परता बरतते हुए इन सुविधाओं को जल्द से जल्द बहाल किया जाए। भारी बारिश से प्रभावित फसलों के नुक़सान पर मुख्यमंत्री ने तत्काल विशेष गिरदावरी कराने के निर्देश दिए हैं। साथ ही, उन्होंने स्थानीय प्रशासन को निर्देशित किया कि जान-माल तथा संपत्ति के नुकसान का शीघ्र आकलन कर पीड़ितों को जल्द से जल्द राहत उपलब्ध कराई जाए।

लाखों की नकदी व जेवरात चोरी

उदयपुर, (निसं)। सुखेर थाना पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ फ्लेट में घुस कर ताला तोड़ लाखों की नकदी व जेवरात चुरा ले जाने का प्रकरण दर्ज किया। पीड़ित भद्रविरसिंह शेखावत पुत्र संजयसिंह शेखावत निवासी आर्चिड बी मंगलम रेजीडेंसीभुवाणा ने सुखेर पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज करवाया। उसने बताया कि मेरे मामा का लड़का भी आर्चिड बी मंगलम रेजीडेंसी में रहता है, जो 6 अगस्त को परिवार सहित इंग्लैण्ड गया था। 18 अगस्त रात में अज्ञात चोर फ्लेट का दरवाजा तोड़ कर करीब 8 लाख नकदी, 20 तोला सोने के जेवरात तथा आधा किलो चांदी के जेवरात चुरा ले गए।

अब ट्रेन की छत पर बैठकर रामदेवरा नहीं जा सकेंगे जातरू, एडवाइजरी जारी

जोधपुर, (कासं)। अब बाबा के जातरू ट्रेन की छत पर बैठकर रामदेवरा नही जा सकेंगे। जोधपुर रेल प्रशासन ने रामदेवरा मेले में जाने वाले सभी जातरुओं के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए कहा कि ट्रेन की छत पर बैठकर यात्रा नहीं करें। जानकारी के अनुसार बाबा के जातरू बड़ी संख्या में ट्रेनों की छतों पर बैठकर यात्रा करते रहे हैं। इस बार जोधपुर मंडल के सभी रेल मार्गों का शत प्रतिशत विद्युतीकरण किया जा चुका है, ऐसे में ट्रेन और बसों की छतों पर बैठकर यात्रा करना जानलेवा हो सकता है।

- **जोधपुर रेल प्रशासन ने रामदेवरा मेले में जाने वाले सभी जातरुओं के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए कहा कि ट्रेन की छत पर बैठकर यात्रा नहीं करें**
- **इस बार जोधपुर मंडल के सभी रेल मार्गों का शत प्रतिशत विद्युतीकरण किया जा चुका है, ऐसे में ट्रेन और बसों की छतों पर बैठकर यात्रा करना जानलेवा हो सकता है**

उत्तर-पश्चिम रेलवे के जोधपुर डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने शुक्रवार को कहा कि रामदेवरा मेले के दौरान जातरू ट्रेन की छत पर बैठकर यात्रा नहीं कर सकेंगे, क्योंकि समूचे जोधपुर मंडल के रेलमार्गों का विद्युतीकरण करवाया जा चुका है और उनके ऊपर से गुजरने वाले विद्युतीकृत तारों में 25 हजार वॉल्ट का करंट प्रवाहित हो रहा है। उन्होंने इसे देखते हुए रामदेवरा के मेलार्थियों और अन्य सभी रेल यात्रियों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए रेल यात्रा के दौरान अतिरिक्त सतर्कता बरतने की सलाह दी है। डीआरएम ने बताया कि इस संबंध में आरपीएफ को रामदेवरा आवागमन करने वाली सभी ट्रेनों पर इस बात की विशेष निगरानी रखने को कहा गया है कि कोई भी यात्री ट्रेन की छत पर न चढ़े। इसके साथ ही उन्होंने सड़क मार्ग से निजी अथवा सरकारी बसों और वाहनों से रामदेवरा जाने वाली यात्रियों को इसके प्रति आगाह किया है कि वह लेवल क्रॉसिंग पार करते समय इन तारों का विशेष ध्यान रखें और किसी भी माध्यम से विद्युतीकृत तारों के साथ छेड़छाड़ कर वाहन निकालने की कोशिश ना करें अन्यथा इनमें प्रवाहित होने वाले करंट जानलेवा साबित हो सकता है।

उन्होंने बताया कि रामदेवरा आवगमन करने वाले जातरुओं की सुविधा के लिए पर्याप्त संख्या में अनारक्षित ट्रेनों का संचालन किया जा रहा है तथा यात्री उचित माध्यमों से इस संबंध में जानकारी हासिल कर अपनी सुरक्षित यात्रा कर सकते हैं। ट्रेन की छत पर यात्रा करना रेलवे अधिनियम, 1989 की धारा 156 के तहत एक दंडनीय अपराध है। ऐसा करने पर तीन महीने तक की जेल, 500 रुपये तक का जुर्माना, या दोनों हो सकते हैं।

गौरतलब है कि बाबा मेले के समय जातरूओं की संख्या लाखों में होती है। रेलवे द्वारा पर्याप्त व्यवस्था करने के बाद भी जातरूओं को ट्रेन के डिब्बों में बैठने की जगह नहीं मिल पाती थी, परिणाम स्वरूप हजारों की भीड़ ट्रेन की छत पर बैठकर यात्रा करने पर मजबूर हो जाते थे। इसमें महिलाओं सहित छोटे-छोटे बच्चे भी शामिल होते थे।

सूने मकान से नौ लाख के जेवर चोरी

श्रीगंगानगर, (निसं)। यहां जवाहरनगर थाना क्षेत्र की भूप कॉलोनी में अज्ञात चोरों ने सूने घर का फायदा उठाते हुए करीब नौ लाख रुपए के सोने-चांदी के जेवरात पर हाथ साफ कर दिया। घर के सदस्य एक रिश्तेदार के अंतिम संस्कार के लिए गांव गए थे कि पीछे से चोरी की वारदात हो गई। घटना का खुलासा तब हुआ जब परिवार अंतिम संस्कार से लौटकर घर आया।

परिवादी दिनेश राठी ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया कि उनके गांव हाकमाबाद में एक रिश्तेदार का देहांत हो गया था। पूरे परिवार के साथ वे करीब तीन बजे अंतिम संस्कार के लिए गांव चले गए। सुबह जब उनकी मौसी सुनीता घर लौटी तो देखा कि मकान के सभी ताले टूटे हुए हैं और अंदर का सामान बिखरा पड़ा है। सूचना पर जब दिनेश राठी घर पहुंचे तो उन्होंने पुलिस को मामले की जानकारी दी। परिवादी ने बताया कि अलमारी के सभी ताले टूटे हुए थे और उसमें रखे कीमती जेवरात चोरी हो चुके थे। चोरी गए सामान में एक तोले की सोने की चेन, आधा तोले के सोने के टॉप्स, करीब 4 ग्राम की सोने की बालियां, 6 तोले की चांदी का कड़ा, 6 तोला चांदी की चेन और दो चांदी की अंगूठियां शामिल हैं।

महिला पर हमला कर गहने लूट मामले का खुलासा, दो गिरफ्तार

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर की पुर थाना पुलिस और डीएसटी टीम ने राहगीर महिला पर चाकू से हमला कर गहने लूट की वारदातों को अंजाम देने वाले दो शातिर बदमाशों को गिरफ्तार कर वारदात का खुलासा किया है।

जानकारी के अनुसार अहीर मोहल्ला, पांसल निवासी मुकेश पुत्र लालाराम अहीर ने पुर थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई कि उसकी माता ख्याली देवी 25 जुलाई की दोपहर में अपने खेत पर जा रही थी। सामोडी से पांसल की ओर शमशान के नजदीक एक बाइक से आए दो बदमाशों ने परिवादी की माता को रोका और चाकू दिखाकर सोने का मांदलिया और चार मोती जो सोने के थे, जिनका वजन 8 से 10 ग्राम था वो जबरन छीन कर भाग गए। वारदात को अंजाम देने के बाद बदमाश समोडी चौराहे की ओर भागने लगे, जिन्हें परिवादी की माता ने रोकने का प्रयास किया तो एक बदमाश ने चाकू से हमला कर दिया जिससे परिवादी की मां के हाथ में गहरी चोट आई। पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र यादव ने

पुर थाना पुलिस और डीएसटी टीम ने लूट की वारदातों को अंजाम देने वाले दो शातिर बदमाशों को गिरफ्तार किया।

वारदात को गंभीरता से लेते हुए पुर थाना प्रभारी पुष्पा कासोटिया के नेतृत्व में साइबर सेल और डीएसटी की टीम का गठन किया। टीम ने अथक प्रयास के बाद लूट की इस वारदात का खुलासा करते हुए मूलतया: चित्तौड़ जिले के राजपुरा ओड बस्ती हाल ओडों का खेड़ा भीलवाड़ा निवासी धर्मेंद्र उर्फ महेंद्र (24) पुत्र रंगलाल ओड और ओडों का खेड़ा के ही निवासी अशोक (22) पुत्र भोलू ओड को गिरफ्तार कर लूटा गया रामनामी, मांदलिया और घटना में प्रयुक्त बाइक बरामद की है।

दवाई लेते समय बुजुर्ग का नकली दांत खाने की नली में अटका

अजमेर, (कासं)। बीमारी की दवाई लेते समय एक बुजुर्ग का नकली दांत खाने की नली में अटक गया। बुजुर्ग का जवाहर लाल नेहरू अस्पताल के ईएनटी विभाग के चिकित्सकों ने जटिल ऑपरेशन कर नकली दांत निकालकर जान बचाई। करीब आधे घंटे चले ऑपरेशन में चिकित्सकों की टीम ने दूरबीन ऑपरेशन कर खाने की नली से नकली दांत को सुरक्षित बाहर निकाला। बुजुर्ग के स्वस्थ होने पर अस्पताल से छुट्टी भी दे दी गई।

- **जेएलएन के चिकित्सकों ने जटिल ऑपरेशन कर नकली दांत निकाल जान बचाई**

जेएलएन अस्पताल के ईएनटी विभाग अध्यक्ष डॉ. योगेश आसेरी ने शुक्रवार को मीडिया को बताया कि बुधवार को डेगाना तहसील निवासी 51 वर्षीय बुजुर्ग को लेकर परिवार जन जेएलएन अस्पताल की इमरजेंसी वार्ड पहुंचे।

ऑपरेशन के बाद चिकित्सकों के साथ मरीज तथा खाने की नली से निकाल गया नकली दांत।

चिकित्सकों ने जब परिजन से पूछताछ की तो बताया कि बुजुर्ग ने दवाई लेते समय गलती से नकली दांत को निगल लिया, जिसके कारण वह भोजन नली में जाकर अटक गया। भोजन नली में नकली दांत अटकने से खाने-पीने में दिक्कत हो रही थी, बेचैनी भी महसूस होने लग गई थी। डॉ. आसेरी ने बताया कि केस चुनौती पूर्ण था पहले प्रयास में नकली दांत नहीं निकाला जा सका था, लेकिन टीम धैर्य और अनुभव के साथ ऑपरेशन कर मरीज को दूरबीन के जरिए करीब आधे घंटे में नकली दांत को खाने की नली से निकाल लिया। डॉ. योगेश ने बताया कि भोजन नली से करीब 10 सेंटीमीटर नीचे नकली दांत अटक था, दूरबीन से सफल ऑपरेशन कर उसे बाहर निकाला है। यदि यह नहीं निकलता तो भोजन नली फट सकती थी और उसके कारण मरीज की जान भी जा सकती थी। मरीज अब पूरी तरह स्वस्थ है, जिसे छुट्टी दे दी गई है।

बाघों के प्राकृतिक कॉरिडोर में बाधक बना टाइगर रिजर्व के बीच हाइवे

बूंदी, (निसं)। बूंदी के निकट रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व के बीच में से होकर गुजर रहे राष्ट्रीय राजमार्ग 52 पर वन्यजीवों के लिए सुरक्षित अंडरपास या ओवरब्रिज नहीं होने से प्राकृतिक कॉरिडोर बाधित हो गया है। युवा बाघिन आरवीटी 8 दो दिन से टाइगर रिजर्व के कोर क्षेत्र से निकलकर कालदां बफर जोन में जाने के लिए सड़क पार नहीं कर पा रही है। बाघिन का मूवमेंट लगातार सड़क किनारे व शहर के पास होने से वन विभाग व प्रशासन की चिंता बढ़ गई है। बाघिन गुरुवार सुबह सड़क के नजदीक आने से कुछ समय के लिए पुराने हाइवे पर वाहनों की आवाजाही भी बंद करनी पड़ी थी लेकिन नए हाइवे पर वाहनों की मौजूदगी से वह वापस लौट गई। बाघिन अपनी टेरेटरी की तलाश में है तथा एक माह से लगातार मूवमेंट कर रही है।

- **वन्यजीवों के लिए सुरक्षित अंडरपास या ओवरब्रिज नहीं होने से प्राकृतिक कॉरिडोर बाधित हुआ**

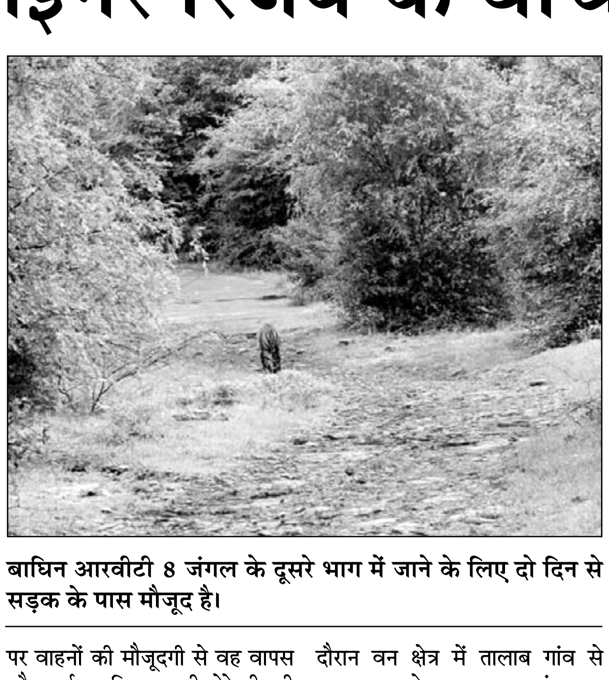

बाघिन आरवीटी 8 जंगल के दूसरे भाग में जाने के लिए दो दिन से सड़क के पास मौजूद है।

राष्ट्रीय राजमार्ग 52 के निर्माण के दौरान वन क्षेत्र में तालाब गांव से फूलसागर रोड़ तक 5 अंडरपास प्रस्तावित किए गए थे, लेकिन विभागीय सामंजस्य के अभाव में नहीं बन पाए। टाइगर रिजर्व बनने के बाद बाघों सहित अन्य वन्यजीवों की संख्या बढ़ने से इस व्यस्त राजमार्ग पर वन्यजीवों की आवाजाही बाधित हो गई है।

बाघिन की नियमित मोनिटरिंग, पशु चिकित्सक तैनात:- बाघिन की शहर व हाइवे किनारे मौजूदगी से वन विभाग सतर्क होकर 24 घण्टे मोनिटरिंग में जुटा हुआ है। किसी भी विपरीत परिस्थिति के लिए बाघिन को ट्रेंकुलाइज करने या अन्य चिकित्सकीय सहायता के लिए पशु चिकित्सकों की टीम बूंदी में बुला ली गई है। हालांकि उम्मीद है कि बाघिन जंगल में वापस रामगढ़ की तरफ लौट जाएगी या रोड़ पार कर कालदां के जंगलों में अपनी टेरेटरी बनाने के लिए निकल सकती है।

सुगनाराम जाट, फील्ड डायरेक्टर, रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व, बूंदी ने बताया कि बाघिन का मूवमेंट टाइगर रिजर्व के बफर जोन में बना हुआ है और टीमें नियमित निगरानी कर रही हैं। बाघिन के लिए यह नया इलाका है जिससे आबादी के निकट भी आ सकती है इसलिए सुरक्षा बढ़ा दी गई है।

युवक का शव मिला

उदयपुर, (निसं)। शहर के बडगांव थाना क्षेत्र में युवक का शव संदिग्ध हालत में मिला।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार सवेरे बडगांव थाना क्षैत्र लोयरा गांव रोड़ किनारे धनगांव बेहट ग्वालियर एमपी हॉल लोयरा निवासी राहुल जाटव पुत्र भोगीरसिंह जाटव का शव मकान से 200 मीटर दूरी पर रोड़ किनारे मिला। जिसकी पीठ पर खरोच के निशान पाए गए। इस पर एएसआई प्रकाशनाथ में मृतक का मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। वीहरभानसिंह कलर व पुट्टी का काम ठेकेदार भगवतसिंह के पास करता था। रात में खाना खाने के बाद वह सोया था जिसका शव दूसरे दिन सवेरे रोड़ किनारे पड़ा मिला। प्रकरण की जांच बडगांव थानाधिकारी पूरणसिंह कर रहे है।

फर्जी काल सेंटर जरिये ठगी, पांच गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। हिरणमगरी थाना पुलिस ने फर्जी काल सेटर जरिये अमेरीकियों से ठगी करने वाले पांच आरोपी गिरफ्तार कर इनके कब्जे से लेपटॉप, मोबाइल व अन्य सामान जब्त किए हैं।

पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर चलाए जा रहे तलाशी अभियान के दौरान हिरणमगरी थानाधिकारी भरत योगी के नेतृत्व में गठित दल ने आसूचना व तकनीकी सहयोग से कृष्णांगन अपार्टमेंट सेक्टर 3 हिरणमगरी में दबीश देकर मौके से फर्जी काल सेटर जरिये अमेरीकियों से ठगी करने वाले कुलदीप पटेल पुत्र मनोज भाई पटेल निवासी पीलकण्ड सोसायटी महादेव नगर वस्त्राल रोड़ रामुल इसकरोई अहमदाबाद गुजरात हॉल डी ब्लॉक सहज अपोजिट आरएएफ केम्प वस्त्राल रामुल दसकरोई अहमदाबाद, आनन्द डेगामडिया पुत्र वीठल भाई डेगामडिया प्रजापत निवासी शिवसुख नगर अपोजिट रतनपुरा गांव वस्त्राल रामुल दसकरोई अहमदाबाद, अर्चित पाण्डेय पुत्र ईतेन्द्र बाबु निवासी अमृतपाली सोसायटी अजय टेनामेंट महादेव नगर वस्त्राल रामुल दसकरोई अहमदाबाद, सूरजसिंह तोमर पुत्र महेन्द्रसिंह तोमर निवासी साकार टेनामेंट कोस्मोस विला के सामने वस्त्राल थाना रामुल इसकरोई अहमदाबाद, आसु राजपूत पुत्र राजेन्द्रसिंह निवासी टेनामेंट नियर कोस्मोस विला के सामने वस्त्राल रोड़ रामुल जिला इसकरोई अहमदाबाद गुजरात को गिरफ्तार किया।

रहवासी मकानों में बिक रही शराब

रेवदर, (निसं)। रेवदर कस्बे के उपखंड अधिकारी राजन लोहिया ऐक्टिव मोड पर है। वे ग्रामीणों की किसी भी शिकायत पर स्वयं मौके पर पहुंचकर कार्यवाही कर रहे हैं। वैसे ही गुरुवार रात्रि॰नौ बजे उपखण्ड अधिकारी राजन लोहिया ने सेलवाडा रोड पर स्थित खुशी पार्लर पर रेवदर ग्रामवासियों की शिकायत पर अवैध शराब बिक्री करने की सूचना पर अकस्मात दबिश दी। वहां पर उपखण्ड अधिकारी द्वारा अनजान ग्राहक बनकर शराब मांगी गयी, जिसमें अवैध शराब बिक्री करना पाया गया, उसके उपरांत रेवदर थानाधिकारी को फोन किया गया, जिसमें मौके पर एएसआई भरत कुमार सहित तीन कांस्टेबल मौके पर पहुंचे। मौके पर 51 बीयर की बोतल व॰9 बीयर कैन जब्त किये गये। उपखण्ड अधिकारी ने एएसआई को निर्देशित किया कि वे इन पर सख्त कार्रवाई कर रिपोर्ट भिजवायें।

संक्षिप्त

हिजाब विवाद में महिला डॉक्टर को धमकी

टोंक। मुख्यालय स्थित जनाना अस्पताल की डॉक्टर और यूनानी इंटर्न छात्रा के हिजाब विवाद के चलते डॉ. बिंदु गुप्ता और उनके पति को धमकी देने का मामला सामने आया है, जिसके चलते उन्होंने पीएमओ हनुमान प्रसाद बैरवा से 7 दिन का अवकाश मांगा है। पत्र में उन्होने बताया है कि उन्हे किसी अज्ञात द्वारा धमकी दी गई, जिसके कारण इस माहोल में वह ड्यूटी करना संभंव नही है। वहीं छात्रा को लेबर रूम में वीडियो बनाने और ड्रेस कोड में आने को लेकर नोटिस दिया है। गत 16 अगस्त को जानना अस्पताल में डॉक्टर बिंदू गुप्ता और यूनानी इंटर्न छात्रा के बीच हिजाब पहनने को लेकर बहस हुई थी, जिसके अन्तर्गत छात्रा ने इसका वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड कर दिया था, उसके बाद से ही यह मामला सुर्खियों में है। इस दौरान अज्ञात व्यक्ति की धमकी का मामला सामने आने पर विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी करते हुए पी.एम.ओ कार्यालय पहुंचकर ऑफिस के बाहर धरना प्रदर्शन किया तथा पीएमओ और अति. जिला कलेक्टर को ज्ञापन देकर धमकी देने वाले और छात्रा के खिलाफ कार्यवही करने की मांग की है, इस पूरे मामले को लेकर जिला प्रशासन ने जनाना अस्पताल और प्रबंधन से रिपोर्ट मांगी है।

जूडो टीम का ट्रायल 24 को निवाई में

टोंक। अनिल नोहटा फाइटर डिफेंस एकेडमी निवाई में जिला जूडो संघ द्वारा कैडेट एवं सीनियर वर्ग की जिला जूडो टीम का चयन 24 अगस्त को किया जाएगा। इस दौरान जिला जूडो संघ के अध्यक्ष सत्यनारायण गुप्ता एवं अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी राधेश्याम नवारिया ने बताया कि जिन खिलाड़ियों का जन्म वर्ष 2008, 2009, 2010 में हुआ है वह कैडेट वर्ग एवं जिन खिलाड़ियों का जन्म 2010 एवं इससे पूर्व हुआ है वह सीनियर वर्ग में भाग ले सकेंगे। उन्होंने बताया की खिलाड़ी अपने साथ अपना जन्म प्रमाण पत्र, आधार कार्ड एवं टेस्ट की मूल प्रति के साथ एक-एक प्रतिलिपि कॉपी तथा चार पासपोर्ट साइज फोटो साथ लाना आवश्यक है।

तीये की बैठक

अत्यन्त दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि हमारे पूजनीय पिताजी **श्री लड्डूराम जी सैनी** का स्वर्गवास 21.08.2025 को हो गया। तीये की बैठक 23.08.2025 शनिवार को 4 से 5, बजे तक अवध पैराडाइज गार्डन नीयर सेंट थॉमस स्कूल, हीरापूरा, जयपुर पर रखी गयी है।

शोकाकुलः नारायण (भाई), रामकुमार, फूलचंद, रामचन्द्र, बाबूलाल, ओमप्रकाश, गणेश, उमेश (पुत्र) मोहन, सोहन, पवन, नरेश, हरीश, रोहित, हर्ष, हिमांशू (पौत्र) दिव्यांश, सक्षम, धैर्य, कुणाल, देवांश, विशिष्ट, (पड़पौत्र) एवं समस्त नैणावा (सैनी) परिवार

9251571970, 9928637174, 9166377529

खोया पाया

मेरे मकान नम्बर 192/159 सेक्टर 19, प्रताप नगर, सांगानेर का नो ड्यूज नम्बर-3082 डेट-13.02.2006 कहीं खो गया मिलने पर सूचित करें- राजीव रंजन-7728029185

मेरे आवास 65/311 हीरा पथ, मानसरोवर, जयपुर का मूल कब्जा पत्र मानसरोवर में कहीं खो गया है जो कि राजस्थान आवासन मण्डल, जयपुर द्वारा भूपेन्द्र सिंह के नाम से आवंटित है मिलने पर कृपया सूचित करें मनोज सक्सेना-9828075137

मेरे भूखण्ड संख्या 295 रोहिणी नगर-3 योजना का मूल आवंटन पत्र व कब्जा पत्र कहीं गुम हो गया है मिलने पर संपर्क करें- मनोज कुमार गोयल फोन नंबर-9251628813

मेरे भूखण्ड संख्या बी-125, राम नगरिया विस्तार योजना का मूल लीज डीड पट्टा व सभी स्टाम्प कहीं गुम हो गया है मिलने पर संपर्क करें- राकेश कुमार फोन नंबर-7427094024

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

लालसोट में तहसीलदार व वकीलों के बीच विवाद को लेकर अधिवक्ता आक्रोशित

पावटा। दौसा के लालसोट में तहसीलदार व अधिवक्ताओं के बीच हुये विवाद का मामला प्रदेश भर में तूल पकडता जा रहा हैं। इसको लेकर अभिभाषक संघ पावटा ने अध्यक्ष ओमप्रकाश सैनी के नेतृत्व में उपखंड अधिकारी पावटा कपिल उपाध्याय को भजन लाल शर्मा के नाम ज्ञापन सौंप लालसोट तहसीलदार को निलंबित करने व विभागीय कार्यवाही कर जांच करने की मांग की। अभिभाषक संघ पावटा ने अध्यक्ष ओमप्रकाश सैनी ने

- **अधिवक्ताओं ने दी चेतावनी, कार्यवाही नहीं हुई तो करेगें आंदोलन**

बताया कि लालसोट वर्तमान तहसीलदार अमितेश मीणा द्वारा अधिवक्ताओं के साथ अमर्यादित व निंदनीय शब्दों का प्रयोग किया गया है। जिससे अधिवक्ताओं में आक्रोश हैं। इस दौरान इस दौरान अध्यक्ष एड. ओमप्रकाश सैनी समेत उपाध्यक्ष एड.अनिल सिंह शेखावत, सचिव एड. सुरेंद्र सिंह शेखावत, संयुक्त सचिव एड. मुकेश कुमार यादव, मीडिया प्रभारी एड.हेमंत कुमार मौर्य, कोषाध्यक्ष एड. मुकेश यादव, पुस्तकालयाध्यक्ष एड. कुलदीप पटेल, संगठन मंत्री जय किशन सोनी, दिलीप सिंह शेखावत, विष्णु कुमार शर्मा, नरेश कुमार यादव, लोकेश कुमार शर्मा, मुकेश कुमार स्वामी, अशोक सिंह गुर्जर, हजारी लाल यादव, घनश्याम शर्मा, सीताराम सैनी, गौरव शर्मा, कमलकांत शर्मा, महेश शर्मा, दिनेश दायमा, मेहर सिंह जाट, धर्मपाल यादव, सुरेश कुमार धानका, हरि सिंह यादव, किशोरी लाल यादव, बुद्धाराम यादव, रिंकू गुर्जर, स्टांप वेंडर श्यामसुंदर शर्मा, महेंद्र यादव, गुल्लाराम यादव, विसंबर सैनी, उमेश चौधरी, सुभाष यादव, सुल्तान यादव, महेंद्र सिंघल, सुरेश गुर्जर, सुनील अठावाल, सूर्यकांत सैनी, टीटू अठावाल, रामसिंह सैनी आदि अधिवक्तागण मौजूद रहे।

अभिभाषक संघ पावटा ने अध्यक्ष ओमप्रकाश सैनी के नेतृत्व में उपखंड अधिकारी पावटा कपिल उपाध्याय को सीएम भजनलाल शर्मा के नाम ज्ञापन सौंपा।

एसआई 3 साल से अधिकारियों के चक्कर काट रहा

भरतपुर (निस)। भरतपुर में विजय नगर कॉलोनी के रहने वाले एक रिटायर्ड सब इंस्पेक्टर ने अतिक्रमण के एक मामले में 3 साल से अधिकारियों के चक्कर काटने की बात कही। उनका कहना है कि पड़ोसी आरएसी कॉन्स्टेबल ने सरकारी जमीन पर कब्जा कर लिया है। इससे आने-जाने में दिक्कत होती है। आरोप है कि अधिकारी सुनवाई नहीं कर रहे । रिटायर्ड एसआई गोवर्धन सिंह ने बताया- मेरे मकान के बगल में अतर सिंह नाम के व्यक्ति का प्लाट है। अतर सिंह आर ए सी में नौकरी करता है। उसने जब मकान बनाया तो दीवार को आगे बढ़ाकर सरकारी जमीन पर अतिक्रमण कर लिया। मैं तीन साल से परेशान हूं। मैंने नगर निगम, कलेक्टर की जनसुनवाई में शिकायत दे दी है। कोई कार्रवाई नहीं हुई है। नगर निगम की टीम जाती है। गोवर्धन सिंह ने कहा- मेरे घर के गेट के आगे 20 फीट लंबा पाइप लगाकर पानी चलाया हुआ है। जो वहां खाली जगह पड़ी है उस पर अतर सिंह निर्माण कर रहा है अगर नगर निगम अतिक्रमण हटवाकर रोड बनवा दे तो समस्या का समाधान हो जाएगा। मैंने संभागीय आयुक्त के यहां ज्ञापन दिया है। गोवर्धन सिंह ने बताया - मैं पिछले 3 साल से अधिकारियों के चक्कर काट रहा हूं लेकिन मेरी कोई सुनवाई नहीं होती। नगर निगम की टीम जाती है अतिक्रमण को तोड़कर आ जाती है और मलबे को वहीं छोड आती है। अतर सिंह दोबारा निर्माण करवाया देता है। मैं दिल्ली पुलिस में सब इंस्पेक्टर के पद से रिटायर्ड हो चुका हूं। अतर सिंह ने अपने प्लाट से 10 फीट आगे तक अतिक्रमण किया हुआ है।

भरतपुर में विजय नगर कॉलोनी के रहने वाले एक रिटायर्ड सब इंस्पेक्टर ने अतिक्रमण के एक मामले में अधिकारियों से शिकायत की।

भरतपुर में दो बहनों से छेड़खानी व मारपीट

भरतपुर (निस)। चिकसाना थाना क्षेत्र में दो युवतियों के साथ छेडखानी और मारपीट का मामला सामने आया है। दोनों युवतियों को बेहोशी की हालत में खेत में पाया गया था। होश आने पर युवतियों ने पुलिस को बताया कि कोचिंग जाते समय कुछ युवक उनका पीछा करते थे और शाम को टहलने गईं तो आधा दर्जन लोगों ने उनके साथ छेडखानी की। विरोध करने पर बेरहमी से पिटाई की गई, दोनों युवतियों का इलाज आरबीएम अस्पताल में चल रहा है,पुलिस ने घटना के बारे में दोनों युवतियों से जानकारी की है.पुलिस मामले की जांच कर रही है.मामला दर्ज होने के बाद आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

सर्वसमाज महासभा की बैठक में सामाजिक कार्यों पर चर्चा

भरतपुर (निस)। सर्वसमाज महासभा जिला भरतपुर की बैठक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई, बैठक जिलाध्यक्ष ओमप्रकाश सिंघल की अध्यक्षता में नई मण्डी स्थित जिला कार्यालय पर समाज के अनेक वरिष्ठजन पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में हुई।

बैठक का शुभारम्भ सर्वधर्म प्रार्थना और गायत्री मंच के उच्चारण के साथ हुआ। बैठक में समाज की एकता, संगठन की मजबूती, शिक्षा, सामाजिक उत्थान और आने वाले समय में किये जाने वाले सामाजिक कार्यों पर विस्तृत चर्चा हुई। सभी सदस्यों एवं पदाधिकारियों ने एक दूसरे को अपना परिचय दिया एवं तय हुआ कि आगामी माह में सभी जाति विरादरी के अध्यचक्ष, मंत्रीयों एवं पदाधिकारियों के साथ एक मीटिंग का आयोजन कर समाज के उत्थान, शिक्षा, संस्कार और जरूरतमंद वर्ग की सहायता के सामूहिक प्रयास किये जायें।

बैठक में राष्ट्रीय महासचिव अनिल भारद्वाज का अतिथि के रूप में सम्मान किया गया। अध्यक्ष ओमप्रकाश सिंघल ने कहा कि आगामी दुर्गा अष्टमी पर महिला मोर्चा द्वारा अलग-2 वर्गों की 5 कन्याओं का पूजन कार्यक्रम भी रखा गया है। बैठक में संरक्षक जीवनलाल शर्मा, देवेन्द्र भारद्वाज, पवन कुमार, अमन चौधरी, एड. श्वेता यादव महिला अध्यक्ष, लक्ष्मी कुमारी महिला उपाध्यक्ष, प्रेमचंद लवानियां, उमेश गोयल, धर्मवीर सिंह तुहिया, गौरव पाराशर संगठन मंत्री, संरक्षक राजेन्द्र डंडौतिया, राष्ट्रीय सचिव के.के. शर्मा, सूर्यदत्त पांचाल, राजन सिंह, देशराज सिंह एवं बयाना के सौरभ शर्मा उपस्थित रहे। डॉ. देवेन्द्र भारद्वाज द्वारा नवरात्रि के मौके पर सेवा बस्तियों में जाकर हवन कार्यक्रम की रूपरेखा भी बनाई गई। संगठन मंत्री गौरव पाराशर द्वारा 31 अगस्त के घरेलू कामकाज करने वाले महिला की पुत्री के विवाह में स्टील की आलमारी देने का संकल्प लिया गया। अंत में सभी उपस्थित सदस्यों ने समाज हित में निरंतर कार्य करते रहने का संकल्प लिया।

जनसुनवाई में जिलेभर से आए करीब 215 परिवादियों ने बताई अपनी समस्याएं

अलवर। पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा ने आज सर्किट हाउस में जनसुनवाई कर आमजन की परिवेदनाओं को सुनकर उनके त्वरित निराकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। जनसुनवाई में जिलेभर से आए करीब 215 परिवादियों ने अपनी परिवेदनाएं दी।

वन राज्य मंत्री शर्मा ने कहा कि

- **जनसुनवाई का उद्देश्य आमजन को तत्काल राहत प्रदान कर उनको मूतभूत सुविधाओं का लाभ प्रदान करना : मंत्री शर्मा**

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के दिशा निर्देशानुसार आमजन की समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए सतत रूप से जनसुनवाई आयोजित की जाती है। जनसुनवाई का मुख्य उद्देश्य आमजन को तत्काल राहत प्रदान कर उनको मूतभूत सुविधाओं का लाभ प्रदान करना है।वन राज्य मंत्री की जनसुनवाई में पेयजल, बिजली, चिकित्सा, सडक़, स्थानांतरण, पुलिस, अतिक्रमण आदि की परिवेदनाएं प्रमुख रही, जिस पर मंत्री श्री शर्मा ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये कि परिवेदनाओं का गुणवत्ता के साथ त्वरित निराकरण करें तथा जो परिवेदना जयपुर से संबंधित है उनका भी निस्तारण समयबद्ध रूप में करावे। जनसुनवाई में अलवर शहर के वार्ड नंबर 29, नेहरू नगर गुरुद्वारा के पास, रामायणी हनुमान जी के पास एवं वार्ड नंबर 35 व 27 में श्री फेस बोरिंग कराने, जय अंबे कॉलोनी, मोती नगर विस्तार कॉलोनी, वार्ड नंबर 52 साठ फीट रोड तथा कंगाल हाथा में पानी की समस्या पर जलदाय विभाग के अधिशासी अभियंता को यथाशीघ्र समाधान निकाल कर पेयजल आपूर्ति सुचारू कराने एवं नई बोरिंगो के प्रस्ताव तैयार करने व ड्रिल हो चुकी बोरिंग के 27 अगस्त तक लाइन मिलान कराने के निर्देश दिए। वहीं जगन्नाथ मंदिर के पास के क्षेत्र से पहुंची महिलाओं ने बोरिंग कराने के लिए मीणावाटी गीत गाकर वन राज्यमंत्री श्री संजय शर्मा का धनयवाद ज्ञापित किया। इसी प्रकार नेहरू नगर वार्ड नंबर 45 में सडक़ निर्माण, हाउसिंग बोर्ड मनु मार्ग कॉलोनी में जल भराव, मोहल्ला सेठ जी की बावडी में सडक़ की साफ-सफाई व अस्थाई अतिक्रमण हटवाने, शिव कॉलोनी में साफ-सफाई आदि की परिवादनाओं पर संबंधित अधिकारियों को त्वरित कार्यवाही कर निश्चित समय सीमा में समस्या समाधान करने के निर्देश दिए।

मंत्री संजय शर्मा ने जनसुनवाई कर आमजन की परिवेदनाओं को सुनकर उनके त्वरित निराकरण के निर्देश दिए।

राजस्थान राज्य सहकारी आवासन संघ लि., जयपुर
5 वीं व 6ठीं मंजिल, नेहरू सहकार भवन, 22 गोदाम सर्किल, जयपुर
Ph.: 0141-2741805, E-mail: rschfjaipur@yahoo.com
Office website: www.rschf.org

क्रमांक : 127/25 **आम सूचना** दिनांक: 21.08.2025

संघ की आवासीय योजना कमला नेहरू नगर, अजमेर रोड़, जयपुर का भवन संख्या-2-ज-16 श्री गोपाल लाल शर्मा को आवंटित किया गया था. जिसकी कन्वेंस डीड एवं परप्यूचल लीज जारी कर दिनांक 15.03.1996 को रजिस्ट्री करवा दी गई है। श्री शर्मा के उक्त भवन को जरिये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र श्रीमती तारा बैजल पत्नि श्री विजय बैजल द्वारा दिनांक 15.06.1996 को क्रय किया गया। श्रीमती बैजल की मृत्यु हो जाने के कारण उनके पति श्री विजय बैजल एवं पुत्र श्री सिद्धार्थ बैजल द्वारा उनका मृत्यु प्रमाण पत्र एवं आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत कर उनके नाम संयुक्त रूप से उक्त भवन ट्रांसफर करने हेतु आवेदन किया गया है। जिस किसी को उक्त भवन के हस्तातरण पर आपत्ति हो, तो संघ कार्यालय में 15 दिवस में प्रमाण सहित प्रस्तुत करें, अन्यथा भवन संख्या 2-ज-16, कमला नेहरू नगर, अजमेर रोड़, जयपुर को संयुक्त रूप से श्री विजय बैजल एवं श्री सिद्धार्थ बैजल के नाम हस्तांतरण कर दिया जावेगा। (योगेश शर्मा) निदेशक
राजस्थान राज्य सहकारी आवासन संघ लि. जयपुर

आम सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे **मकान नं. 22/ए-4, प्रताप नगर, जयपुर** का **Original Allotment Letter No. 77 Date 11.04.2007** जो 21.05.2025 को खो गया है जिसकी रिपोर्ट एल.आर. नं. **2864406/2025** दर्ज करा दी गई है। **प्रतिमा श्रीवास्तव C/o शिल्प कुमार ने एस.बी.आई. में लोन हेतु आवेदन किया है।** यदि किसी व्यक्ति या संस्था को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन तिथि से 7 दिवस में सम्पर्क करें। **प्रतिमा श्रीवास्तव C/o शिल्प कुमार** Flat No. 02, Sanrachna Apartment in Front of MBS Hospital, Nayapura, Kota PO-Kota, District-Kota, Rajasthan-324001

शिल्प कुमार +91 9509519958

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर
समस्त संबंधित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर : DEV/JAIPUR-I/TRUST/2025/537

चूंकि प्रार्थी श्री RAJESH VIJAYVARGIA, 50, GANGA VIHAR COLONY, BHANKROTA, JAIPUR ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास GANGA VIHAR COLONY VIKAS SAMITI CHARITABLE TRUST, 50, GANGA VIHAR COLONY, BHANKROTA, JAIPUR के संबंध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है। अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत शक्तियों के प्रयोग में प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के संबंध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे। और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा। आज दिनांक 19-08-2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 27-10-2025
सहायक आयुक्त, देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर
समस्त संबंधित व्यक्तियों को
मुकदमा नम्बर : DEV/JAIPUR-I/TRUST/2025/529

चूंकि प्रार्थी श्री Bhupesh Kumar Yadav, Nihalpura, Neemrana, Akleempura, Alwar,-301703 ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत प्रन्यास एमएनआईटी जयपुर पूर्व छात्र संघ, RELIEF TO POOR, EDUCATION के संबंध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है। अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत शक्तियों के प्रयोग में प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के संबंध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे। और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा। आज दिनांक 19-08-2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 29-10-2025
सहायक आयुक्त, देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

सम्मन बनाम कायम मुकाम
(आर्डर 22 रूल 4 जाब्ता दीवानी)
(Govt. Procedure Code Appendix 'B' Form No. 2).
अज अदालत न्यायालय श्रीमान् अपर जिला जज साहब स-3 अजमेर
डॉ. कृष्णबिहारी -बनाम सुश्री उषा अग्रवाल
मुद्दह........ मुदायला..............
दावा बाबत दिवानी वाद स.182/2014
मुकदमा नं.- CS- 17 सन् 2014

बनाम.......
मुसम्मी डॉक्टर अलका गर्ग जी पत्नी स्व. श्री डॉ. अरूण गर्ग, अक्षत, श्री आयुष,गर्ग नाबालिक जरियेप्राकृतिक माता संरक्षिका डॉ. अलका गर्ग चूंकि केयरवेल हॉस्पीटल प्लॉट नं. 471, आदर्श नगर, जयपुर ने अदालत में तारीख .... माह .... सन् 2000... को एक 1 प्रार्थना पत्र बनाम 3 कायम मुकाम को जो कि बाद फौत हो गया और चूंकि वादीगण मजकूर ने दरख्वास्त अदालत हाजा में जाहिर करके की है कि आप मुतबयफी- स्वश्री अरूण गर्ग मजकूर को कायम मुकाम जायज हो और इल्मदुआ की है कि बजाय उसके आप 2 डॉ. अलका गर्ग बनाये जाओ।
जाहिर वजरिये हाजा बगर्ज जवाबदेही 1'... आपको तारीख 29 माह 08 सन् 2025 को अदालत हाजा में हाजिर होने के लिये तलब किया जाता है और तारीख मुकर्रर पर आपके हाजिर न होने पर मुकदमा आपकी गैर हाजिरी में सुना व फैसला किया जायेगा। बसब्त मेरे दस्तखत व मुहर अदालत के आज तारीख 13 माह 08 सन् 2025 को जारी किया गया।

दस्तखत
रीडर
(मुहर) अपर जिला व सेशन न्यायाधीश
संख्या-3 अजमेर

सम्मन बनाम कायम मुकाम
(आर्डर 22 रूल 4 जाब्ता दीवानी)
(Govt. Procedure Code Appendix 'B' Form No. 2).
अज अदालत न्यायालय श्रीमान् अपर जिला जज साहब स-3 अजमेर
डॉ. कृष्णबिहारी -बनाम सुश्री उषा अग्रवाल
मुद्दह........ मुदायला..............
दावा बाबत दिवानी वाद स.182/2014
मुकदमा नं.- CS- 21 सन् 2014

बनाम.......
मुसम्मी डॉक्टर अलका गर्ग जी पत्नी स्व. श्री डॉ. अरूण गर्ग, अक्षत, श्री आयुष,गर्ग नाबालिक जरियेप्राकृतिक माता संरक्षिका डॉ. अलका गर्ग चूंकि केयरवेल हॉस्पीटल प्लॉट नं. 471, आदर्श नगर, जयपुर ने अदालत में तारीख .... माह .... सन् 2000... को एक 1 प्रार्थना पत्र बनाम 3 कायम मुकाम को जो कि बाद फौत हो गया और चूंकि प्रार्थीगण मजकूर ने दरख्वास्त अदालत हाजा में जाहिर करके की है कि आप मुतबयफी- स्वश्री अरूण गर्ग मजकूर को कायम मुकाम जायज हो और इल्मदुआ की है कि बजाय उसके आप 2 डॉ. अलका गर्ग बनाये जाओ।
जाहिर वजरिये हाजा बगर्ज जवाबदेही 1'... आपको तारीख 29 माह 08 सन् 2025 को अदालत हाजा में हाजिर होने के लिये तलब किया जाता है और तारीख मुकर्रर पर आपके हाजिर न होने पर मुकदमा आपकी गैर हाजिरी में सुना व फैसला किया जायेगा। बसब्त मेरे दस्तखत व मुहर अदालत के आज तारीख 13 माह 08 सन् 2025 को जारी किया गया।

दस्तखत
रीडर
(मुहर) अपर जिला व सेशन न्यायाधीश
संख्या-3 अजमेर

नाम परिवर्तन

मैंने मेरा नाम अंकित कुमार से बदलकर अंकित कुमार गुलाबचन्दानी रख लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावें। अंकित कुमार गुलाबचन्दानी 162/51, सैक्टर 16 प्रताप नगर सांगानेर

मैंने अपना नाम अभय कुमार अवस्थी (ABHAY KUMAR AVASTHI) से बदलकर अभय कुमार अवस्थी (ABHAY KUMAR AWASTHI) पुत्र श्री विशम्बर दयाल अवस्थी रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाए। पता सी-12, एयरपोर्ट एनक्लेव, चित्रकूट नगर जगतपुरा जयपुर

मैं, कुलदीप शर्मा पुत्र श्रीराम शर्मा, निवासी 29-बी, जगदम्बा कॉलोनी, करणी पैलेस, पांच्यावाला, जयपुर। मैंने अपना नाम कुलदीप से बदलकर कुलदीप शर्मा रख लिया है। भविष्य में इसी नाम से जाना जाऊंगा।

I have change my name from Yuvraj Singh to Manuraj Singh S/o Late Major Gajendra Singh for all Future Purpose and my Date of Birth 02 Nov 1980, Resident 52, Gayatri Nagar Vistar, Shipra path Mansarovar Jaipur- 302020

I sarwan Ram S/o hardewa ram resident of suratpura tehsil kuchaman city district deedwana kuchaman rajastan that I have changed my name From SARWAN RAM To SARWAN and sub name Ram . in future called me my name SARWAN for all purposes before district notary kuchaman city rajasthan

I smt patasi legally wedded spouse of Army no 2967544K Ex Hav Late Hanuman singh S/ O Sohan Lal village post Kalyanpur a khurd tehsil Kotputli district Kotputli that i want change my name which is wrongly entered in my husband service record from PATASI DEVI (DOB 25/1/1956) To PATASI (DOB 1/1/1960) vide affidavit dated 19/8/25 before district sub majistrate Kotputli district Kotputli behrore

I neha kanwar W/O late shree jitendra singh tanwar resident of plot no. 5 hari nagar arun vatika khirni phatak road jhotwara jaipur that in my all documents my name is NEHA KANWAR which is correct but my education documents is sangeeta singh Chouhan To NEHA KANWAR in future called me as NEHA KANWAR for all purposes

I kiran is legally wife of Army No JC-675931H Naib Subedar Dharmendra Singh Chouhan Add-143, Shikharji Dham, Dewas Po-Dewas, Dist Dewas MP-455001, my husband service Record my Name Kiran Whereas correct Name Kiran Chouhan vide afdidavit No. CD949098, Date 22.08.25

आम सूचना दिनांक 22.08.2025

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि बाबा आर. एन. गौड़ गृह निर्माण सहकारी समिति लिमिटेड, जयपुर की योजना मंगल मूर्ति विहार, स्थित भापुरा रोड़ सांगानेर जयपुर में स्थित भूखण्ड संख्या ए-16 क्षेत्रफल 122. 22 वर्गगज, दिनांक 04.03.2013 को अन्तहकालीन आवंटन पत्र संख्या 536, रसीद संख्या 536 सदस्य रजाक पुत्र उमराव पता भावसिया, तहसील नसीराबाद, जिला अजमेर को आवंटित कर उक्त असल दस्तावेज सदस्य को सुपुर्द कर कब्जा संभला दिया था। सदस्य रजाक ने उक्त असल दस्तावेजात खो जाने एवं समिति से डुप्लिकेट उक्त दस्तावेजात लेने के लिये समिति के समक्ष आवेदन किया है। उक्त भूखण्ड के सम्बन्ध में यदि कोई रहन, विक्रय या अन्य कोई आपत्ति किसी संस्थान या व्यक्ति को हो या सदस्य रजाक को उक्त भूखण्ड का डुप्लिकेट आवंटन पत्र, रसीद व साईट प्लान जारी किये जाने पर किसी को कोई आपत्ति है तो वह 105, शान्ति नगर, खिरणी फाटक, जयपुर पर प्रकाशन की तिथि से 7 दिवस तक अपनी आपत्ति पेश कर दे अन्यथा उसके बाद किसी प्रकार की कोई आपत्ति स्वीकार नहीं की जावेगी और उसके बाद प्राप्त आपत्तियां शून्य व अमान्य होगी और सदस्य को समिति द्वारा डुप्लिकेट आवंटन पत्र, रसीद व साईट प्लान जारी कर दिया जायेगा।
भंवर सिंह, अध्यक्ष, बाबा आर.एन.गौड़ गृह निर्माण सहकारी समिति लिमिटेड, जयपुर, मो. 9929992240

कार्यालय उप आवासन आयुक्त वृत्त-प्रथम,
राजस्थान आवासन मण्डल, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक:6520 जाहिर आम-सूचना दिनांक:21.08.2025

राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर योजना में आवास / फ्लैट संख्या **192/159 मध्यम आय वर्ग - अ** का आवंटन सुश्री पदमिनी शर्मा पुत्री स्व. श्री नवल चन्द शर्मा को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 4625 दिनांक 30.11.2004 को जारी किया गया था। सुश्री पदमिनी शर्मा द्वारा श्री बाबूलाल शर्मा पुत्र श्री रामपाल शर्मा को दिनांक 29.09.2006 को मुख्यारनामा आम धारक नियुक्त किया गया। श्री बाबूलाल शर्मा द्वारा सुश्री पदमिनी शर्मा के पक्ष में पंजीयन निष्पादन दिनांक 10.10.2006 को करवाया गया। श्री बाबूलाल शर्मा द्वारा मुख्यारआम की हैसियत से पंजीयन पश्चात् उक्त आवास का विक्रय कर श्री श्यामलाल सैनी पुत्र श्री मांगीलाल सैनी को दिनांक 07.11.2006 विक्रय पत्र उप पंजीयक सांगानेर - द्वितीय जयपुर में पंजीकृत करवाया गया। श्री श्यामलाल सैनी द्वारा उक्त आवास को श्रीमती शिवानी सिंह पत्नी श्री रीतेश कुमार को विक्रय कर इनके पक्ष में विक्रय पत्र दिनांक 13.12.2006 को उप पंजीयक (अष्टम्) जयपुर में पंजीकृत करवाया गया। क्रेता/क्रेती श्रीमती शिवानी सिंह पत्नी श्री रीतेश कुमार द्वारा आवासन मण्डल में उक्त आवास पर अपना नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कराने बाबत आवेदन पत्र प्रस्तुत किया हैं। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति / पक्षकार को कोई आपती हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नही हैं, श्रीमती शिवानी सिंह पत्नी श्री रीतेश कुमार का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा। **भवदीय**
सम्पदा प्रबन्धक वृत्त-प्रथम, राज. आवा. मण्डल, जयपुर

bida भिवाड़ी इंटीग्रेटेड विकास प्राधिकरण
एच-5, भगत सिंह कॉलोनी, भिवाड़ी, अलवर
दूरभाष : 01493230819 ई-मेल.bida.bhiwadi@rajasthan.gov.in
क्रमांक : बीडा/आयो/2025/07704/2649/25 दिनांक : 22.08.2025

-: सार्वजनिक विज्ञप्ति :-

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि भिवाड़ी इंटीग्रेटेड विकास प्राधिकरण, बीडा भिवाड़ी द्वारा ग्राम खिजूरीवास तह. तिजारा के ख.न. 965 से 967 व 969, 977 कुल किता 05 कुल रकबा 3.64 है. भूमि की आवासीय प्रयोजनार्थ 90ए दिनांक 06.12.2013 को की जाकर अनुमोदित आवासीय (प्लॉटिड) योजना प्रयोजनार्थ ले-आउट प्लान दिनांक 02.02.2015 को जारी किया गया था. वर्तमान में मै. कल्प बिल्डटैक प्रा.लि. पंजीकृत कार्यालय 10 एल.एस.सी. कालका जी नई दिल्ली जरिये अधिकृत हस्ताक्षरकर्ता श्री चैतन्य गोयल द्वारा उक्त भूमि के आवासीय प्रयोजनार्थ अनुमोदित योजना मानचित्र में संशोधन किये जाने बावत बीडा कार्यालय में आवेदन किया गया है। जिसके क्रम में प्रकरण बीडा स्तरीय ले-आउट प्लान समिति की 42वीं बैठक दिनांक 07.08.2025 में रखा जाकर सशर्त अनुमोदित करने का निर्णय लिया गया है। वर्तमान में मौके पर प्रश्नगत योजना अविकसित है अर्थात भूमि वर्तमान में रिक्त है। अत: पूर्व में दिनांक 02.02.2015 को अनुमोदित योजना मानचित्र में संशोधन किये जाने के संबंध में किसी व्यक्ति/संस्था को कोई आपत्ति/आक्षेप हो तो इस योजना के प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस के अंदर-अंदर कारण मय दस्तावेज सहित इस कार्यालय में प्रस्तुत करें। मियाद अवधि पश्चात प्राप्त आपत्ति/ आक्षेपों पर विचार नहीं किया जावेगा।
(अतुल प्रकाश) आईएएस
मुख्य कार्यकारी अधिकारी, भिवाड़ी इन्टीग्रेटेड विकास प्राधिकरण

कार्यालय ग्राम पंचायत खिदरपुर जादौन पंचायत समिति खण्डार जिला सवाई माधोपुर
क्रमांक : 2025-26/SPL-01 दिनांक : 21.08.2025

ई-निविदा सूचना संख्या 04/2025-26

पंचायत समिति खण्डार के अधीन ग्राम पंचायत खिदरपुर जादौन में मनरेगा, ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग की समस्त योजनाएं में स्वीकृत निर्माण कार्यों के लिये आनुसंगिक सामग्री की आपूर्ति हेतु इच्छुक जीएसटी पंजीकृत निविदादाताओं/फर्मो से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोकूमेंट प्रक्रिया द्वारा दिनांक 31.08.2025 तक सायं 06.00 बजे ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। उक्त निविदा से संबंधित अन्य विवरण एवं दस्तावेज राजस्थान के लोक उपापन पोर्टल https://eproc.rajasthan.gov.in एवं एसपीपीपी पोर्टल https://sppp.rajasthan.gov.in/ पर देखी जा सकती है।
EPROC TENDER ID - 2025_PRD_495595_1
NIB - ZSM2526A0525, UBN - ZSM2526GLOB00591
ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत खिदरपुर जादौन प्रशासक, ग्राम पंचायत खिदरपुर जादौन

कार्यालय सचिव राज. मेडीकेयर रिलिफ सोसायटी, प्राथ. स्वा. केन्द्र खुशखेड़ा (तिजारा) खैरथल-तिजारा

क्रमांक -2025/15 **खुली निविदा सूचना** दिनांक : 20.08.2025

सचिव राजस्थान मेडीकेयर रिलिफ सोसायटी प्राथ. स्वा. केन्द्र खुशखेड़ा (तिजारा) खैरथल-तिजारा द्वारा निम्न सेवाये उपलब्ध कराने हेतु अधिकृत संस्था से निम्नानुसार निविदा आमन्त्रित की जाती है।

क्र. स.	कार्य का नाम	कार्य की अनुमानित लागत	अमानत राशि रू.	निविदा शुल्क रू.	बोली प्रपत्र प्राप्ति की अंतिम तिथि व समय	बोली प्रपत्र जमा कराने की अंतिम तिथि व समय	बोली प्रपत्र खोलने की तिथि व समय
1	2	3	4	5	6	7	8
1	कम्प्यूटर ऑपरेटर मैन विद् मशीन(संविदा)	150000/-	3000.00/-	100.00/-	29.08.2025 12.00 PM	29.08.2025 1.00 PM	29.08.2025 2.00 PM
2	लैब टेक्निशियन (संविदा)(MNJY)	150000/-	3000.00/-		29.08.2025 12.00 PM	29.08.2025 1.00 PM	29.08.2025 2.00 PM

नियम एवं शर्तें :-

1. निविदाऐं दोहरी बिड प्रणाली अनुसार प्रस्तुत करनी होगी। पहला लिफाफा (क) तकनीकी बिड का होगा जिसमें अमानत राशि का डीडी / बैंकर्स चैक, समस्त वांछित डॉक्यूमेंट की प्रमाणित छाया प्रति मय निविदा फार्म लगाया जायेगा। डीडी/बैंकर्स चैक राजस्थान मेडिक्येर रिलीफ सोसाइटी, खुशखेड़ा के नाम से व तिजारा शाखा पर देय होगा। दूसरा लिफाफा (ख) वित्तीय बिड का होगा, जिसमें सिर्फ प्रस्तावित दरें ही दी जावेगी । तकनीकी बिड में सफल निविदादाताओं की ही वित्तीय बिड खोली जावेगी ।
2. प्राप्त निविदाऐं दिनांक 29.08.2025 को दोपहर 1.00 तक जमा की जायेगी तथा 29.08.2025 को दोपहर 2.00 निविदा समिति के सदस्यों द्वारा उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जावेगी ।
3. तकनीकी विवरण एवं निविदा की शर्ते निविदा प्रपत्र के साथ उपलब्ध है। जो कार्यालय समय में निर्धारित शुल्क जमा करा प्राप्त की जा सकती है ।
4. अधिक जानकारी http://sppp.rajasthan.gov.in वेबसाईट पर उपलब्ध है।
5. निविदा को स्वीकृत / अस्वीकृत करने के सम्बन्ध मे समस्त अधिकार कमेटी के पास रहेगा।

सचिव राज. मेडीकेयर रिलिफ सोसायटी
प्राथ0 स्वा0 केन्द्र खुशखेड़ा, तिजारा

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

स्टेशन रोड़ शाखा, रिजर्व पुलिस लाईन के सामने जयपुर, राजस्थान 302001
ई-मेल: stajai@bankofbaroda.com

अचल संपत्ति के विक्रय हेतु विक्रय नोटिस
''परिशिष्ट-IV-क'' [नियम 8(6) का परन्तुक देखें]

प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 8(6) के परन्तुक के साथ पठित वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुर्नगठन तथा प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अधीन अचल आस्तियों के विक्रय हेतु ई-नीलामी विक्रय नोटिस।

आम लोगों को तथा विशेष रूप से उधार लेने वाले और प्रत्याभूति-दाता को यह नोटिस दिया जाता है कि नीचे वर्णित अचल संपत्ति जो प्रतिभूत लेनदार के पास गिरवी है, का कब्जा प्रतिभूत लेनदार के प्राधिकृत अधिकारी द्वारा लिया गया है, को **''जैसी है जहां है'', ''जो है जैसी है'' और ''जितनी भी उपलब्ध है''** के आधार पर **बैंक ऑफ बड़ौदा,** प्रतिभूत लेनदार की बकाया राशि नीचे उल्लेखित खातें की वसूली हेतु बेचा जाएगा। ऋणियों/बंधककर्ताओं/जमानतदारों/प्रतिभूत आस्तियों/बकायों/आरक्षित मूल्य/ई-नीलामी की दिनांक व समय, धरोहर राशि एवं बोली वृद्धि राशि का विवरण नीचे वर्णित है-

क्रं./लोट सं.	ऋणियों/जमानतदारों/ बंधककर्ताओं के नाम एवं पते	ज्ञात संपत्ति के साथ अचल संपत्ति का संक्षिप्त विवरण, यदि कोई हो	कुल बकाया राशि मांग पत्र के अनुसार	ई-नीलामी की दिनांक / ई-नीलामी का समय प्रारम्भ समय से समाप्ति समय	आरक्षित मूल्य / धरोहर राशि (ईएमडी) / बोली वृद्धि राशि	कब्जे की स्थिति (सांकेतिक/ वास्तविक)	संपत्ति निरीक्षण की दिनांक व समय
1.	**मैसर्स गोविन्दा टेक्सटाईल** **फैक्ट्री पता-** प्लॉट नं. 02, प्रथम तल, श्री राम विहार, सांगानेर, रीको कांटा के पास, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान 302020 **रजि. पता-** ए-36, न्यू सचिवालय विहार कल्याणपुरा, इंडस्ट्रीयल एरिया केशवाना, जयपुर, राजस्थान 303108 **प्रोपराईटर-** **श्री गोविन्द राठी पुत्र श्री ओमप्रकाश राठी** फ्लैट नं. बी-2206, 21वां तल, स्कॉय टेरेसेज, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान 302020 एवं 320, घन्चियों का बास महामंदिर, जोधपुर कचेरी, जोधपुर, राजस्थान 342006 एवं 32, आदर्श नगर, लाल सागर, जोधपुर, राजस्थान 342007	श्री गोविन्द राठी पुत्र श्री ओमप्रकाश राठी के नाम आवासीय सम्पत्ति जो यूनिट नं. सी-82, द्वितीय तल, टॉवर-सी, यूनिक न्यू टाऊन फेज-II, गाँव महल, जगतपुरा, तहसील सांगानेर, जिला जयपुर, राजस्थान पर स्थित है, जिसका बिल्ड अप एरिया 847.55 वर्ग फीट (कार्पेट एरिया 638.64 वर्ग फीट) है। **सीमाएं-** पूर्व: खुला आकाश, पश्चिम: खुला आकाश, उत्तर: फ्लैट नं. सी-92, दक्षिण: गलियारा एवं फ्लैट नं. सी-72 **अन्य ऋण भार: ज्ञात नहीं**	रूपये 83,97,222.74 दिनांक 26.08.2024 को बकाया एवं आगे का ब्याज व अन्य वसूली खर्चे इत्यादि।	09.09.2025 / दोपहर 02:00 बजे से सांय 06:00 बजे तक	**आरक्षित मूल्य-** रूपये 53,39,000/- **धरोहर राशि-** रूपये 5,33,900/- **बोली वृद्धि राशि-** रूपये 20,000/-	वास्तविक	04.09.2025 दोपहर 12:00 बजे से दोपहर 03:00 बजे तक

विक्रय के निबंधन और शर्तो के ब्यौरे के लिए कृपया नीचे दिए गए वेबसाइट अर्थात https://www.bankofbaroda.in/e-auction.htm एवं ऑनलाईन नीलामी पोर्टल https://baanknet.com देखें। इसके अलावा संभावित बोलीदाता प्राधिकृत अधिकारी से **दूरभाष नं.- 0141-2378365, मोबाईल नं. 8094018326** पर संपर्क कर सकते है।

दिनांक: 22.08.2025
स्थान: जयपुर

हस्ता.
प्राधिकृत अधिकारी
बैंक ऑफ बड़ौदा

संक्षिप्त

ग्रामीणों की समस्याएं सुनी

बौंली- बामनवास। पंचायत समिति बौंली की ग्राम पंचायत झनून के सभागार में सवाई माधोपुर जिला कलेक्टर कानाराम ने रात्रि चौपाल आयोजित कर ग्रामीणों की समस्याएं सुनी एवं मौके पर ही संबंधित अधिकारियों को त्वरित व गुणवत्तापूर्ण समाधान करने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ने आयोजित रात्रि चौपाल में उपस्थित ग्रामीण व किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में समय से बीमा करवाने, खरीफ फसल की ई-गिरदावरी व किसान गिरदावरी कराने की अपील की, उन्होंने किसानों को राज किसान ऐप का उपयोग कर स्वयं बीमा करने हेतु प्रोत्साहित किया, एवं राजस्व अधिकारियों को 40 किसानों को बीमा रजिस्ट्रेशन करने के लिए कार्यशाला आयोजित कर जागरूक करने के निर्देश दिए। रात्रि चौपाल के दौरान सामाजिक सुरक्षा पेंशन को लेकर जिला कलेक्टर कानाराम ने कहा कि प्रत्येक वरिष्ठ जनों को चाहे उनके पुत्र सेवा करें या ना करें, लेकिन सरकार उनका हमेशा ध्यान रखेगी। रात्रि चौपाल के दौरान सड़क मरम्मत कराने, खेल मैदान से अतिक्रमण हटाने, झुके बिजली के तार व पोल बदलने, जल निकासी की व्यवस्था कराने, आबादी भूमि के प्रस्ताव, खेल मैदान की चार दिवारी सहित अन्य मांगे रखी, कलेक्टर कानाराम ने सभी परिवादों को गंभीरता से सुनकर संबंधित विभागों के अधिकारियों को समयबद्ध निस्तारण करने के निर्देश दिए। रात्रि चौपाल के दौरान महिला एवं बाल विकास अधिकारी पारूल चौधरी, एसडीएम चंद्र प्रकाश वर्मा, तहसीलदार, डॉक्टर लोकेश मीणा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नीलकमल मीणा, प्रधान कृष्ण पोसवाल, पंचायत प्रशासक सीमा देवी सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी व आमजन उपस्थित थे।

भोनावास का जवान लापता

पावटा। उत्तराखण्ड में ग्राम भोनावास के लापता जवान की सकुशल वापसी को लेकर विधायक कुलदीप धनकड़ ने रक्षा मंत्री राजनाथ को पत्र लिखा है। विधायक कुलदीप धनकड़ ने बताया कि उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के धराली गांव में 5 अगस्त 2025 को बादल फटने की भीषण घटना ने भारी तबाही मचाई। इस प्राकृतिक आपदा में कोटपूतली बहरोड़ जिले के ग्राम भोनावास का जवान भीम सिंह पुत्र महेश सिंह लापता है। जवान भीम सिंह सिंह भारतीय सेना की राजपूताना राइफल्स में तैनाती के दौरान 5 अगस्त के बाद से लापता है। पूरा परिवार चिंतित है और जवान की सूचना का इंतजार कर रहा है। इस हादसे में लापता जवान के माता-पिता, भाई सहित पूरा परिवार चिंतित व सदमे में है। समस्त गांव व क्षेत्र की जनता सरकार व प्रशासन से जवान के सकुशल घर वापसी की अपील कर रही है। विधायक कुलदीप धनकड़ ने प्रधानमंत्री मोदी व मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से जवान को सकुशल ढूंढ कर जल्दी वापस लाने की अपील की है।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आज

भरतपुर (निस)। हरिदत्त ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के अंतर्गत हरिदत्त डिग्री कॉलेज के द्वारा एच. डी. टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट एवं हरिदत्त कॉलेज ऑफ फार्मेसी के संयुक्त तत्वाधान में ओपन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन 23 अगस्त को हरिदत्त ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के ऑडिटोरियम में किया जाएगा जिसमें हरिदत्त ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स के अंतर्गत सभी संस्थाओं के विद्यार्थी भाग लेंगे।

पत्र लिखा

शाहपुरा। क्षेत्रीय विधायक मनीष यादव ने जिला कलेक्टर जयपुर को राजकीय विद्यालयों के विधालय भवनों, आंगनबाडी केन्द्र व अन्य कई राजकीय भवनों की से मरम्मत के लिए पत्र लिखा। विधायक यादव ने कहा कि क्षेत्र में संचालित राजकीय विद्यालयों के विधालय भवनों, आंगनबाडी केन्द्र व अन्य कई राजकीय भवन मानसून वर्ष 2025 में भारी बारिश से जर्जर हो गये है। जिनकी मरम्मत के लिए राज्य आपदा मोचन निधि से राशि स्वीकृत करवाकर जारी करवाएं ताकि विद्यार्थी व अन्य कार्मिक भयमुक्त वातावरण में अध्ययन व राजकार्य कर सके।

समिति की बैठक 24 को

भरतपुर (निस)। भरतपुर नगर निगम पेन्शनर्स कल्याण समिति की मासिक साधारण बैठक 24 अगस्त रविवार को सांय 4 बजे से स्थान नगर निगम भरतपुर के मीटिंग हॉल में आयोजित की जायेगी।

बैठक में पेंशनर्स की विभिन्न

अधिकारी सुशासन की दिशा में कार्य करें : सुधांशु पंत

अलवर मिनी सचिवालय में अधिकारियों की बैठक लेते मुख्य सचिव सुधांशु पंत।

- मुख्य सचिव ने केंद्र व राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की समीक्षा बैठक की।

अलवर। मुख्य सचिव सुधांश पंत ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सरकार की मंशा के अनुरूप योजनाओं, विकास कार्यों व जन अभाव अभियोगों का समयबद्ध निस्तारण कर गुड गवर्नेंस अंतिम छोर तक पहुंचाने की दिशा में सजगता और सकारात्मकता के साथ कार्य करें। मुख्य सचिव सुधांश पंत शुक्रवार को अलवर के दौरे पर पहुंचे थे। उन्होंने मिनी सचिवालय के कलेक्ट्रेट सभागार में जिला स्तरीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक ली। बैठक में उन्होंने केन्द्र व राज्य सरकार की योजनाओं, विकास कार्यों,बजट घोषणाओं,जिलें की कानून व्यवस्था,ई-फाईलिंग, राजस्व अर्जन, संपर्क पोर्टल, स्वच्छता अभियान की प्रगति, अवैध खनन व अवैध शराब पर लगाम, नशे की रोकथाम, अधिकारियों के निरीक्षण व मॉनिटरिंग, विद्युत व पेयजल आपूर्ति, राजस्व प्रकरणों , स्किल अपडेडेशन व राईजिंग राजस्थान एमओयू प्रगति सहित विभिन्न विषयों की विस्तृत से चर्चा कर समीक्षा की मुख्य सचिव ने अधिकारियों से पिछले माह में निस्तारित की गई फाइलों की संख्या, औसत निस्तारण समय, संचयी कुल फाइल संख्या एवं औसत निस्तारण समय की जानकारी ली। जिसमें कलेक्ट्रेट का ई-फाइल निस्तारण का समय औसत समय करीब एक घण्टा मिला। उन्होंने अन्य विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि कलेक्ट्रेट की तर्ज पर ई-फाइलिंग कार्य करें। उन्होंने जिला कलेक्टर को निर्देश दिए कि विभागों औसत निस्तारण समय को कम करने के लिए साप्ताहिक मॉनिटरिंग करें। जिन अधिकारियों का औसत निस्तारण समय अधिक पाया गया, उन्हें सार्वजनिक उपयोगिताओं एवं जन सेवाओं में विलंब न करने तथा गुणवत्ता युक्त निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। वहीं कम समय में फाइल निस्तारण करने वाले अधिकारियों की सराहना भी की गई। उन्होंने ई-फाइल प्रणाली की उपयोगिता पर कहा कि यह सुविधा इतनी लचीली है कि अधिकारी मोबाइल फोन से भी किसी भी समय, किसी भी स्थान से निस्तारण कर सकते हैं। इसलिए इसे गंभीरता से अपनाना आवश्यक है। राजकीय कार्यों में दक्षता बढ़ाने के लिए ई-फाईलिंग सिस्टम पर कार्य करें। आमजन को केन्द्र में रखकर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण किया जाए। उन्होंने जिलें में अवैध खनन व अवैध शराब के विरूद्ध निरन्तर संयुक्त कार्यवाही कर इस पर पूर्णतः लगाम लगाना के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिए कि जिले में नशीले पदार्थों की रोकथाम के लिए लगातार कार्यवाही होनी चाहिए। इस बारे में जागरूकता अभियान भी चलाएं। उन्होंने कहा कि सीएलजी मीटिंग नियमित रूप से आयोजित की जाए। बैठक में जिला कलेक्टर डॉ अर्तिका शुक्ला, जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर चौधरी, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी रविन्द्र सालुखे गौरव,यूआईटी की सचिव धाईगुडे स्नेहल नाना, एडीएम प्रथम मुकेश कायथवाल, एडीएम द्वितीय योगेश डागुर, एडीएम शहर बीना महावर, जलदाय विभाग के अति. मुख्य अभियंता भवानी सिंह शेखावत सहित अनेक विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

ओपी बायला उपाध्यक्ष बने

पावटा । राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी संगठन महासचिव ललित तूनवाल द्वारा पीसीसी अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा के निर्देशानुसार एवं जयपुर जिला देहात कांग्रेस कमेटी के जिलाध्यक्ष गोपाल मीणा व ब्लॉक कांग्रेस कमेटी कोटपूतली के अध्यक्ष प्रकाश चंद सैनी की अनुशंसा पर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी कोटपूतली की कार्यकारिणी की घोषणा की गई। कांग्रेस नेता प्रकाश चंद सैनी की अध्यक्षता में गठित ब्लॉक कांग्रेस में ओ पी बायला को उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी सुपुर्द की गई है। ओ बायला ने पीसीसी अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा, पूर्व सीएम अशोक गहलोत, पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट व नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली का आभार जताया है।

आदर्श रामलीला मंडल पावटा को मिला उपखंड स्तरीय सम्मान

पावटा। आदर्श रामलीला मंडल पावटा को विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड व उपखंड अधिकारी कपिल कुमार उपाध्याय द्वारा उपखंड स्तरीय सम्मान प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। विधायक कुलदीप धनकड़ ने कहा कि आदर्श रामलीला मंडल पावटा के स्थानीय कलाकारों के उत्कृष्ट अभिनय एवं शानदार प्रस्तुति की उपस्थिति जनमानस में काफी सराहना की जाती है। रामलीला का मंचन न केवल मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के आदर्शों को आत्मसात करने के लिए प्रेरित करती है बल्कि कलाकारों के उत्कृष्ट अभिनय श्री रामचरितमानस के प्रति समर्पित भी करती है। उन्होंने रामलीला मंचन के दौरान कलाकारों के अभिनय की सराहना करते हुए कहा कि रामलीला मंचन करने वाले सभी कलाकार स्थानीय लोग है। ज्यों कि 15 दिन तक ये स्थानीय लोग अपनी नौकरी पर भी जाते है, कोई व्यापार करता है और वही रिहर्सल भी करते है व रात को रामलीला मंचन भी करते है। जिसका किसी भी प्रकार का किसी भी तरह का कोई शुल्क नहीं लेते है व निशुल्क सेवा भावना से भगवान राम की सेवा करते है। ज्योंकि सराहनीय है। इसके लिए आदर्श रामलीला मंडल पावटा संरक्षक अमरनाथ पटेल, संरक्षक उमेश चंद्र टांक, वीरेंद्र बंसल, महेश पारीक, सुभाष गोयल, सुरेश शर्मा, अध्यक्ष योगेश शर्मा, सचिव चेतन शर्मा, डायरेक्टर मोहन कुमार गौड, उपाध्यक्ष उपाध्यक्ष नरेंद्र गौड, रामशरण बोहरा, सोनू अठावाल, कोषाध्यक्ष विकास शर्मा व ललित शर्मा सहित आदर्श रामलीला मंडल पावटा की कार्यकारिणी व पदाधिकारी एवं सदस्यो ने विधायक धनकड व प्रशासन का आभार जताया।

रिक्त पदों को भरने की मांग

बौंली- बामनवास । राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा राजकीय महात्मा गांधी विद्यालयों में चल रहे रिक्त पदों को भरने की मांग को लेकर वंचित शिक्षकों एवं शिक्षक संगठनों ने पुनः काउंसलिंग करा कर इन पदों को भरने की मांग की है। राजस्थान शिक्षा विभाग द्वारा राजकीय महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में प्रधानाचार्य सहित शिक्षकों के विभिन्न पदों पर पदस्थापन के लिए माह अगस्त में परीक्षा करवाई थी, जिसमें 40 अंक अर्जित करने वालों से काउंसलिंग कराई, विभाग द्वारा पहले 5 जिलों को चयन कराया फिर एक जिले का चयन कराया, इस कारण कई जिलों में तो 40 अंक प्राप्त करने वाले शिक्षकों का चयन हो गया फिर भी कई पद रिक्त रह गए।

पावटा के रामपुरा में सड़क पर बह रहा गंदा पानी

पावटा । ग्राम पंचायत ग्राम पंचायत पण्डितपुरा के राजस्व ग्राम रामपुरा के ग्रामीणों ने पावटा उपखंड अधिकारी कपिल कुमार को ज्ञापन सौंप अवगत करवाया कि गांव में गंदगी के कारण लोगों का जीना दुश्वार हो गया है।

नाली न बनने और सड़क पर पानी भरा होने के कारण सड़क पर गंदगी फैली हुई है, जिससे ग्रामीणों, राहगीरों, स्कूली बच्चों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीणों का आरोप है कि वह कई वर्षों से इस समस्या को झेल रहे हैं। राजस्व ग्राम रामपुरा में गंदे पानी की निकासी के लिए नालियां न बनने से सड़क पर हमेशा पानी भरा रहता है। यहां के लोगों का कहना है कि वह शिकायत करके थक चुके हैं पर विकास के नाम पर झूठा आश्वासन दिया जा रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि हर गाँव गली में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है लेकिन इस गाँव में कहने के बाद भी सफाई नहीं होती। नालियां जो बनीं भी हैं वह भरी पड़ी हैं। सड़क पर पानी भरा है वह अलग। पानी जमा होने से मच्छर पनप रहे हैं जिससे लोगों में डेंगू होने का खतरा बना है। इसलिए ग्रामीणों की मांग है कि नाली जल्दी बनवाया जाए ताकि सड़क पर पानी जमा पानी ना हो व गंदगी ना फैले।

- ग्राम रामपुरा के ग्रामीणों ने पावटा उपखंड अधिकारी कपिल कुमार को ज्ञापन सौंप अवगत करवाया कि गांव में गंदगी के कारण लोगों का जीना दुश्वार हो गया है।

पावटा उपखंड अधिकारी कपिल कुमार को ज्ञापन सौंप सड़क पर बह रहे गंदे पानी से निजात की मांग की है।

'कृमि नाशक दवा से कुपोषण से बचाव'

कुम्हेर भरतपुर (निस)। बाल विकास परियोजना कुम्हेर के अंतर्गत आंगनवाडी केंद्र वार्ड 14 पर कृमि मुक्ति दिवस का शुभारंभ उपनिदेशक महिला एवं बाल विकास विभाग डीग, सिकरामा ग्राम चोयल द्वारा किया गया। उन्होंने बच्चों को कृमि नाशक दवा पिलाकर कार्यक्रम की शुरुआत की और सभी आंगनवाडी केंद्रों पर एक वर्ष से अधिक आयु के पंजीकृत बच्चों को उम्रानुसार एल्बेंडाजोल की खुराक देने के निर्देश दिए।

सीडीपीओ महेन्द्र अवस्थी ने जानकारी देते हुए बताया कि महिलाओं एवं बच्चों में एनीमिया की रोकथाम और कुपोषण के नियंत्रण में यह दवा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसमें 1 से 6 वर्ष तक के बच्चे तथा 19 वर्ष तक के बालक-बालिकाएं को लाभान्वित किया जाएगा । इसमें 1 से 2 वर्ष के बच्चों हेतु आधी गोली (200 एमजी) तथा 2 से 19 वर्ष के बच्चों हेतु एक पूरी गोली (400 एमजी) दी जाएगी । उन्होंने कहा कि एल्बेंडाजोल हमेशा भोजन के बाद दें। जो बच्चे गोली नहीं निगल सकते, उन्हें गोली चूर कर या चबाकर पानी के साथ दें। बीमार बच्चों या अन्य दवाइयों का सेवन करने वालों को केवल डॉक्टर की सलाह पर दवा दें। छोटे हुए बच्चों को मॉप-अप डे (29 अगस्त 2025) पर दवा अवश्य दी जाए।

फसल कटाई प्रशिक्षण सम्पन्न

भरतपुर (निस)। जिला कलक्टर भू-अभिलेख कमर चौधरी के निर्देशन में खरीफ वर्ष 2025-26 में फसल कटाई प्रयोग प्रशिक्षण के लिए जिले के प्राथमिक कार्यकर्ताओं को सांख्यिकी, कृषि एवं राजस्व विभाग की संयुक्त टीम द्वारा 14 से 21 अगस्त तक सभी उपखण्ड परिक्षेत्र में दिया गया।

संयुक्त निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी रामप्रकाश द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनान्तर्गत फसल कटाई प्रयोग एवं वास्तविक उपज के आंकलन हेतु प्रति हैक्टेयर उत्पादन और उपज के अनुमान के लिए, फसल कटाई प्रयोग के बारे में बताया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित भू-अभिलेख निरीक्षक, पटवारी, कृषि पर्यवेक्षक, सहायक कृषि अधिकारी को चयनित ठाम में चयनित खसरा नम्बरों में फील्ड एवं हार्वेस्टिंग की विधि द्वारा ऑफलाईन एवं ऑनलाईन सीसीई एप द्वारा किये जाने हेतु प्रशिक्षण दिया गया। सभी कार्मिकों को फसल कटाई प्रयोग प्रशिक्षण के दौरान पारदर्शिता से कार्य करने तथा सरकार की मंशा के अनुरूप किसानों को फसल कटाई के बारे में बताने के निर्देश दिए।

घर-घर नल कनेक्शन के कार्य को शीघ्र पूरा करें : कलेक्टर

टोंक में जल और स्वच्छता मिशन की बैठक जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में हुई।

- स्कूल और स्वास्थ्य केन्द्रों में पेयजल पाईप लाईन से टेप कनेक्शन को प्राथमिकता दे

टोंक। जल जीवन मिशन के अन्तर्गत शुक्रवार को कलक्ट्रेट सभागार में जल और स्वच्छता मिशन की बैठक जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में हुई। जिसमें जिला कलेक्टर ने जिले में जल जीवन मिशन के तहत घर-घर नल कनेक्शन की प्रगति की जानकारी ली तथा शेष कार्य को शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्कूल, आंगनबाडी, ग्राम पंचायत भवन और स्वास्थ्य केन्द्रों में पेयजल पाईप लाईन से टेप कनेक्शन को प्राथमिकता से करने पर जोर दिया। जिला कलेक्टर ने कहा की जेजेएम में गांवों में पाईप लाईन डालने एवं घर-घर नल कनेक्शन के दौरान तोडी गई सडको को पुनः सही करने में संवेदक द्वारा लापरवाही बरती जा रही है।

इसकी शिकायतें आमजन से मिल रही है। विभाग इसकी मॉनिटरिंग करें कि तोडी गई सडको का गुणवत्तापूर्ण निर्माण सुनिश्चित हो।

मूर्ति स्थापना का निर्णय

भरतपुर (निस)। सेवर कस्बे के गंगामहारानी मंदिर परिसर में रविवार को सर्व समाज की महापंचायत आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता छितरिया सिंह ने की। पंचायत में सेवर सहित आसपास के क्षेत्र के प्रमुख समाज प्रतिनिधि उपस्थित रहे। बैठक में सर्वसम्मति से हिन्दू धर्म रक्षक वीर शिरोमणि महाराजा खेमकरण की मूर्ति स्थापना का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर 11 सदस्यीय कमेटी का गठन किया गया, जो मूर्ति स्थापना की संपूर्ण योजना को आगे बढ़ाएगी। उपस्थित जनों ने कहा कि महाराजा खेमकरण की वीरता और इतिहास को क्षेत्र के बच्चों और युवाओं तक पहुँचाने के लिए यह पहल महत्वपूर्ण है। इतिहासकारों के अनुसार, सन् 1720 ईस्वी में सम्राट मुहम्मद शाह ने महाराजा खेमकरण को दिल्ली आमंत्रित किया था, जहाँ उन्होंने शाही मैदान में लगातार तीन शेरों से कुश्ती कर उन्हें कटारी से मार गिराया। उनकी वीरता से प्रभावित होकर सम्राट ने उन्हें 'बाघमार' एवं 'बहादुर' की उपाधि प्रदान की और एक अरबी घोड़ा, खिलअत व जागीर का अधिकार दिया।

सार-समाचार

हथियार मामले में दो गिरफ्तार

टोंक। जिला पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार मीना के निर्देशन में वृत्ताधिकारी देवली रामसिंह व थानाधिकारी हेमन्त जनागल के नेतृत्व में गठित टीम ने सोशल मीडिया पर अवैध हथियार लहराने का विडियो वायरल करने के मामले में फरार आरोपी को दो नाली बन्दूक के साथ गिरफ्तार किया गया है। टीम ने आरोपी मनोज कुमार पुत्र रामफूल गुर्जर उम्र 25 साल निवासी देवीखेडा थाना दूनी को गिरफ्तार किया जाकर घटना में प्रयुक्त दो नाली 12 बोर बन्दूक को जब्त कर आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया। इसी प्रकार निवाई थाना पुलिस ने दौराने गश्त व मिली सूचना पर राहोली रोड गुन्सी से थाने में दर्ज प्रकरण का हिस्ट्रीशीटर रामप्रसाद पुत्र मंगलराम मीणा उम्र 28 साल निवासी कोटया की ढाणी मुण्डिया को नंगी तलवार लहराते हुए गिरफ्तार किया गया है तथा उसके कब्जे से तलवार भी जप्त की गयी। इस सम्बन्ध में आरोपी के विरूद्ध आर्म्स एक्ट में प्रकरण पजीबद्ध कर अनुसंधान जारी है।

बच्चों को खिलाई कृमिनाशक दवा

टोंक। बच्चों के शारीरिक विकास, हीमोग्लोबिन स्तर, पोषण एवं बौद्धिक विकास के लिए उन्हें कृमि संक्रमण से बचाने को लेकर जिले में 22 अगस्त को कृमि मुक्ति दिवस आयोजित किया गया। इस दौरान एक से 19 साल तक की उम्र के लक्षित बच्चों, किशोर-किशोरियों को कृमि नाशक दवा खिलाई गई। पेट में कीडे (कृमि) से निजात दिलाने वाली यह दवा जिले के सभी चिकित्सा संस्थानों, विद्यालयों, और आंगनबाडी केन्द्रों पर निशुल्क खिलाई गई। वंचित बच्चों को 29 अगस्त को मॉपअप दिवस आयोजित कर दवा दी जाएगी। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. शैलेंद्र सिंह चौधरी ने बताया कि बच्चों के पेट में कृमि संक्रमण एक आम संक्रमण है, जिस कारण पेट की आंतों में कृमि उत्पन्न होने से शरीर के पोषक तत्वों को वे खा जाते हैं। इस कारण खून की कमी और कुपोषण के साथ ही शारीरिक और मानसिक विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ऐसे में जरूरी है कि संबंधित सभी विभाग आपसी समन्वय कर शत-प्रतिशत लक्षित बच्चों को कृमिनाशक दवा खिलाना सुनिश्चित करें। लाभार्थी बच्चों को कृमिनाशक दवा खिलाने के लिए हरसंभव प्रयास किए जाएं और किसी भी स्तर पर कोई कोताही न बरती जाएं।

आरोपी प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार

सांभरझील, (निसं)। जोबनेर पुलिस ने नकबजनी के मामले में एक ऐसे आरोपी को गिरफ्तार किया है जिसे हाल ही में एक प्रकरण में आजीवन कारावास की सजा हो चुकी है। पुलिस ने आरोपी को बीकानेर जेल से प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया है। जोबनेर थाना अधिकारी सुहेल खान ने बताया कि 25 जनवरी को परिवादी ने रिपोर्ट में कहा था कि डूंगरी हिंगोनिया स्थित गणेश विहार कॉलोनी स्थित मेरी बहन के मकान में चोरी की घटना हो गई है जिसमे घर से 1 सोने की चौन, एक झुमकों की जोडी, एक टॉपिस, एक मंगलसूत्र, एक चांदी की पायजेब की जोडी, चांदी के कडे, 35000 रू नकद, बक्से में रखे कपडे, एक एलईडी, एक एटीएम, एक सिलेण्डर आदि सामान चोरी हुए है। प्रकरण दर्ज कर मुल्जिमानो कि तलाश हेतु टीम गठित कर तलाश शुरू की गई। गठित टीम द्वारा आसूचना संकलन व तकनीकी सहायता व एमओबी टीम द्वारा घटना स्थल से लिए गये साक्ष्यों की सहायता से व फिंगर प्रिंट ब्यूरो द्वारा चिंहित फिंगर प्रिंट, आरोपी रोशन मीणा निवासी गोरिया थाना जाजोद जिला सीकर से मिलान होने पर गहन पुछताछ की गई तो मुल्जिम रोशन मीणा ने अपने अन्य साथियो के साथ मिलकर घटना को अंजाम देना स्वीकार किया था। दिनांक 21 अगस्त को लोकेश उर्फ लक्की को प्रोडक्शन वारंट पर केन्द्रिय कारागृह बीकानेर से हिरासत में लिया जाकर पुछताछ/ तफ्तीश की गयी जिसने प्रकरण की घटना करना कबूल किया जिस पर लोकेश उर्फ लक्की पुत्र पूरणमल उम्र 32 साल निवासी नयाबास पुलिस थाना कोतवाली नीमकाथाना जिला सीकर को गिरफ्तार किया गया।

किसान की करंट लगने से मौत

भरतपुर (निस)। भरतपुर के बयाना थाना इलाके में एक किसान की करंट लगने से मौत हो गई। किसान खेत से पशुओं को भगा रहा था। इस दौरान वह पास में लगे ट्रांसफार्मर से टच हो गया। करंट लगते ही किसान खेत में गिर गया। आसपास काम काम कर रहे किसान तुरंत मौके पर पहुंचे और उसे अस्पताल लेकर गए। जहां उसे मृत घोषित कर दिया। पशुओं को भगाते समय ट्रांसफार्मर से लगा करंट घटना बयाना थाना इलाके के मई लखनपुर गांव की है। कल देर शाम विजेंद्र (45) अपने खेत पर काम कर रहा था। इस दौरान कुछ पशु खेत में घुस आए और वह फसल को खराब करने लगे। विजेंद्र पशुओं को भगा रहा था। इस दौरान वह खेत के पास लगे एक ट्रांसफार्मर से टच हो गया। जिससे उसे जोरदार करंट लगा और वह खेत में ही गिर गया। आसपास काम कर रहे किसानों ने अस्पताल पहुंचाया आसपास के खेतों में और भी किसान काम कर रहे थे। तब उन्होंने घटना को देखा तो, वह विजेंद्र को तुरंत बयाना अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां से विजेंद्र को आरबीएम अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया। अस्पताल लाने पर डॉक्टर ने विजेंद्र को मृत घोषित कर दिया। आज विजेंद्र के शव का पोस्टमार्टम करवाया गया।

शाहपुरा में सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट दिया जाए

शाहपुरा । जिला कलेक्टर जयपुर के सभागार में आयोजित बैठक में क्षेत्रीय विधायक मनीष यादव ने नगरपरिषद शाहपुरा में सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट की आवश्यकता पर जोर दिया। बैठक का आयोजन शाहपुरा में स्वीकृत (फीकल सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट) को लेकर किया गया। विधायक यादव ने बताया कि इस योजना की स्वीकृति के समय शाहपुरा नगरपालिका थी, लेकिन अब इसे नगरपरिषद का दर्जा मिल चुका है, जिसमें कई ग्राम पंचायतों का विलय हो चुका है । वर्तमान में नगरपरिषद शाहपुरा की जनसंख्या लगभग 1.25 लाख तक पहुँच गई है। ऐसे में प्लांट इस क्षेत्र के लिए उपयुक्त नहीं है। विधायक यादव ने कहा कि अब आवश्यकता सीवरेज लाइन एवं सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट की है। इसलिए प्रोजेक्ट को निरस्त कर इसके स्थान पर /सीवरेज लाइन का नया प्रोजेक्ट तैयार कर अग्रिम कार्यवाही की जानी चाहिए। बैठक में अधीक्षण अभियंता, अधिशासी अधिकारी नगरपरिषद शाहपुरा तथा टाउन प्लानर सहित कई अधिकारी उपस्थित रहे।

डॉ. गर्ग का विधानसभा क्षेत्र का दौरा

भरतपुर । पूर्व मंत्री व भरतपुर विधायक एवं राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. सुभाष गर्ग शुक्रवार को दो दिवसीय दौरे पर पहुंचे। जहां उन्होंने विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न गांवों व शहरी क्षेत्र में पहुंचकर आमजन की समस्याएं सुना और सेवर स्थित गंगा महारानी मन्दिर में दर्शन कर प्रदेश व क्षेत्र में खुशहाली की कामना की। डॉ. गर्ग ने दौरे के प्रथम दिन सेवर, भरंगरपुर, टोंटपुर, ऊंदरा सहित अन्य क्षेत्रों में पहुंचकर सामाजिक कार्यक्रमों में शिरकत की। उन्होंने क्षेत्रों की समस्याओं को भी जाना और लोगों से समस्याओं की जानकारी लेकर सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों को समाधान कराने के निर्देश दिये। डॉ. गर्ग ने के दौरान सेवर स्थित गंगा महारानी मन्दिर में पूजा अर्चना की और खुशहाली की कामना की। इस दौरान उन्होंने विकास कार्यों का भी अवलोकन किया। डॉ. गर्ग ने शाम को रणजीत नगर कार्यालय पर जन सुनवाई की और कार्यकर्ताओं से मुलाकात कर क्षेत्र के विकास पर चर्चा की। डॉ. गर्ग दौरे के दूसरे दिन शनिवार को प्रातः 9.30 बजे तक रणजीत नगर कार्यालय पर जन सुनवाई करेंगे और इसके पश्चात् इकरन गांव में हुये विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण करेंगे तथा क्षेत्र का दौरा कर दोपहर बाद जयपुर के लिये रवाना हो जायेंगे।

हमारी सरकार का भी यही खून और पानी एक साथ नहीं रह सकते है। ऐसा नहीं हो सकता कि सीमा पर लड़ाई हो दोनों देशों के बीच तनाव हो और हम क्रिकेट खेलने जाएं। जब तक ये बड़े मुद्दे सुलक्ष नहीं जाते, क्रिकेट बहुत छोटी बात है। देश हमेशा पहले आता है। - **हरभजन सिंह**

पूर्व भारतीय गेंदबाज, एशिया कप में पाक के खिलाफ बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

रोहित कृष्णा एस

भारतीय शतरंज खिलाड़ी रोहित कृष्णा एस भारत के 89वें ग्रैंडमास्टर बने। उन्होंने कजाकिस्तान में हुई अल्माटी मास्टर्स कोनाएव कप को जीत कर ये उपलब्धि अपने नाम की।20 वर्षीय रोहित ने आखिरी राउंड में अर्मेनियाई आईएम आर्टुर दावत्यान को हराया और नौ में से 6 अंक हासिल किए, जिससे उनका तीसरा और अंतिम जीएम नॉर्म बना। के विश्वेश्वरन द्वारा प्रशिक्षित रोहित ने इस साल मार्च में होटल स्टॉकहोम नॉर्थ जीएम राउंडर-रॉबिन टूर्नामेंट जीतकर अपना पहला जीएम मानदंड हासिल किया। वहीं अब उनका दूसरा जीएम नॉर्म जून में दुबई ओपन में आया।

क्या आप जानते हैं ?... भारत ने एशिया कप का पहला खिताब 1984 में जीता था। आखिरी बार टीम इंडिया ने 2023 एशिया कप का खिताब जीता था।

अनऑफिशियल टेस्ट में इंडिया-ए विमेंस 299 पर ऑलआउट

राघवी बिष्ट ने 93 रन बनाए, ऑस्ट्रेलिया-ए ने दूसरे दिन 5 विकेट गंवाए

नई दिल्ली, 22 अगस्त। इंडिया-ए और ऑस्ट्रेलिया-ए विमेंस के बीच ब्रिसबेन में अनऑफिशियल टेस्ट खेला जा रहा है। शुक्रवार को इंडिया-ए पहली पारी में 299 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। दूसरे दिन का खेल खत्म होने तक ऑस्ट्रेलिया-ए विमेंस ने 5 विकेट खोकर 158 रन बना लिए। टीम अब भी पहली पारी में 141 रन से पीछे हैं। इंडिया-ए की खराब शुरुआत ब्रिसबेन में गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया-ए ने टॉस जीतकर बॉलिंग चुनी।

पहले दिन बारिश के कारण 23.2 ओवर का खेल ही हो सका। इंडिया-ए ने यहां 93 रन बनाने में ही 5 विकेट गंवा दिए। शेफाली वर्मा ने 35 रन बनाए। नंदिनी कश्यप और धरा गुज्जर खाता भी नहीं खोल सकीं। तेजल हसबनिस ने 9 और तनुश्री सरकार ने 13 रन की पारी खेली। राघवी बिष्ट सेंचुरी लगाने से चुकीं दूसरे दिन इंडिया-ए ने 93/5 के स्कोर से आगे खेलना शुरू किया। राघवी बिष्ट को कप्तान राधा यादव का साथ मिला, दोनों ने फिफ्टी पार्टनरशिप की और टीम को 150 के करीब पहुंचा दिया।

राधा 33 रन बनाकर आउट हुईं। उनके बाद मिन्नु मणि ने राघवी के साथ पारी संभाल ली। राघवी ने फिफ्टी लगाई और टीम को 200 के पार पहुंचाया। वे सेंचुरी लगाने से 7 रन पहले ही आउट हो गईं। उनके बाद मिन्नु भी 28 रन के स्कोर पर पवेलियन लौट गईं। आखिर में वीजे जोशिथा ने 51 और तितास साधु ने 23 रन बनाकर टीम को 299 रन तक पहुंचा दिया। ऑस्ट्रेलिया-ए के लिए मैटलान ब्राउन और जॉर्जिया प्रेस्टविज ने 3-3 विकेट लिए। सिआना जिंजर, लिली मिल्स, एमी एडगर, एला हैवार्ड को 1-1 विकेट मिला।

ऑस्ट्रेलिया-ए अब भी 141 रन पीछे मुकाबले के दूसरे दिन ही ऑस्ट्रेलिया-ए ने अपनी पारी भी शुरू कर दी। रैशल ट्रेनामैन ने 21 और कप्तान ताहलिया विलसन ने 49 रन बनाकर टीम को मजबूत शुरुआत दिलाई। हालांकि, मैडी डार्क 12 और अनिका लीरोयड 15 रन बनाकर ही पवेलियन लौट गईं। एला हैवार्ड खाता भी नहीं खोल सकीं। दिन का खेल खत्म होने तक ऑस्ट्रेलिया ने 43 ओवर में 5 विकेट के नुकसान पर 158 रन बना लिए। टीम से विकेटकीपर निकोल फाल्टुम 30 और सिआना जिंजर 24 रन बनाकर नॉटआउट लौटीं। होम टीम अब भी 141 रन से पीछे हैं। इंडिया-ए से साईमा ग्रकोर और राधा यादव ने 2-2 विकेट लिए।

दूसरा वनडे : दक्षिण अफ्रीका ने ऑस्ट्रेलिया को 84 रनों से हराया

सीरीज में 2-0 की बढ़त हासिल की, एनगिडी को 5 विकेट, ब्रिट्जके-स्टब्स की फिफ्टी

मैकाय, 22 अगस्त। मैकाय में खेले गए दूसरे वनडे में साउथ अफ्रीका ने ऑस्ट्रेलिया को 84 रन से हरा दिया। इसी के साथ प्रोटियाज ने सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़त हासिल कर ली। पहला वनडे साउथ अफ्रीका ने 98 रन से जीता था। शुक्रवार को साउथ अफ्रीका ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने का फैसला किया। टीम 49.1 ओवर में 277 रन बनाकर ऑलआउट हो गई।

प्रोटियाज की ओर से मैथ्यू ब्रिट्जके ने 88 और ट्रिस्टन स्टब्स ने 74 रनों की पारी खेली। दोनों ने चौथे विकेट के लिए 89 रनों की अहम साझेदारी भी की। ऑस्ट्रेलियाई टीम ने आखिरी 10 ओवरों में वापसी की। एक समय 233/5 के स्कोर से साउथ अफ्रीका ने 31 रन जोड़ते हुए 5 विकेट गंवा दिए। टीम पूरे 50 ओवर भी बैटिंग भी नहीं कर सकी। ऑस्ट्रेलिया के गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन किया। एडम जम्पा ने 3 विकेट लिए, जबकि ट्रैविस हेड और मार्नस लाबुशेन ने मिलकर 2 विकेट झटके। नाथन एलिस ने भी 2 विकेट हासिल किए। तेज गेंदबाज जेवियर बार्टलेट ने शुरुआती झटके दिए और कप्तान ऐडन मार्करम को खाता खोले बिना पवेलियन भेजा।

278 रन का पीछा करने उतरी ऑस्ट्रेलिया टीम पेसर लुंगी एनगिडी के सामने टिक नहीं पाई। उन्होंने 5 विकेट चटकाए। वे प्लेयर ऑफ द मैच भी बने। ऑस्ट्रेलिया से जोश इंग्लिस ने 87 रन बनाए। टीम से 7 बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा भी नहीं छू पाए। एनगिडी ने मैच साउथ अफ्रीका के नाम किया ऑस्ट्रेलिया की शुरुआत अच्छी नहीं रही। ओपनर ट्रैविस हेड को नांद्रे बर्गर ने 6 रन पर आउट कर दिया। कप्तान मिचेल मार्श को वियान मुल्डर ने आउट किया। टीम से जोश इंग्लिस एकमात्र बल्लेबाज रहे जिन्होंने तेजी से बल्लेबाजी की और 74 बॉल पर 87 रन बनाए। उन्होंने 10 चौके और 2 सिक्स भी लगाए। इंग्लिस को एनगिडी ने विकेटकीपर रायन रिकेल्टन के हाथों कैच आउट कराया। एनगिडी 8.4 ओवर की बॉलिंग करते हुए मात्र 42 रन दिए और 5 बल्लेबाजों को आउट किया।

विमेंस वर्ल्ड कप के शेड्यूल में बदलाव

बेंगलुरु में होने वाले मैच मुंबई में खेले जाएंगे, ओपनिंग मैच भी शामिल

दुबई, 22 अगस्त। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने 30 सितंबर से भारत में होने वाले विमेंस वनडे वर्ल्ड कप के शेड्यूल में बदलाव किया है। गुरुवार को जारी नए शेड्यूल के अनुसार, बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में होने वाले मैचों को नवी मुंबई स्थित डी वाई पाटिल स्टेडियम में शिफ्ट किया गया है। इनमें भारत और श्रीलंका के बीच ओपनिंग मैच और दूसरा सेमीफाइनल जैसे मैच शामिल हैं। कर्नाटक सरकार ने वहां के स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन को मैच कराने की मंजूरी नहीं दी। की विक्ट्री सेरेमनी में मची भगदड़ के बाद जांच करने वाले जस्टिस जॉन माइकल कुन्हा आयोग ने एम चिन्नास्वामी स्टेडियम को बड़े आयोजनों के लिए ठीक नहीं माना था। इससे पहले 11 अगस्त से शुरू होने वाली घरेलू टी-20 लीग महाराजा ट्रॉफी को मैसूर शिफ्ट कर दिया गया। इससे विमेंस वर्ल्ड कप के मैचों और 2026 में यहां आईपीएल मैचों की मेजबानी पर भी सवाल खड़े हो गए। डी वाई पाटिल स्टेडियम को 5वां वेन्यू बनाया ने मुंबई को वर्ल्ड कप की मेजबानी का 5वां वेन्यू बनाया है। पहले बेंगलुरू 5वां वेन्यू था। टूर्नामेंट में 28 लीग और 3 नॉकआउट मैच होंगे। संशोधित शेड्यूल के अनुसार, मुंबई, इंदौर, गुवाहाटी, विशाखापट्टनम और कोलंबो में खेले जाएंगे। वहीं, पहला सेमीफाइनल 29 अक्टूबर को गुवाहाटी या कोलंबो में (पाकिस्तान के पहुंचने पर निर्भर) और दूसरा सेमीफाइनल 30 अक्टूबर को मुंबई में होगा। फाइनल 2 नवंबर को नवी मुंबई या कोलंबो में खेला जाएगा।

बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता 2025-26 के लिए जयपुर महिला एवं पुरुष टीमों के चयन हेतु चयन स्पर्धा का आयोजन रविवार

जयपुर, 22 अगस्त। राजस्थान बॉल बैडमिंटन संघ एवं कोटा जिला बॉल बैडमिंटन संघ के संयुक्त तत्वाधान में 8 सीनियर राज्य स्तरीय बॉल बैडमिंटन प्रतियोगिता 2025-26 का आयोजन दिनांक 29 अगस्त से 31 अगस्त 2025 तक महाराव उम्मेद सिंह स्टेडियम, कोटा में किया जा रहा है। उक्त प्रतियोगिता में भाग लेने जाने वाली जयपुर की महिला एवं पुरुष दोनों टीमों के चयन हेतु चयन स्पर्धा का आयोजन दिनांक 24 अगस्त 2025, रविवार को बॉल बैडमिंटन खेल मैदान, चौगान स्टेडियम में किया जायेगा। जयपुर जिला बॉल बैडमिंटन के सचिव शौकत अली मन्सूरी के अनुसार जयपुर की महिला एवं पुरुष दोनों टीमों के चयन हेतु तीन सदस्य चयन समिति बनायीं गयी है, जिनके नाम इस प्रकार है। 1. लक्ष्मीकांत शर्मा, बॉल बैडमिंटन कोच, चौगान स्टेडियम, जयपुर, 2. अब्दुल वहीद, संयुक्त सचिव, जयपुर जिला संघ एवं वरिष्ठ राष्ट्रीय बॉल बैडमिंटन खिलाडी, 3. खुशबु सिद्दीकी, शारीरिक शिक्षक एवं वरिष्ठ राष्ट्रीय बॉल बैडमिंटन खिलाडी।

महाराज जगत सिंह मेमोरियल कप के रोमांचक तीसरे मैच में जाजू पोलो ने तोपची को हराया

जयपुर, 22 अगस्त। जयपुर राइडिंग एंड पोलो क्लब में आज एक रोमांचक मुकाबला देखने को मिला, जहाँ प्रतिष्ठित महाराज जगत सिंह मेमोरियल कप के तीसरे मैच में टीम जाजू पोलो और टीम तोपची (आर्टिलरी - भारतीय सेना) के बीच मुकाबला हुआ। हल्की बारिश के बावजूद, मैच समय पर शुरू हुआ और मौसम ने पहले से ही रोमांचक मुकाबले में रोमांच का तड़का लगा दिया। पहले चक्कर से ही मैदान पर जोश और ऊर्जा का संचार हो गया। टीम जाजू के ध्रुवपाल और टीम तोपची के कैप्टन प्रिंसपाल के बीच एक ज़बरदस्त और रोमांचक मुकाबला हुआ, जिसमें दोनों ने अपनी सामरिक प्रतिभा और अदम्य एथलेटिक क्षमता का प्रदर्शन किया। टीम के संरक्षक सूरज जाजू ने अपनी टीम के प्रदर्शन में संयम और सटीकता का परिचय दिया, जिससे पूरे मैच में टीम की गति बनी रही। अपने अनुशासन और तालमेल के लिए जानी जाने वाली टीम तोपची में मेजर किरण और एनके इरफान ने शानदार प्रदर्शन किया, जिनके समन्वय और प्रतिबद्धता ने पूरे मैच में टीम की गति पर दबाव बनाए रखा। अंतिम स्कोर 10 - 8 टीम जाजू पोलो के पक्ष में रहा।

जयपुर-सीकर बनी राज्य स्तरीय सीनियर वीमेन-20 ट्रॉफी की संयुक्त विजेता

आरसीए ने राज्य की युवा महिला खिलाड़ियों के उत्साह के लिए पहली बार महिला प्रतियोगिता में दी 51 हजार की इनामी राशि : कुमावत

जयपुर, 22 अगस्त। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत के अनुसार जयपुर में खेली जा रही राज्य स्तरीय सीनियर वीमेन 20 क्रिकेट प्रतियोगिता के आज सवाई मान सिंहस्टेडियम पर जयपुर - सीकर टीमों के मध्य खेला जा रहा फाइनल मैच बारिश के कारण पूर्ण नहीं होने से दोनों टीमों को संयुक्त विजेता घोषित किया गया।

फाइनल मैच के प्रेजेंटेशन समारोह में आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत, सदस्य पिंकेश पोरवाल, आशीष तिवारी, आरसीए के पूर्व सचिव श्री सुभाष जोशी जी दोनों विजेता टीम को ट्रॉफी, इनामी राशि का चेक व मोमेंटो प्रदान किये।

इस अवसर पर आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत ने कहा की हमारा उद्देश्य राज्य की युवा महिला शक्ति को हर स्तर पर उच्च स्तरीय सुविधा व खेल का वातावरण उपलब्ध करना है। हम राज्य की युवा महिला खिलाडियों में खेल के प्रति उत्साह को बढ़ाना चाहते हैं जिसके लिए हमने महिला प्रतियोगिता में इनमे राशि की घोषणा की है जिससे खिलाडियों मैं से असुरक्षा की भावना दूर हो व् वे खेल से जुंड़े। हम आगे भी लगातार राज्य की युवा खिलाडियों के हितों के अनुरूप से समस्त निर्णय व कार्य करेंगे।

आरसीए एडहॉक कमेटी सदस्य पिंकेश पोरवाल ने प्रतियोगिता की संयुक्त विजेता जयपुर व सीकर टीमों को बधाई देते हुए कहा की आरसीए एडहॉक कमेटी ने खेल के आयोजन में खिलाडियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ही सभी जरुरी कदम उठाये हैं खिलाडियों की सुविधाओं में किसी भी पाकर की कोई असुविधा न हो इसका विशेष ध्यान रखा जा रहा है

आरसीए एडहॉक कमेटी सदस्य आशीष तिवारी ने कहा की आज मेरी जन्मभूमि व कर्मभूमि दोनों ही टीमों ने प्रतियोगिता की संयुक्त विजेता बन मुझे गौरवान्वित किया है व हमारी समस्त एडहॉक कमेटी का प्रयास है की हम राज्य के खिलाडियों के बेहतर भविष्य के लिए कार्य करें वराज्य के युवा खिलाडी राष्ट्रिय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शानदार प्रदर्शन कर राज्य का नाम रोशन करें।

भारत ने पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल टीम स्पर्धा में जीता स्वर्ण

शिमकेंट (कजाकिस्तान), 22 अगस्त। भारत के रुद्रांक्ष पाटिल, अर्जुन बाबूता और किरण जाधव ने गुरुवार को एशियन निशानेबाजी चैंपियनशिप 2025 में 10 मीटर एयर राइफल पुरुष टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक हासिल किया। आज यहां आयोजित स्पर्धा में भारतीय तिकड़ी ने कुल मिलाकर 1892.5 अंक हासिल किए, जिसमें पाटिल 632.3 अंकों के साथ शीर्ष पर रहे, जिससे वह क्वालीफाइंग राउंड में भी शीर्ष पर रहे और व्यक्तिगत फाइनल में जगह बनाई।

अर्जुन बाबूता ने 631.6 अंक हासिल करते हुए प्रिलिमिनरी स्टेज में चौथा स्थान हासिल किया और पदक राउंड में भी जगह बनाई। लेकिन 628.6 अंकों के साथ दसवें स्थान पर रहे किरण आठ निशानेबाजों के फाइनल में जगह बनाने से चूक गए। चीन ने 1889.2 अंकों के साथ टीम रजत पदक जीता, जबकि दक्षिण कोरिया ने 1885.7 अंक के साथ कांस्य पदक हासिल किया।

रुद्रांक्ष पाटिल और अर्जुन बाबूता भी उस भारतीय टीम का हिस्सा थे जिसने कुवैत में हुए पिछले संस्करण में इसी स्पर्धा में कांस्य पदक जीता था। श्री कार्तिक सबरी राज 2024 में टीम के तीसरे निशानेबाज थे। पुरुषों की व्यक्तिगत 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा के फाइनल में, पूर्व विश्व चैंपियन रुद्रांक्ष चौथे स्थान पर रहकर पोडियम से चूक गए। जबकि अर्जुन बाबूता पांचवें स्थान पर रहे।

कजाकिस्तान के निशानेबाज इस्लाम सतपायेव ने स्वर्ण पदक जीता, जबकि चीन के लू डिंगके और दक्षिण कोरिया के हाजुन पार्क ने व्यक्तिगत पोडियम स्थान हासिल किया। महाद्वीपीय निशानेबाजी चैंपियनशिप में यह भारत का दूसरा सीनियर स्वर्ण पदक था, इससे पहले बुधवार को अनंतजीत सिंह नरुका ने पुरुष स्कीट का खिताब जीता था।

भारत के सीनियर निशानेबाजों ने शिमकेंट में एक रजत और चार कांस्य पदक भी जीते हैं, जिससे कुल पदकों की संख्या सात हो गई है। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता मनु भाकर ने महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल व्यक्तिगत और टीम स्पर्धाओं में कांस्य पदक जीते हैं। वह 25 मीटर स्पर्धा में भी प्रतिस्पर्धा करेंगी।

भारतीय हॉकी टीम मैत्री सीरीज में ऑस्ट्रेलिया से 1-3 से हारी

पर्थ (ऑस्ट्रेलिया), 22 अगस्त (वार्ता) भारतीय पुरुष हॉकी टीम को 15 से 21 अगस्त तक ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेली गई चार मैचों की मैत्री सीरीज में 1-3 से हार का सामना करना पड़ा है। आज यहां पर्थ हॉकी स्टेडियम में खेले गए सीरीज के अंतिम और चौथे मैच में भारत को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 2-3 से हार का सामना करना पड़ा। इस तरह से मेजबान टीम ने यह सीरीज 3-1 से अपने नाम कर ली।

भारत ने अपने अभियान की शुरुआत 15 अगस्त को खेले गए पहले मैच में मेजबान टीम से 1-4 से हार के साथ की और अगले दिन दूसरे मैच में भारतीय टीम को 0-3 से हार मिली। हालांकि, भारतीय हॉकी टीम ने तीसरे मैच में वापसी की और ऑस्ट्रेलिया पर 3-2 से जीत हासिल करके अपनी हार का सिलसिला तोड़ दिया। भारतीय टीम 29 अगस्त से सात सितंबर तक बिहार के राजगीर में होने वाली आगामी एशिया कप 2025 की तैयारियों के रूप में ऑस्ट्रेलिया के साथ मैत्री सीरीज खेल रही थी। भारत वर्तमान में हॉकी रैंकिंग में सातवें स्थान पर है जबकि ऑस्ट्रेलियाई पुरुष हॉकी टीम दुनिया की पांचवें नंबर की टीम है।

सरकार ने एशिया कप में भारत-पाक मैच को दी हरी झंडी

नई दिल्ली, 22 अगस्त। सरकार ने अगले महीने संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में होने वाले पुरुष एशिया कप और अक्टूबर में होने वाले महिला एकदिवसीय विश्वकप में भारत और पाकिस्तान के बीच खेले जाने वालों मैचों की हरी झंडी दे दी है।

भारत द्विपक्षीय मुकाबलों के लिए पाकिस्तान की मेजबानी या दौरा नहीं करेगा, लेकिन उसके एथलीट और टीमें उन बहु-राष्ट्रीय आयोजनों में हिस्सा ले सकते हैं जिनमें पाकिस्तान भी शामिल है। इसी के साथ सितंबर में होने वाले पुरुष एशिया कप और अक्टूबर में होने वाले महिला एकदिवसीय विश्व कप में उनके आगामी मुकाबलों का रास्ता साफ हो गया। युवा मामले और खेल मंत्रालय ने एक बयान में ये दिशानिर्देश जारी किए हैं, जिसमें दोनों दक्षिण एशियाई देशों के बीच तनावपूर्ण राजनीतिक संबंधों के समय पाकिस्तान के साथ खेल संबंधों पर भारत सरकार द्वारा स्थिति स्पष्ट की गई है। इस बयान में यह स्पष्ट नहीं है कि भारतीय एथलीट पाकिस्तान द्वारा आयोजित बहुपक्षीय आयोजनों में हिस्सा ले सकते हैं।

यह बयान संयुक्त अरब अमीरात में एशिया कप के निर्धारित समय से तीन सप्ताह से भी कम समय पहले आया है। इस टूर्नामेंट में एक ही ग्रुप में शामिल भारत और पाकिस्तान कम से कम एक बार (14 सितंबर को दुबई में) और संभवत: तीन बार आमने-सामने होंगे। अप्रैल में पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद दोनों देशों के बीच सीमा पार तनाव के बाद से यह भारत का पाकिस्तान के खिलाफ पहला क्रिकेट मैच होगा।

श्रीलंका ने जिम्बाब्वे के खिलाफ एकदिवसीय श्रृंखला के लिए टीम घोषित की

कोलंबो, 21 अगस्त। श्रीलंका ने चरिथ असालंका की अगुवाई में 29 अगस्त से जिम्बाब्वे के खिलाफ शुरु होने वाली दो मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला के लिए घोषित 16 सदस्यीय टीम में वानिंदु हसरंगा को शामिल नहीं किया है। वानिंदु हसरंगा जुलाई में बंगलादेश के खिलाफ टी-20 श्रृंखला के दौरान हैमस्ट्रिंग की चोट लगने के बाद से एकदिवसीय मैचों से बाहर हो गए थे और अब जिम्बाब्वे के खिलाफ 50 ओवरों के मैचों के लिए उन्हें टीम में जगह नहीं दी गई है।

टीम में 25 वर्षीय शीर्ष क्रम के बल्लेबाज नुवानिदु फर्नांडो की वापसी हुई है। फर्नांडो ने आखिरी बार 2024 की शुरुआत में न्यूजीलैंड के खिलाफ एकदिवसीय मैच खेला था। इसके अलावा घरेलू क्रिकेट में अच्छा प्रदर्शन करने वाले 22 वर्षीय अनकैप्ड शीर्ष क्रम के बल्लेबाज पवन रत्नायके को भी टीम में शामिल किया गया है। दोनों एकदिवसीय मैच 29 और 31 अगस्त को हरारे में खेले जाएंगे। इसके बाद तीन मैचों की टी-20 सीरीज होगी। जिम्बाब्वे दौरे के लिए श्रीलंका की एकदिवसीय टीम इस प्रकार है:- चरिथ असालंका (कप्तान), पथुम निसंका, निशान मदुश्का, कुसल मेंडिस, सदीरा समराविक्रमा, नुवानिदु फर्नांडो, कामिंदु मेंडिस, जेनिथ लियानगे, पवन रत्नायके, डुनिथ वेलालेज, मिलन रत्नायके, महीश थीक्षाना, जेफरी वेंडरसे, असिथा फर्नांडो, दुष्मंथा चमीरा और दिलशान मदुशंका।

युवराज संधु ने 61 का असाधारण कार्ड खेला, बढ़त को 3 शॉट तक बढ़ाया

होसुर (तमिलनाडु), 22 अगस्त (वार्ता) चंडीगढ़ के युवराज संधू ने 10-अंडर 61 का असाधारण स्कोर बनाया, जो पिछले दो सालों में उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर है। उन्होंने तमिलनाडु के होसुर के पास क्लोवर ग्रीन्स गोल्फ कोर्स एंड रिज़ॉर्ट में खेली जा रही 1 करोड़ रुपये की पीजीटीआई प्लेयर्स चैंपियनशिप 2025 के तीसरे राउंड के बाद अपनी बढ़त को तीन शॉट तक पहुंचाया।

28 वर्षीय युवराज (63-67-61), जो वर्तमान पीजीटीआई ऑर्डर ऑफ मेरिट में शीर्ष पर हैं और सीजन के अपने चौथे और दो हफ्तों में दूसरे खिताब की ओर बढ़ रहे हैं, ने तीन दिनों तक कुल 22-अंडर 191 का स्कोर बनाया। ओलंपियन पुणे के उदयन माने (67-65-62), जो रात भर संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर थे, ने गुरुवार को नौ अंडर 62 का स्कोर बनाया और 19 अंडर 194 के साथ एकल दूसरे स्थान पर पहुंच गए।

दिल्ली के क्षितिज नवीद कौल (68-67-64) ने अंतिम दौर से पहले 64 का स्कोर बनाया और एक स्थान ऊपर चढ़कर 14 अंडर 199 के साथ तीसरे स्थान पर पहुंच गए। बेंगलुरु के किशोर शौकिया खिलाड़ी वीर गणपति ने 63 का स्कोर बनाया और 11 अंडर 202 के साथ संयुक्त रूप से छठे स्थान पर रहे।

युवराज संधू, जो लगातार दूसरे हफ्ते चैंपियन बनने की कोशिश करेंगे, ने टूर्नामेंट में अपने सबसे कम स्कोर 61 की मदद से अपनी रात की दो शॉट की बढ़त को एक और शॉट से बढ़ा दिया, जिसमें उन्होंने फ्रंट नौ और बैक नौ में पांच -पांच बर्डी लगाईं। संधू के त्रुटि-रहित राउंड में दो ड्राइव शामिल थे जो पार-4 होल पर ग्रीन पर पहुंचे, दो 12-फ़ीट कन्वर्ज़न, दो शानदार नाइन-आयरन अप्रोच शॉट और कुछ बेहतरीन अप-डाउन भी शामिल थे। युवराज ने कहा, ''यह पिछले राउंड की लय को जारी रखने के बारे में था। मैंने लगभग दो साल बाद आखिरकार नाइन-अंडर का स्कोर पार किया, इसलिए यह मेरे लिए एक बड़ी व्यक्तिगत उपलब्धि है क्योंकि मैं यही करना चाहता था। उदयन माने के 62 के तीसरे राउंड की खासियत 12वें होल पर 16-फुट ईगल कन्वर्ज़न और सात अन्य बर्डीज रहीं। चार साल में अपनी पहली जीत की तलाश में लगे 34 वर्षीय माने ने 17वें होल पर 40-फुट ईगल भी लगाया।

बीसीसीआई ने क्रिकेट सिलेक्शन कमेटी के लिए आवेदन मंगाया

सीनियर मेंस, विमेंस और जूनियर मेंस लिए पोजिशन खाली, एस. शरत को हटाया जा सकता है

नई दिल्ली, 22 अगस्त। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने शुक्रवार को मेंस सीनियर क्रिकेट टीम सिलेक्शन कमेटी के सदस्य के दो पद के लिए आवेदन मंगाए हैं। ने ट्वीट कर इसकी जानकारी दी। बीसीसीआई ने इकसे अलावा विमेंस टीम सिलेक्शन कमेटी के लिए चार और जूनियर मेंस के लिए एक पद के लिए आवेदन मंगाया हैं। आवेदन भरने की आखिरी तारीख 10 सितंबर है। एस शरत को हटाया जा सकता है रिपोर्ट के मुताबिक, ने चीफ सिलेक्टर अजीत अगरकर का कॉन्ट्रैक्ट बढ़ा दिया है। फिलहाल, सिलेक्शन कमेटी में अगरकर, एसएस दास, सुब्रतो बनर्जी, अजय रात्रा और एस शरत शामिल हैं। लेकिन ऐसा माना जा रहा है कि सितंबर में होने वाली एनुअल जरनल बॉडी मीटिंग के बाद सीनियर सिलेक्शन कमेटी में कुछ बदलाव देखने को मिलेंगे। शरत सितंबर 2021 में जूनियर सिलेक्शन कमेटी के अध्यक्ष थे और जनवरी 2023 में सीनियर सिलेक्शन कमेटी में प्रमोट हुए थे। रिपोर्ट के मुताबिक, बोर्ड उनकी जगह किसी नए चेहरे को नियुक्त कर सकता है।

आरसीए एकादश व आचार्य इंद्रेश एकादश के मध्य खेला गया नाइट क्रिकेट मैच

आरसीए के मेजबानी में देश में पहली बार संतों के साथ मैच खेल आरसीए का नवाचार

जयपुर, 22 अगस्त। आरसीए एडहॉक कमेटी सदस्य श्री आशीष तिवारी के अनुसार आरसीए अकादमी मैदान पर आयोजित डे नाइट क्रिकेट मैच में हमें विशेष रूप से आचार्य इंद्रेश का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। देश में पहली बार संतो के साथ मैच खेल आरसीए का नवाचार व हमें संतो के मैच की मेजबानी का जो सौभाग्य प्राप्त हुआ है उसके लिए आचार्य इंद्रेश का बहुत बहुत आभार। अकादमी मैदान पर आयोजित आरसीए एकादश - आचार्य इंद्रेश एकादश की मध्य खेले गए मैच को आचार्य श्री इंद्रेश जी की टीम ने 35 रनो से जीता। आशीष तिवारी के अनुसार मैच में आचार्य जी ने न केवल हमें आशीर्वाद दिया साथ उन्होंने कहा की उनका उद्देश्य है की देश के कथावाचकों व अन्य संतो के मध्य क्रिकेट मैच का आयोजन हो जिसकी मेजबानी आशीष जी के सानिध्य में आरसीए द्वारा किया जाये। आशीष ने आचार्य को धन्यवाद देते हुए आरसीए की मेजबानी में देश के कथावाचकों व संतो के क्रिकेट मैच के आयोजन को सहर्ष स्वीकार किया व उन्हें पूर्ण भरोसा दिलाया कीआरसीए आयोजन के लिए पूर्ण रूप से तैयार है। आशीष जी ने बताया की मैच में आचार्य इंद्रेश ने न केवल बल्लेबाजी की शुरुआत की साथ ही उन्होंने शानदार गेंदबाजी करते हुए अपनी कप्तानी में टीम को जीत दिलाई।

दावा : एशिया कप में बिना स्पॉन्सर के खेलेगी टीम इंडिया

नई दिल्ली, 22 अगस्त। ड्रीम-11 कंपनी रियल मनी कारोबार समेट रही; ऑनलाइन गेमिंग बिल को राष्ट्रपति की मंजूरी भारत की सबसे बड़ी फैंटेसी गेमिंग कंपनी ड्रीम11 अपना रियल मनी गेमिंग कारोबार बंद करने जा रही है। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में ये दावा किया गया है। यह फैसला भारत सरकार द्वारा हाल ही में पास किए गए ऑनलाइन गेमिंग बिल 2025 के बाद लिया गया है। इस बिल के तहत ऑनलाइन रियल मनी गेम्स पर पूरी तरह से पाबंदी है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक ड्रीम11 की पेरेंट कंपनी ड्रीम स्पोर्ट्स ने यह जानकारी अपने कर्मचारियों को 20 अगस्त को एक इंटरनल टाउनहॉल मीटिंग में दी। ड्रीम11 भारतीय क्रिकेट टीम और जैसे बड़े टूर्नामेंट्स का प्रमुख स्पॉन्सर रहा है। ऐसे में ये भी खबरें है कि टीम इंडिया एशिया कप में बिना स्पॉन्सर के खेलेगी।

एशियाई शूटिंग चैम्पियनशिप कजाकिस्तान में राजस्थान के खिलाड़ियों का रहा दबदबा

मिक्सड् टीम का गोल्ड व व्यक्तिगत 2 सिल्वर मेडल कुल 3 मेडल जीते

नई दिल्ली, 22 अगस्त। कजाकिस्तान के सिमकेत शहर में एशियाई शूटिंग चैम्पियनशिप, कजाकिस्तान 2025 16 अगस्त से 30 अगस्त तक आयोजित हो रही प्रतियोगिता में मिक्सड् टीम में यशस्वी राठौड़ (राजस्थान) व हरमिन्दर लाली (पंजाब) ने अपना बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मेडल पर अपना कब्ज़ा किया व यशस्वी राठौड़ ने व्यक्तिगत स्पर्धा में भी सिल्वर मेडल जीतकर राजस्थान व भारत का नाम गौरवान्वित किया। साथ ही राजस्थान के ही राजवीर सिंह राठौड़ ने व्यक्तिगत स्कीट यूथ स्पर्धा में सिल्वर मेडल जीतकर राजस्थान व भारत की झौली में तीसरा पदक दिया। ये सभी पदक स्कीट इवेन्ट में हासिल किये गये है। राजस्थान राईफल एसोसिएशन सभी खिलाड़ियों को बधाई देती है। साथ ही आगामी शॉटगन ट्रैप व डबल ट्रैप प्रतियोगिता में सलेक्ट हुए खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शुक्रवार को ''एआई इनोवेशन समिट 2025'' कार्यक्रम में पुस्तक ''प्राइवेसी इन एआई'' व दो दिवसीय समिट की स्मारिका का विमोचन किया।

देश में सर्वाधिक सीए राजस्थान से हैं - भजन लाल

मुख्यमंत्री ने भारतीय चार्टर्ड अकाउटेंट संस्थान के ''ए आई इनोवेशन समिट'' को संबोधित किया

■ मुख्यमंत्री भजन लाल ने कहा कि आमजन को सीए में बहुत विश्वास होता है। उन पर नए बदलावों और तकनीकी नवाचारों को अपनाते हुए समाज को सही दिशा दिखाने व विश्वास पर खरा उतरने की जिम्मेदारी है।

जयपुर, 22 अगस्त। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि चार्टर्ड अकाउटेंट देश की आर्थिक व्यवस्था की आत्मा हैं तथा उनका राष्ट्र निर्माण में बड़ा योगदान है। उन्होंने सभी चार्टर्ड अकाउटेंट्स से आव्हान किया कि वे अपनी योग्यता, विचारों एवं मेहनत से राज्य के विकास में अधिक से अधिक भागीदार बनें तथा देश-प्रदेश की प्रगति में योगदान दें, जिससे विकसित एवं समृद्ध राजस्थान के संकल्प को गति मिले।शर्मा शुक्रवार को भारतीय चार्टर्ड अकाउटेंट संस्थान, जयपुर शाखा द्वारा आयोजित 'एआई इनोवेशन समिट 2025' को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह प्रसन्नता का विषय है कि देश में सबसे ज्यादा सीए राजस्थान से हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सीए नई तकनीक आने पर, कोई नया नियम बनने पर अथवा वैश्विक अर्थव्यवस्था में कोई परिवर्तन आने पर सबसे पहले उसे समझते हैं, उसे अपनाते हैं और समाज को उसकी सही दिशा दिखाते हैं। यही कारण है कि आमजन को सीए पर बहुत विश्वास होता है, उन पर नए बदलावों और तकनीकी नवाचारों को अपनाते हुए समाज को सही दिशा दिखाने एवं इस विश्वास पर खरा उतरने की जिम्मेदारी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान भी डिजिटल इंडिया मिशन और इंडिया एआई मिशन के साथ पूर्ण तालमेल और समन्वय में निरंतर कार्य कर रहा है। हमारी सरकार नई एआई और मशीन लर्निंग पॉलिसी पर भी काम कर रही है।

उद्योग मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में विकास में नवीन तकनीकों एवं एआई का उपयोग कर राज्य को गुड गवर्नेंस की ओर ले जाया जा रहा है।

इससे पहले शर्मा ने 'प्राइवेसी इन एआई' पुस्तक तथा दो दिवसीय समिट की स्मारिका का विमोचन किया। उन्होंने आईसीएआइ सदस्यों के प्रशिक्षण के लिए बनाए गए 'एआई 2.0' कोर्स का ऑनलाइन शुभारंभ भी किया। इस अवसर पर भारतीय चार्टर्ड अकाउटेंट संस्थान, जयपुर शाखा के सदस्य सीए सतीश गुप्ता, सीए रोहित सहित बड़ी संख्या में सीए मौजूद रहे।

राहुल की मुंगेर यात्रा में भारी भीड़ उमड़ी

■ राहुल गांधी व तेजस्वी यादव ने मुंगेर की ऐतिहासिक खानकाह मस्जिद में मुस्लिम समुदाय के प्रमुख विद्वानों से मुलाकात की।

मुंगेर, 22 अगस्त। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की ''मतदाता अधिकार यात्रा'' आज छठे दिन बिहार के जमालपुर और मुंगेर पहुंची। इस यात्रा का उद्देश्य देशभर में मतदाता सूची में कथित धांधली और मतदाता अधिकारों के उल्लंघन के खिलाफ जन-जागरूकता फैलाना है।

राहुल गांधी के साथ यात्रा में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नेता तेजस्वी प्रसाद यादव भी शामिल रहे। दोनों नेताओं ने मुंगेर स्थित ऐतिहासिक खानकाह मस्जिद का दौरा किया और वहां मुस्लिम समुदाय के प्रमुख विद्वानों से मुलाकात की। यात्रा के दौरान स्थानीय लोगों की भारी भीड़ उमड़ी। लोगों ने राहुल गांधी का गर्मजोशी से स्वागत किया और लोकतंत्र और वोटिंग अधिकारों की रक्षा के मुद्दे पर उनके रुख का समर्थन किया। यात्रा के अगले पड़ाव में राहुल गांधी बिहार के अन्य जिलों का दौरा करेंगे और मतदाता अधिकारों को लेकर जनसंवाद जारी रखेंगे।

ईडी ने जम्मू में कई जगहों पर रेड की

जम्मू, 22 अगस्त। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिककारियों ने शुक्रवार को जम्मू के विभिन्न स्थानों पर भूमि घोटाले के संबंध में पटवारियों, नायब तहसीलदारों और अन्य राजस्व अधिकारियों के आवासों पर छापे मारे आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक ईडी की टीम ने भूमि घोटाले और कस्टोडियन भूमि से जुड़े भ्रष्टाचार में कथित संलिप्तता के लिए पटवारी, नायब तहसीलदार और अन्य राजस्व अधिकारियों के आवासों पर एक साथ छापेमारी की।

बूंदी जिले में शुक्रवार सुबह 8 बजे से शाम 5 बजे तक 734 एमएम (करीब 29 इंच) बारिश होने से घरों में पानी घुस गया, मुख्य बाजार की सड़के जलमग्न हो गई तथा कई जगह बाढ़ के हालात बन गये।

बूंदी जिले में आठ घंटे में 29 इंच रिकॉर्ड बारिश

जिले की सभी नदियां उफान पर और अधिकांश बांध व तालाब लबालब

■ बूंदी जिले में 24 घंटे से बारिश हो रही है। शुक्रवार सुबह 8 बजे से शाम 5 बजे के बीच विभिन्न इलाकों में 29 इंच बारिश हुई, सबसे ज्यादा 338 मिलीमीटर बारिश नैनवां तहसील में हुई।

■ तेज बहाव से गरडदा-बिजौलिया मार्ग पर पुलिया बहने से गरडदा, बिजौलिया, भोपतपुर तथा कई गांवों का भीलवाड़ा व बूंदी से सम्पर्क टूट गया है।

बूंदी, 22 अगस्त (निसं)। बूंदी जिले में आठ घंटे में 29 इंच बारिश दर्ज की गई जिले में गत 24 घंटे से लगातार बारिश हो रही है। जिससे जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। जिले के अधिकांश बांध लबालब हो गए और उनमें पानी की आवक जारी है।

मौसम विभाग के अनुसार बूंदी जिले में शुक्रवार सुबह 8 बजे से शाम 5 बजे तक 734 मिलीमीटर (करीब 29 इंच) बारिश दर्ज की गई। सर्वाधिक बारिश नैनवां तहसील 338 एमएम, दूसरे स्थान पर केशोरायपाटन में 165 एमएम दर्ज की गई। वहीं सबसे कम बूंदी तहसील में 29 एमएम दर्ज हुई। इसी बीच जिले की सभी नदी-नाले लबालब हो गए हैं। घोड़ा पछाड़, मांगली, मेज, तालेड़ा, रीवा नदी उफान पर आ गई। तेज बहाव के चलते गरडदा-बिजौलियां मार्ग पर पुलिया बह गई और बहने से गरडदा, बिजौलियां, भोपतपुरा तथा आसपास के गांवों का भीलवाड़ा और बूंदी जिले से संपर्क टूट गया। खेत जलमग्न हो गए। इससे फसलों को भारी नुकसान हुआ। नैनवा, कापरेन, केशोरायपाटन नमाना क्षेत्र में बाढ़ के हालात बने हुए हैं घरों में पानी घुस गया है मुख्य बाजार सड़कें जलमग्न है। सिविल डिफेंस की टीम को मौके पर भेजा गया है, जिसने रेस्क्यू शुरू किया है तथा लोगों को जलभराव क्षेत्र से दूर सुरक्षित स्थान पर निकाला जा रहा है। नैनवा में बालिका सीनियर सेकेंडरी स्कूल के जर्जर भवन की छत गिर गई है। इस बीच, मौसम विभाग ने बारिश जारी रहने का अलर्ट जारी किया और लोगों से नदी-नालों से दूर रहने को कहा।

गरडदा के उप सरपंच धन्नालाल गुर्जर ने बताया कि भीलवाड़ा क्षेत्र से रीवा नदी में अचानक उफान आया व पुलिया बह गई, सूचना के बावजूद प्रशासन का कोई कर्मचारी मौके पर नहीं पहुंचा, ना तो संसाधन उपलब्ध कराए और ना ही टीम भेजी।

उधर, जल संसाधन विभाग की कनिष्ठ अभियंता मंजू मीणा ने बताया कि जिले के अधिकांश बांध लबालब हो चुके हैं। केवल एक-दो बांध ही बचे हैं, जो अगले कुछ दिन पूरी तरह भर जाएंगे। जिले के दो से तीन बड़े बांध ओवरफ्लो हैं। बरधा बांध सहित कई बांधों में वापस चादर चलने लगी है। दर्जनों गांवों का मुख्यालय से संपर्क कट गया। इलाके में खेत तालाब में बदल गए। फसलें चौपट हो गई। रीवा नदी में उफान के चलते बूंदी व भीलवाड़ा जिले के कई गांवों का संपर्क कट गया। बूंदी के कापरेन क्षेत्र में लगातार हो रही भारी वर्षा के कारण उत्पन्न हुए हालातों का जायजा लेने के लिए अतिरिक्त जिला कलेक्टर सुदर्शन सिंह तोमर ने शुक्रवार को प्रभावित इलाकों का दौरा किया।

इसी क्रम में, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) रवि वर्मा ने भी अतिवृष्टि से गंभीर रूप से प्रभावित अरनेठा व भीया गांवों का दौरा किया। जलभराव की स्थिति को देखते हुए सीईओ ट्रैक्टर में बैठकर गांवों के अंदरूनी हिस्सों तक पहुंचे और नुकसान का जायजा लिया।

संसद परिसर में घुसने की कोशिश करने वाला पकड़ा गया

■ पुलिस के अनुसार वह सुबह 5.50 बजे संसद परिसर की चारदीवारी पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था।

नयी दिल्ली, 22 अगस्त। संसद भवन परिसर में एक शख्स ने शुक्रवार सुबह घुसने की कोशिश जिसे सुरक्षाकर्मियों ने पकड़ लिया। नयी दिल्ली जिले के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि आज सुबह लगभग 5:50 बजे संसद भवन की चारदीवारी पर एक व्यक्ति चढ़ ने की कोशिश कर रहा था। उसे केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) और दिल्ली पुलिस के जवानों ने तुरंत पकड़ लिया। उन्होंने कहा कि युवक ने अपनी पहचान उत्तर प्रदेश निवासी राम (20 वर्ष) बतायी है।

एक अप्रेल से आयकर अधिनियम लागू होगा

■ राष्ट्रपति मुर्मू ने मंजूरी दी।

नयी दिल्ली, 22 अगस्त। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने संसद के मानसून सत्र में पारित आयकर अधिनियम, 2025 को अपनी मंजूरी दे दी है। गजट अधिसूचना के अनुसार यह विधेयक अगले वर्ष पहली अप्रैल से पूरे देश में लागू होगा। यह अधिनियम 1961 के आयकर के कानून का स्थान लेगा।

पंजाब नैशनल बैंक सीआरपीएफ कर्मियों को विशेष लाभ देगा

■ बैंक ने इस संबंध में सीआरपीएफ के साथ एम.ओ.यू. साइन किया

नयी दिल्ली, 22 अगस्त। सार्वजनिक क्षेत्र के अग्रणी ऋण प्रदाता पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के साथ एमओयू किया है जिसके तहत बल के सेवारत कर्मचारियों और पेंशनधारकों को विशेष बीमा कवरेज और अन्य लाभ दिये जायेंगे। पीएनबी ने शुक्रवार को बताया कि अपनी प्रमुख योजना ''पीएनबी रक्षक प्लस'' के अंतर्गत वह सीआरपीएफ के सभी सेवारत कर्मियों और पेंशनभोगियों को उन्नत बीमा कवरेज और अन्य लाभ प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त, रक्षक खाताधारक के आश्रितों और परिवारों को भी कई लाभ प्रदान किये जा रहे हैं।

राज्यसभा सत्र का राष्ट्रपति ने सत्रावसान किया

■ मानसून सत्र में राज्यसभा की कुल 21 बैठकें हुई।

नयी दिल्ली, 22 अगस्त। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने राज्यसभा का सत्रावसान कर दिया है। राज्यसभा सचिवालय ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

सचिवालय ने एक वक्तव्य जारी कर कहा कि गुरुवार को उच्च सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित किये जाने के बाद राष्ट्रपति ने शुक्रवार को राज्यसभा का सत्रावसान कर दिया। मानसून सत्र 21 जुलाई से शुरू हुआ था और 21 अगस्त को संपन्न हुआ। इस दौरान सदन की 21 बैठकें हुई।

श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति विक्रम सिंघे गिरफ्तार

उन्होंने सरकारी पैसे से सितम्बर 2023 में लन्दन की निजी यात्रा की थी

■ पूर्व राष्ट्रपति विक्रम सिंघे की गिरफ्तारी के बाद शीर्ष अधिकारियों द्वारा सरकारी पैसे के गलत इस्तेमाल करने के मामलों की जांच तेज होने की संभावना है।

कोलंबो, 22 अगस्त। श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे को सरकारी पैसे से लंदन की निजी यात्रा करने के मामले में शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया गया।

स्थानीय मीडिया ने खबर दी है कि विक्रमसिंघे ने दस लोगों के साथ, साल 2023 के सितंबर महीने में लंदन की यात्रा की थी। यह यात्रा पूरी तरह से निजी थी पर इसका खर्च सरकारी कोष पर डाल दिया गया। श्रीलंका के इतिहास में यह पहला अवसर है कि जब पूर्व राष्ट्रपति को गिरफ्तार किया गया है।

इस महीने की शुरुआत में, पूर्व राष्ट्रपति के सचिव समन एकनायके और पूर्व निजी सचिव सैंड्रा परेरा से इस यात्रा की व्यवस्था में उनकी भूमिका के बारे में पूछताछ की गई थी।

विक्रमसिंघे 2022 से 2024 तक श्रीलंका के राष्ट्रपति रहे थे। उनकी गिरफ्तारी से शीर्ष अधिकारियों द्वारा सरकारी पैसे के गलत इस्तेमाल करने के मामलों की जाँच तेज़ होने की उम्मीद है। विक्रमसिंघे के बाद श्रीलंका की कमान अनुरा दिसानायके के हाथ में आ गई।

'आधार कार्ड को...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सुप्रीम कोर्ट ने यह निर्देश दिया था कि हटाए गए मतदाताओं की सूची हटाने के कारणों के साथ प्रकाशित की जाए।

रमेश ने कहा कि 14 अगस्त को ही सुप्रीम कोर्ट ने यह भी निर्देश दिया था कि हटाए गए मतदाता पहचान के प्रमाण के रूप में आधार कार्ड प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज अदालत ने आधार को एक वैध पहचान पत्र के रूप में फिर से मान्यता दी है, जिसे चुनाव आयोग को स्वीकार करना होगा।

कांग्रेस ने कहा ''आज सुप्रीम कोर्ट ने संशोधन प्रक्रिया को अधिक समावेशी बनाने के लिए दिशानिर्देश तय किए हैं, जिसमें राजनीतिक दलों को भी शामिल किया गया है। अब तक चुनाव आयोग का रवैया अवरोधक रहा है और मतदाताओं के हितों के खिलाफ रहा है। हम इस फैसले का स्वागत करते हैं क्योंकि यह हमें एक प्रवर्तनीय अधिकार देता है जिसे नजरअंदाज नहीं कर सकता,।''

पीठ ने कहा, ''सभी राजनीतिक दल अगली सुनवाई की तारीख तक यह स्थिति रिपोर्ट प्रस्तुत करें कि उन्होंने बाहर किए गए मतदाताओं द्वारा दावा पत्र दाखिल कराने में क्या भूमिका निभाई।'' अदालत ने चुनाव अधिकारियों को निर्देश दिया कि जो राजनीतिक दलों के बूथ स्तर के एजेंट बाहर किए गए मतदाताओं के दावे के फॉर्म जमा करें, उन्हें रसीद दी जाए।

चुनाव आयोग की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता राकेश द्विवेदी ने अदालत से अनुरोध किया कि चुनाव आयोग को यह दिखाने के लिए 15 दिन का समय दिया जाए कि कोई मतदाता बाहर नहीं किया गया है।

'कमजोर सरकार भी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

यह सब कांग्रेस नेतृत्व की कमजोरी को दर्शाता है कि दिल्ली में बैठे नेता कोई हस्तक्षेप नहीं कर रहे हैं। राजस्थान के प्रभारी रंधावा अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में असफल रहे हैं क्योंकि वे पंजाब और राजस्थान में अपनी खुद की राजनीति में व्यस्त हैं। अशोक गहलोत और उनके खेमे के करीबी माने जाने वाले रंधावा पार्टी की बजाय गहलोत के हितों को प्राथमिकता दे रहे हैं। अगर जयपुर या राजस्थान के किसी भी हिस्से में भाजपा सरकार के खिलाफ एक भी गंभीर आंदोलन नहीं हुआ है तो यह स्पष्ट संकेत है कि कहीं न कहीं गंभीर गड़बड़ी है लेकिन कोई भी इसे सुधारने या पार्टी को पटरी पर लाने के लिए तैयार नहीं है।

पंचायत चुनावों पर...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने कहा, राज्य सरकार सभी पंचायतों के चुनाव एक साथ कराना चाहती है। इलविए कार्यकाल पूरा कर चुके सरपंचों को ही प्रशासक नियुक्त कर दिया गया। यह व्यवस्था अस्थाई तौर पर और पंचायतों के दैनिक कामकाज को सुचारू चलाने के लिए की गई थी। वहीं बाद में कुछ प्रशासकों की शिकायत मिलने पर उन्हें पद से हटाया गया था। अपील में कहा गया कि इन हटाए गए प्रशासकों की किसी प्रकार की विधिक हानि नहीं हुई है। नए चुनाव के बाद इन्हें वैसे भी हटाया जाना था। ऐसे में मामले में एकल पीठ की ओर से दिए आदेश को रद्द किया जाए।

'वैक्सीनेशन के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इसके बाद सीजेआई ने दुर्लभ प्रशासनिक कदम उठाते हुए यह केस पारदीवाला की पीठ से हटाकर न्यायमूर्ति विक्रम नाथ की अध्यक्षता वाली तीन जजों की पीठ को सौंपा। 11 अगस्त 2025 को दिए गए आदेश में न्यायमूर्ति पारदीवाला और महादेवन ने दिल्ली नगर निगम और अन्य निकायों को आठ हफ्तों में सभी आवारा कुत्तों को पकड़कर शेल्टर में रखने और उन्हें सड़कों पर दोबारा न छोड़ने का निर्देश दिया था। साथ ही, आठ हफ्तों में कम से कम 5,000 कुत्तों को रखने की क्षमता वाले शेल्टर बनाने का आदेश भी दिया गया था।

भारी बारिश से ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लैस सेना की गांडीव डिवीजन की इन्फेंट्री रेजिमेंट के 80 जवानों की टीम ने दीगोद तहसील के निमोदा गांव में राहत एवं बचाव कार्य शुरु किए हैं। जिला प्रशासन के नेतृत्व में एनडीआरएफ एवं एसडीआरएफ की टीमें भी राहत एवं बचाव कार्यों में सुबह से जुटी हुई हैं। जिन क्षेत्रों में जल स्तर निरंतर बढ़ रहा है वहां से लोगों को निकालकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। कोटा शहर में भी जलभराव वाले क्षेत्रों से एसडीआरएफ एवं प्रशासन ने लोगों को नावों की सहायता से निकालकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया।

ट्रंप के वाणिज्य...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रयासों को अप्रत्यक्ष रूप से फंड करने का आरोप लगता है, तो यही आरोप यूरोप के कुछ हिस्सों पर भी लगाया जा सकता है।

नवारो के इस रुख का समर्थन करने वाले कहते हैं कि भारत की गतिविधियाँ केवल जरूरत से कुछ अधिक हैं इन लोगों के अनुसार, भारतीय कंपनियां रूसी कच्चे तेल को रिफाइन कर उसे ईंधन उत्पादों के रूप में निर्यात करके बड़ा मुनाफा कमा रही हैं -यह भले ही तकनीकी रूप से अनुमत हो, लेकिन नैतिक दृष्टि से ''मुनाफाखोरी'' है। आलोचकों का जवाब है कि यह परिणाम उन्हीं प्रतिबंधों की संरचना का हिस्सा है, जिनका मकसद रूसी तेल को बाजार में बनाए रखते हुए उसकी कीमत सीमित करना था।

असल बहस यह नहीं है कि भारत नियम तोड़ रहा है, क्योंकि वह नहीं तोड़ रहा, बल्कि यह है कि क्या उसकी भूमिका उन प्रतिबंधों की भावना को कमजोर कर रही है, जो रूस की आय को घटाने के लिए लगाए गए थे।

यह बातचीत भी अब आगे बढ़ रही है। यूरोपीय संघ ने हाल ही में नियमों को कड़ा किया है और 2026 तक रिफाइन्ड उत्पादों की उत्पत्ति के बारे में अधिक विस्तृत दस्तावेज़ीकरण की मांग शुरू की है। यह संकेत देता है कि पश्चिमी नीति निर्माता स्वयं उन ''कमियों'' को स्वीकार कर रहे हैं जिन्हें नवारो उजागर कर रहे हैं, हालांकि उनकी भाषा अधिक आक्रामक है।

नवारो की आलोचना वॉशिंगटन की अपेक्षाओं और नई दिल्ली की प्राथमिकताओं के बीच बढ़ते तनाव को उजागर करती है। नवारो के समर्थकों के अनुसार, रूस के साथ भारत का ऊर्जा व्यापार, मॉस्को पर दबाव बनाने के सामूहिक प्रयासों के खिलाफ अवसरवाद दर्शाता है। जबकि, उनके आलोचक कहते हैं कि उनके दावे कानूनी हकीकतों, भारत की ऊर्जा निर्भरता, और खुद पश्चिम की रूसी ईंधन पर निर्भरता को नजरअंदाज करते हैं।

स्पष्ट है कि भारत का रूसी तेल आयात एक बड़े विवाद का केन्द्र बन गया है। विवाद इस बात पर है कि प्रतिबंध असल में कैसे काम करते हैं, वैश्विक ऊर्जा बाजार कैसे अनुकूलन करते हैं और भू-राजनीति किस तरह आर्थिक ज़रुरतों से टकराती है। कोई इसे मुनाफाखोरी माने या व्यावहारिकता, यह अंततः डेटा पर नहीं बल्कि नज़रिए पर निर्भर करता है।

नवारो की आक्रामक शैली, टकरावपूर्ण भाषा, व्यापार का ज़ीरो-सम दृष्टिकोण, और तथ्यों का ''सिलैक्टिव'' उपयोग, इस बात को दर्शाता है कि वे भारत के रूसी तेल आयात को नीति-आधारित आवश्यकता नहीं बल्कि ''मुनाफाखोरी योजना'' क्यों बताते हैं। यह संतुलित ऊर्जा विश्लेषण से कम, और उनके विशिष्ट दृष्टिकोण का विस्तार ज्यादा प्रतीत होता है: उत्तेजना के माध्यम से दबाव बनाना।

नवारो को व्यापक रुप से ''चीन विरोधी सख़्त नीति अपनाने वाला और सामान्य तौर पर व्यापार में ''सख़्त रुख रखने वाला'' कहा जाता है ट्रंप के पहले कार्यकाल के दौरान, उन्होंने आक्रामक टैरिफ, सप्लाई चेन को अमेरिका में वापस लाने, और अमेरिकी आयात पर निर्भरता को कम करने का समर्थन किया। उनके रुख कई अन्य अर्थशास्त्रियों और यहां तक कि ट्रंप प्रशासन के कुछ सहयोगियों से भी अधिक कठोर माने जाते हैं।

जैसलमेर, बीकानेर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इसी तरह, बीकानेर जिले की पूगल तहसील के दीनसर व बराला गांव में 393.04 हैक्टेयर भूमि आवंटित किए जाने की स्वीकृति प्रदान की गई है। बीकानेर तहसील के गांव सवाईसर, बज्जू तहसील के गांव बिकोलाई तथा पूगल तहसील के गांव करणीसर भाटियान में कुल 2320.46 हैक्टेयर भूमि के आवंटन को स्वीकृति दी गई है।

सुप्रीम कोर्ट ने...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

साथ ही लेख में भारतीय दूतावास की प्रतिक्रिया भी प्रकाशित की गई थी और वही टिप्पणियाँ कई अन्य मीडिया संस्थानों ने भी छापी थीं। सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार को नोटिस जारी किया और वरदराजन व फाउंडेशन को अंतरिम राहत दी। लेकिन उसी दिन गुवाहाटी की क्राइम ब्रांच ने वरदराजन और वरिष्ठ पत्रकार करन थापर को दूसरी एफ.आई.आर. में समन भेज दिया। असम पुलिस की इन कार्रवाइयों की प्रेस संगठनों, सांसदों और आम जनता ने तीखी आलोचना की है। कहा जा रहा है कि यह प्रेस की स्वतंत्रता को दबाने और ''द वायर'' के पत्रकारों को परेशान करने की कोशिश है।

निकाय चुनावों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

राज्य स्तर पर समकालिक कठोर जातीय अध्ययन के आधार पर उनकी प्रकृति, पिछड़ेपन और प्रतिनिधित्व की स्थिति का गहन विश्लेषण हो। आयोग ने यह प्रक्रिया आरंभ कर दी है और राज्य में ओबीसी वर्ग की सामाजिक, शैक्षिणक एवं राजनीतिक स्थिति का व्यापक डेटा संग्रह किया जा रहा है। इसके लिए आयोग ने समर्पित टीम गठित की है, जो विभिन्न स्तरों पर आंकड़े जुटाने का काम कर रही है। पत्र में यह भी उल्लेख किया गया है कि आयोग को यह कार्य पूरा करने के लिए लगभग तीन माह का समय लग सकता है। इसके बाद ही पंचायत और नगर निकायों के चुनाव में ओबीसी आरक्षण के संबंध में उचित निर्णय लिया जा सकेगा।

ऑन लाइन गेमिंग बिल को राष्ट्रपति की मंजूरी

प्र.मंत्री मोदी ने कहा, इससे ई-स्पोर्ट्स व सोशल गेमिंग के हानिकारक प्रभावों पर अंकुश लगेगा

■ मोदी ने कहा इस कानून से गेम की लत से मुक्ति दिलाई जा सकेगी।

नयी दिल्ली, 22 अगस्त। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने ऑनलाइन गेमिंग प्रचार और विनियमन अधिनियम, 2025 को स्वीकृति प्रदान कर दी है।

इस कानून का मकसद ई-स्पोर्ट्स को बढ़ ावा देना, गेम्स के जरिए पैसे लूटने पर रोक लगाना और ई-स्पोर्ट्स को खेल के रूप में मान्यता देना है। इसके साथ ही इस कानून से नशे की लत से मुक्ति दिलाई जा सकेगी और आर्थिक नुकसान जैसे खतरों को भी रोका जा सकेगा।

संसद के मानसून सत्र में दोनों सदनों ने इस विधेयक को पारित कर राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए भेजा था। इस कानून को शैक्षिक खेलों और सामाजिक गेमिंग सहित ऑनलाइन गेमिंग क्षेत्र को बढ़ ावा देने और विनियमित करने के लिए लाया गया था। इस कानून में इस क्षेत्र के समन्वित नीति, रणनीतिक विकास और नियामक निगरानी के लिए एक प्राधिकरण की नियुक्ति का प्रावधान है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि ऑनलाइन गेमिंग विधेयक के लागू होने पर देश में ई स्पोर्ट्स और सोशल गेमिंग को बढ़ ावा मिलेगा तथा आनलाइन-गेमिंग के हानिकारक प्रभावों से बचाव होगा।

इस विधेयक के गुरुवार को राज्यसभा में पारित किए जाने के साथ इसे संसद के दोनों सदनों की स्वीकृति मिल चुकी है।

मोदी ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा, संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित यह विधेयक भारत को गेमिंग, नवाचार और रचनात्मकता का केंद्र बनाने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह विधेयक ई-स्पोर्ट्स और ऑनलाइन सोशल गेम्स को प्रोत्साहित करेगा। साथ ही, यह हमारे समाज को ऑनलाइन मनी गेम्स के हानिकारक प्रभावों से भी बचाएगा।

प्र.मंत्री मोदी ने कोलकाता में 3 नए मैट्रो रुट का उद्घाटन किया

कोलकाता, 22 अगस्त। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कोलकाता में विभिन्न मेट्रो रेलवे परियोजनाओं का उद्घाटन किया। उन्होंने जेसोर रोड मेट्रो स्टेशन से नोआपारा-जय हिंद विमानबंदर मेट्रो सेवा, सियालदह-एस्प्लेनेड मेट्रो सेवा और बेलेघाटा-हेमंत मुखोपाध्याय मेट्रो सेवा को हरी झंडी दिखाई और फिर मेट्रो में यात्रा की। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने मेट्रो परियोजनाओं में शामिल श्रमिकों और स्कूली छात्रों से बातचीत की। केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह और शांतनु ठाकुर ने उनका अभिनंदन किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि ''आज एक बार फिर मुझे पश्चिम बंगाल के विकास को गति देने का अवसर मिला है। अभी मैं नोआपारा से बिमानबंदर तक कोलकाता मेट्रो का आनंद लेकर आया हूं। इस दौरान बहुत सारे साथियों से मुझे बातचीत करने का अवसर भी मिला। हर किसी को खुशी है कि कोलकाता का पब्लिक ट्रांसपोर्ट वाकई अब आधुनिक हो रहा है।''

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादकः- राजेश शर्मा। आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालयः-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालयः-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालयः-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालयः-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालयः एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908